नव प्रदेश

www.navpradesh.com | रायपुर, बुधवार 22 सितंबर 2021, शुक्ल पक्ष-द्वितीया, विक्रम संवत-2077 वर्ष-10 अंक-221 पृष्ठ-08 मूल्य-3 रुपए | रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

आज बेबाक

राजनीति अब एक जुआ बन गई है और राजनीतिज्ञ जुआरी। सही पत्ता आ गया तो बल्ले-बल्ले और यदि पत्ता पिट गया तो पतली गली पकड़कर निकल लें। हारा हुआ जुआरी यही गाना गाता है जो आज कल पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह दर्द भरी आवाज में गुनगुना रहे है- ताश के बावन पत्ते पंजे छक्के सत्ते सबके सब हरजाई, मै तो लुट गया राम दुहाई...। कब कौन सा चिड़ी का गुलाम बादशाह बन जाएं और कौन तुरूप का इक्का साबित हो जाएं कुछ कहा नहीं जा सकता। राजनीति में महिला कार्ड, ओबीसी कार्ड और दलित कार्ड भी खूब चलते है।

छग में गोबर से बनेगी बिजली, 2 उद्यमियों ने दी सहमति

मुख्यमंत्री भूपेश ने किया दो दिवसीय वाणिज्य उत्सव का शुभारंभ, छत्तीसगढ़ में उद्योग और व्यापार की हैं असीम संभावनाएं : बघेल

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में उद्योग एवं व्यापार की असीम संभावनाएं विद्यमान है। राज्य देश के निर्यात में अहम रोल अदा कर सकता है। लैण्डलॉक प्रदेश होने के नाते यहां के उत्पाद को बाहर भेजने के लिए एयर कार्गो की सुविधा जरूरी है।

हम भारत सरकार से एयर कार्गो की सुविधा के लिए लगातार आग्रह कर रहे हैं, ताकि यहां के उत्पाद को निर्यात करने में आसानी हो। उक्त मंशा मंगलवार को प्रदेश के मुखिया भूपेश बघेल ने वाणिज्य महोत्सव के शुभारंभ पर व्यक्त की। राजधानी रायपुर में आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर छत्तीसगढ़ वाणिज्य एवं उद्योग विभाग और भारत सरकार के विदेश व्यापार महानिदेशालय के संयुक्त तत्वाधान में 21 एवं 22 सितंबर को दो दिवसीय वाणिज्य उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। मंगलवार को शुभारंभ अवसर पर मुख्य सचिव अमिताभ जैन, भारत सरकार वाणिज्य मंत्रालय के ओएसडी विकास चौबे, प्रमुख सचिव उद्योग मनोज कुमार पिंगुआ, सचिव आशीष भट्ट, शेफिक्सल वाईस चेयरमैन डॉ लाल हिंगोरानी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

केंद्र की अनुमति पर अटकी एथेनॉल प्लांट की मंजूरी

सीएम बघेल ने छत्तीसगढ़ में धान के प्रचुर उत्पादन को देखते हुए इससे एथेनॉल बनाए जाने के लिए राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार से सिर्फअनुमति न मिलने की वजह से यह मामला आगे नहीं बढ़ पा रहा है। उन्होंने कहा कि यदि केन्द्र सरकार अनुमति दे दे तो इससे राज्य के सरप्लस धान का उपयोग हो सकेगा। पेट्रोलियम के आयात पर खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा बचेगी। किसानों को धान का बेहतर मूल्य मिलेगा। राज्य में उद्योग और व्यापार को भी बढ़ावा मिलेगा।

वनोपज का खजाना छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में जल, जंगल, जमीन की कोई कमी नहीं है। धान का कटोरा होने के साथ-साथ देश का 74 फीसद से अधिक वनोपज छत्तीसगढ़ में संग्रहित होता है। यहां प्रचुर मात्रा में वनौषधियां विद्यमान है। इनकी प्रोसेसिंग एवं वैल्यूएडिशन से उद्योग, व्यापार एवं निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। 70 के दशक में खाद्यान्न की मांग को पूरा करने के लिए हरित क्रांति की शुरूआत हुई। देश में दलहन, तिलहन को छोड़ दिया जाए, तो आवश्यकता से अधिक खाद्यान्न होने लगा है, यहीं वजह है कि किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है।

राज्य में दो उद्यमी बनाएंगे गोबर से बिजली

छग की सुराजी गांव योजना के तहत गौठानों के निर्माण और गोधन न्याय योजना के तहत गोबर की खरीदी और इससे तैयार होने वाले उत्पाद के बारे में जानकारी दी। राज्य में आर्गेनिक खेती को बढ़ावा मिला है। गोबर से बिजली बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। दो उद्यमियों ने गोबर से विद्युत उत्पादन के लिए सहमति दी है।

बेमेतरा व महासमुंद जिले में 11 स्कूली बच्चे कोरोना पॉजिटिव

26 सितंबर तक स्कूल बंद, सभी के टेस्ट कराने के आदेश, बेमेतरा में 6 छात्राएं, बागबहरा में 5 छात्र संक्रमित

रायपुर/नवप्रदेश। मंगलवार सुबह स्कूलों से चौंकाने वाली खबर आई। प्रदेश के दो जिले महासमुंद व बेमेतरा के दो हाई स्कूल के 11 छात्र-छात्राएं पॉजिटिव निकले। अभी प्रदेश में सभी स्कूल खुले एक महीना भी नहीं हुआ और इस आंकड़ें ने सभी अभिभावक और पालकों को फिर सकते में डाल दिया।

छत्तीसगढ़ में कोरोना की पॉजिटिविटी दर 0.16 प्रतिशत है। सोमवार देर रात तक प्रदेश भर में हुए 23 हजार 243 सैंपलों की जांच में से 38 व्यक्ति कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। वहीं प्रदेश में सक्रिय मरीजों की संख्या तीन सौ से नीचे पहुंची और 15 जिलों में कोरोना का कोई नया मामला स्वास्थ्य विभाग की बुलेटिन में नजर नहीं आ रहा है। लेकिन प्रदेश के दो जिलों बेमेतरा और महासमुंद से स्कूली बच्चे पॉजिटिव निकलने के बाद प्रशासन के हाथ पांव फूल गए हैं।

बेमेतरा में छात्राएं पॉजिटिव

बेमेतरा जिले के साजा हाई स्कूल के 12वीं कक्षा की 6 छात्राओं की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। छात्रों के पाज़ीटिव आने से साजा में हड़कंप मच गया। इलाके को कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया गया है। जानकारी के मुताबित स्कूल के 36 छात्राओं के सैंपल लिए गए थे, उनमें से 6 छात्रा पॉजिटिव निकली हैं। इसकी पुष्टि कलेक्टर विलास भोसकर संदीपन ने की है। छात्राओं की रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद मंगलवार को स्कूल के आस पास के पूरे इलाके को कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया गया है। साथ ही स्कूल की बाकी छात्राओं की सैंपलिंग भी ली गई है। बीती रात जिले में महज 5 पॉजिटिव केस ही मिला था। अब छात्राओं के पॉजिटिव मिलने के बाद प्रशासन में हड़कंप मच गया है।

बागबहरा के हाई स्कूल में बच्चे पॉजिटिव : महासमुंद जिले के बागबाहरा के बकमा हायर सेकेंडरी ■ शेष पृष्ठ 6 पर

कोविशील्ड पर भारत की चेतावनी

ब्रिटेन का रवैया भेदभाव पूर्ण हम भी लेंगे जवाबी एक्शन

नई दिल्ली/ए.। भारत सरकार का कहना है कि ब्रिटेन ने कोरोना वैक्सीन कोविशीलड को मान्यता नहीं देकर भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया है। साथ ही यह भी कहा कि अगर इसका कोई समाधान नहीं निकाला जाता है तो जवाबी कार्रवाई की जाएगी। विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने आज कहा कि यूके सरकार का कोविशील्ड को मान्यता नहीं देने का निर्णय भेदभावपूर्ण है। उन्होंने यह भी कहा कि यह भारत के पारस्परिक उपाय करने के अधिकार के भीतर आता है। उन्होंने आगे कहा, 'कोविशील्ड की गैर-मान्यता एक भेदभावपूर्ण नीति है और ■ शेष पृष्ठ 6 पर

भारत की अधिकांश आबादी को कोविशील्ड

भारत में अधिकांश लोगों को कोविशील्ड टीका ही लगा है। यह ब्रिटेन के एस्ट्राजेनेका वैक्सीन का ही भारतीय वर्जन है। इसे भारत में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफइंडिया ने बनाया है, इसके बावजूद भारत को सूची से बाहर रखा गया है। ब्रिटेन में नेशनल इंडियन स्टूडेंट एंड एलुमनाई यूनियन (एआईएसएयू) की अध्यक्ष सनम अरोड़ा ने कहा, 'भारतीय छात्र इस बात से परेशान हैं कि उन्हें लगता है कि यह एक भेदभावपूर्ण कदम है क्योंकि अमेरिका और यूरोपीय संघ के उनके समकक्षों की तुलना में उनके साथ अलग व्यवहार किया जा रहा है।'

आरोपियों को एमपी ले जा रही कार दुर्घटनाग्रस्त, एसआई की मौत

- रायपुर से बैतूल ले जा रही कार पाढुंना में खड़ी ट्रक से टकराई

रायपुर/बैतूल/नवप्रदेश। भोपाल-नागपुर नेशनल हाईवे पर बड़चिचोली के पास हुए एक वाहन दुर्घटना में बैतूल के सबइंस्पेक्टर की जहां मौके पर ही मौत हो गई। वहीं वाहन में बैठे एक एएसआई और दो आरक्षक की हालत गंभीर होने पर उन्हें नागपुर रेफर किया गया है। जबकि वाहन में बैठे दो चोरी के आरोपियों को इस हादसे में कोई चोट नहीं आई है। दरअसल, बैतूल पुलिस टीम चोरी के दो आरोपियों को रायपुर (छत्तीसगढ़) से गिरफ्तार कर कार से बैतूल लौट रही थी। तभी सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात बैतूल-नागपुर हाईवे के छिंदवाड़ा-पांढुना और बड़चिचोली के बीच यह हादसा हो ■ शेष पृष्ठ 6 पर

दो दिनों तक रायपुर में थी बैतूल की टीम

बैतूल एसपी सिमाला प्रसाद ने बताया कि बैतूल जिले के पाढ़र पुलिस चौकी प्रभारी सब इंस्पेक्टर विनोद शंकर यादव सहित 4 सदस्यीय टीम एएसआई दिलीप तांडेकर, सिपाही नवीन रघुवंशी सहित एक आरक्षक के साथ चोरी के मामले में विवेचना करने रायपुर (छत्तीसगढ़) गए थे। 2 दिन से टीम रायपुर में थी। वहां से दो आरोपी को हिरासत में लेकर बैतूल आ रहे रहे थे। चौकी प्रभारी ड्राइवर के बगल में बैठे थे। एएसआई और आरक्षक बीच की सीट पर और दोनों आरोपी गाड़ी में सबसे पीछे बैठे थे। हादसे में चौकी प्रभारी की मौत हो गई। एएसआई, दो आरक्षक घायल हुए है। आरोपी दोनों सुरक्षित है। दोनों पुलिस हिरासत में है। घटना के बाद ट्रक ड्राइवर भाग गया है जिसकी तलाश जारी है।

कटर मशीन की मदद से निकाला शव

घटना की सूचना मिलते ही आला पुलिस अफसर मौके पर पहुंच गए। एसडीओपी नितेश पटेल ने बताया कि खड़े ट्रक में घुसी कार का एक्सीडेंट इतना जबरदस्त था कि कटर मशीन की मदद से मृत एसआई विनोद यादव के शव को काफी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया। साथ ही गंभीर रुप से घायल एएसआई और दो आरक्षक नागपुर रेफर किया गया है,जहां उनका इलाज जारी है। इधर एसआई के शव को बैतूल लाया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

खास-खबर

क्रैश हुआ सेना का हेलिकॉप्टर, दो पायलटों की मौत

जम्मू/ए.। जम्मू कश्मीर के पटनीटॉप में सेना का एक हेलिकॉप्टर मंगलवार को सुबह क्रैश हो गया। पटनीटॉप प्रदेश के उधमपुर जिले में पड़ता है। यह हादसा जिले के शिवगढ़ धार इलाके में हुआ, जिसमें सेना के दो मेजर रैंक के अधिकारी शहीद हो गए। ट्वीट कर दोनों की शहादत की जानकारी देते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

तीन टन हेरोइन पकड़ना गंभीर बात, जवाब दें मोदी-शाह : कांग्रेस

नई दिल्ली (वार्ता)। कांग्रेस ने गुजरात में भारी मात्रा में मादक द्रव्य पकड़े जाने को गंभीर मामला बताते हुए कहा है कि यह देश के नौजवानों पर को बर्बाद करने के लिए एक तरह का आतंकी हमला है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह को इस बारे में जवाब देना चाहिए।

अस्पताल संचालक को दो पूर्व डॉक्टरों ने किया अगवा, दिल्ली एयरपोर्ट पर छोड़ा

- बिलासपुर के स्काई अस्पताल के संचालक को अगवा करने का मामला
- पुलिस का बढ़ा दबाव तो दिल्ली एयरपोर्ट पर छोड़ भागे आरोपी

बिलासपुर/नवप्रदेश। छग बिलासपुर में स्काई अस्पताल के संचालक का वहीं के दो पूर्व डॉक्टरों ने अगवा कर लिया। दोनों आरोपी कार से यूपी ले गए। पहचान होने पर दिल्ली एयरपोर्ट पर छोड़कर फरार हो गए। पुलिस डॉक्टर को लेकर मंगलवार को बिलासपुर लौटी। रविवार की शाम स्काई अस्पताल के संचालक डॉ. प्रदीप अग्रवाल की कार अस्पताल के करीब ही मिली थी। कार में चाबी लगी थी। गायब होने के बाद उन्होंने स्टाफ को फोन कर गाड़ी ले जाने के लिए कहा था। यह भी बताया था कि उनकी कार में चाबी लगी हुई है। फोन आने पर अस्पताल का स्टाफ गाड़ी लेकर आ गया था। इसके बाद से उनका कुछ पता नहीं चल रहा था। परिजनों ने गुमशुदगी की सूचना थाने में दी। पुलिस ने मामले की जांच शुरु कर दी। विवेचना के डॉक्टर का लोकेशन एमपी व यूपी ट्रेस हुआ। इसके बाद बिलासपुर एसएसपी ने पुलिस टीमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश भेजी गईं थी। पुलिस ■ शेष पृष्ठ 6 पर

नर्स ने की पहचान

एएसपी साइबर सेल निमेश बरैया ने बताया कि संदेह के आधार पर अस्पताल की एक नर्स से पूछताछ की गई थी। इसके बाद उसे सीसीटीवी फुटेज दिखाई गई। इसे देख नर्स ने आरोपियों की पहचान कर ली। अस्पताल में पहले काम कर चुके दो डॉक्टर और तीन कर्मचारी शामिल थे। पहचान सामने आने के बाद पुलिस का दबाव बढ़ता देख आरोपी मंगलवार सुबह करीब 6 बजे दिल्ली एयरपोर्ट पर प्रदीप अग्रवाल को छोड़कर भाग निकले।

एनजीटी ने महाराष्ट्र सरकार पर लगाया 1 करोड़ का जुर्माना

नई दिल्ली/ए.। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने तीर्थयात्री के नदी में नगर पालिका के कचरे के निर्वहन को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट के पहले के निर्देश का पालन करने में विफल रहने के लिए महाराष्ट्र सरकार पर 1 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है।

एनजीटी ने अगली सुनवाई में महाराष्ट्र के मुख्य सचिव को भी उपस्थित रहने को कहा है। ट्रिब्यूनल ने राज्य सरकार को नासिक जिले में त्र्यंबकेश्वर नदी के पानी की गुणवत्ता के पुनर्वास के लिए जिला मजिस्ट्रेट को अंतरिम मुआवजे के रूप में 1 करोड़ रुपए की राशि जमा करने का निर्देश दिया है। एनजीटी की प्रधान पीठ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति आदर्श कुमार गोयल ने कहा, महाराष्ट्र के अधिकारियों का रुख दुर्भाग्यपूर्ण है।

यह सार्वजनिक कर्तव्यों के प्रति संवेदनशीलता की कमी और सुप्रीम कोर्ट और इस ट्रिब्यूनल के बाध्यकारी कानून और व्यवस्था के प्रति सम्मान को दर्शाता है। कानून का लगातार उल्लंघन, जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों के अधिकार से वंचित होना पड़ता है।

स्वच्छ पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य को नुकसान की संभावना संविधान के तहत गारंटीकृत कानूनों के नियम के खिलाफ है।

नरेंद्र गिरि केस : दो नेता और एक अफसर से पूछताछ करेगी पुलिस

- गुरु-शिष्य में कराया था समझौता
- महंत नरेंद्र गिरि की मौत की जांच जारी
- पुलिस कर रही अलग-अलग लोगों से पूछताछ

प्रयागराज/ए.। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष नरेंद्र गिरि की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत की जांच जारी है। इस मामले में आनंद गिरि की हिरासत में लिया गया है, जो नरेंद्र गिरि के शिष्य रहे हैं। अपने सुसाइड नोट में नरेंद्र गिरि ने आनंद गिरि की जिक्र किया था। इस बीच आनंद गिरि ने एक समझौते की बात की थी, इसी कड़ी को देखते हुए पुलिस तीन अन्य लोगों से पूछताछ करेगी। जानकारी के मुताबिक, 26 मई को नरेंद्र गिरि और आनंद गिरि में एक समझौता हुआ था। दोनों में जो विवाद था, उसे दूर करने के लिए समझौता किया गया था। इस दौरान तीन लोग मौजूद थे, जिनमें सुशील मिश्रा, इंदु प्रकाश मिश्रा और ओपी पांडेय मौजूद थे। इंदु प्रकाश मिश्रा समाजवादी पार्टी के नेता हैं और पूर्व में दर्जा ■ शेष पृष्ठ 6 पर

सुसाइड नोट में है आनंद गिरि का नाम

गौरतलब है कि नरेंद्र गिरि की संदिग्ध मौत के बाद पुलिस को उनके कमरे से एक सुसाइड नोट मिला था। इस सुसाइड नोट में आनंद गिरि का नाम भी था, आरोप था कि आनंद गिरि द्वारा लगातार नरेंद्र गिरि को परेशान किया जा रहा था। इनके अलावा लेटे हनुमान मंदिर के दो पुजारियों का भी नाम था। पुलिस ने सुसाइड नोट में नाम के आधार पर ही धारा 306 के तहत केस दर्ज किया है। साथ ही आनंद गिरि और अन्य दो पुजारियों को हिरासत में लिया है। वहीं, आनंद गिरि का कहना है कि संपत्ति विवाद को लेकर उन्हें फंसाया जा रहा है।

विदेश दौरा — यूएन महासभा में भी तालिबान और कट्टरता पर बड़ा संदेश देने की तैयारी में प्रधानमंत्री मोदी

आज अमेरिका के लिए रवाना होंगे मोदी, बाइडेन के साथ मीटिंग

- अमेरिका में होगी बाइडेन-मोदी की पहली मुलाकात
- चीन का काल बनेगा क्वाड़

नई दिल्ली/ए.। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को अमेरिका दौरे पर जा रहे हैं। कोरोना संकट की वजह से छह महीने बाद पीएम मोदी विदेश यात्रा करेंगे। अमेरिका के इस दौरे पर पीएम मोदी पहली बार राष्ट्रपति जो बाइडेन से मिलेंगे। पीएम के इस दौरे में क्वाड समूह के साथ-साथ आतंकवाद और अफगानिस्तान पर भी बात होगी। क्वाड समूह की बैठक में चीन, कोविड संकट और क्लाइमेट चेंज पर भी बात हो

सकती है। पीएम मोदी यहां क्वाड समूह की पहली इन-पर्सन मीट (सामने से मीटिंग) में शामिल होंगे. जिसका ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका भी हिस्सा है. पीएम संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेंबली को भी संबोधित करेंगे.

क्या होगा पीएम का कार्यक्रम

पीएम मोदी 23 सितंबर को सुबह अमेरिका के टॉप सीईओ से मिलेंगे। इसमें एप्पल के सीईओ टिम कुक भी शामिल हैं। इसी दिन पीएम अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस से मिल सकते हैं। 23 सितंबर को ही पीएम मोदी ऑस्ट्रेलिया (स्कॉट मॉरिसन और जापान (योशीहिदे सुगा) के अपने समकक्षों से द्विपक्षीय मीटिंग करेंगे। इसके साथ-साथ अमेरिकी राष्ट्रपति क्वाड देशों के नेताओं के डिनर की मेजबानी करेंगे। फिर 24 सितंबर को पीएम मोदी वाइट हाउस में जो बाइडन संग द्विपक्षीय वार्ता करेंगे।

क्वाड देशों की होगी मीटिंग

पीएम मोदी संग द्विपक्षीय मीटिंग के बाद क्वाड देशों के पीएम बाइडेन संग वाइट हाउस में मीटिंग भी करेंगे। इसमें चीन द्वारा भारत-प्रशांत क्षेत्र में पैदा की गई अशांति पर चर्चा होगी। हाल ही में एस, ऑस्ट्रेलिया और यूके ने एक डिफेंस डील साइन की है। AUKUS डील में ऑस्ट्रेलिया परमाणु पॉवर वाली सबमरीन बनाएगा। इसके अलावा क्वाड बैठक में कोरोना संकट, वैक्सीन आदि पर भी बात होगी। विदेश मंत्री एस जयशंकर पहले ही बता चुके हैं कि क्वाड का मकसद सिर्फ क्षेत्र विशेष की सुरक्षा तक सीमित नहीं ■ शेष पृष्ठ 6 पर

अफगान संकट, पाकिस्तान भी एजेंडे में शामिल

पीएम मोदी के अमेरिका दौरे के अजेंडे में अफगानिस्तान और पाकिस्तान भी हैं। पीएम मोदी अफगान में तालिबान सरकार पर अपना रुख पहले ही साफकर चुके हैं। अफगानिस्तान पर हुए SCO-CSTO आउटरीच समिट में पीएम मोदी ने तालिबान शासन में महिलाओं और अल्पसंख्यकों के प्रति चिंता जताई थी। उन्होंने यूएन से इस मसले पर हस्तक्षेप की मांग की थी और कहा था कि तालिबान सरकार को मान्यता देनी है या नहीं यह वैश्विक स्तर पर तय होना चाहिए।

छग के नए चीफ़ जस्टिस होंगे एके गोस्वामी

प्रशांत कुमार मिश्रा को भेजे गये आंध्रप्रदेश

रायपुर/नवप्रदेश। कॉलेजियम की अनुशंसा के बाद छत्तीसगढ़ के नए चीफ़ जस्टिस ए.के.गोस्वामी होंगे। वहीं कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश प्रशांत कुमार मिश्रा को आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट तबादला किया गया है। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के चीफजस्टिस अरूप कुमार गोस्वामी छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। दरअसल, देश के 13 उच्च न्यायालयों या हाईकोर्ट को नए मुख्य न्यायाधीश मिलेंगे क्योंकि प्रधान न्यायाधीश एनवी रमण की अध्यक्षता वाले सुप्रीम कोर्ट के कोलेजियम ने केंद्र को पदोन्नति के लिए आठ नामों की सिफारिश भेजी है। वहीं कोलेजियम ने पांच मुख्य न्यायाधीशों को विभिन्न उच्च न्यायालयों में स्थानांतरित करने की सिफारिश भी की है। कोलेजियम के निर्णय को मंगलवार को न्यायालय की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है।

न्यूज गैलरी

अतिक्रमण पर चला निगम का बुलडोजर

दुर्ग। आयुक्त हरेश मंडावी के निर्देश पर लोककर्म विभाग और अतिक्रमण दस्ते ने मंगलवार को शहर के धमधा नाका ओबरब्रिज के नीचे आईएमए चौक एमपी ब्रायलर सेंटर के अलावा अन्य 9 लोगों द्वारा शेड सीढ़ी झोपड़ी, चबूतरा और गुमटी का निर्माण कर अतिक्रमण करने वालों पर कार्रवाई की गई। अवैध कब्जा की वजह से धमधा नाका अंडरब्रिज में पहुंच मार्ग निर्माण कार्य और सड़क क्षेत्र बाधित हो रही थी। जिसे मंगलवार को पुलिस की मौजूदगी में अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई की गई। इनमें विजेंद्र यादव टिन शेड, गणेश जनरल स्टोर्स शेड, संजय टिम्बर आर्ट्स शेड, मोहन सेल गुमटी, कमल सिंह सीढ़ी और शेड रेणुका तिवारी झोपड़ी और गुमटी को 3 दिन की मोहलत के अलावा जागो मोची अज्ञात गुमटी हटाया गया।

पिछड़ा मोर्चा कार्य समिति की बैठक संपन्न

दुर्ग। राष्ट्रीय भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के आह्वान एवं प्रदेश के निर्देशानुसार पिछडावर्ग मोर्चा जिला दुर्ग कार्यसमिति की बैठक सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि डॉ खिलावन साहू पूर्व विधायक शक्ति विधानसभा, पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश महामंत्री एवं संभाग प्रभारी साँवला राम डाहरे, प्रदेश उपाध्यक्ष खिलावन साहु, राजेश ताम्रकार कार्यसमिति सदस्य, प्रदेश उपाध्यक्ष पिछडावर्ग मोर्चा उषा टावरी प्रदेश मंत्री मोहन देवांगन, चन्द्रिका चंद्राकर, पिछडावर्ग मोर्चा जिलाध्यक्ष किशोर साहू की उपस्थिति में पार्टी के प्रेरणास्त्रोत दीनदयाल उपाध्याय व डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी के तैलचित्र पर फूलमाला माल्यार्पित कर दीप प्रज्वलित कर बैठक की शुरुआत की गई। ततपश्चात जिलाउपाध्यक्ष गायत्री वर्मा द्वारा संगठन गीत गाया गया। उद्बोधन की कड़ी में सर्वप्रथम डॉ. साहू व श्री डाहरे ने भी अपने वक्तव्य दिया। मोहन देवांगन जिला प्रभारी ने व्यक्तय में कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया।

30 को दिव्यांग प्रमाणीकरण शिविर

भिलाई.03। निगम में 30 सितम्बर को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में दिव्यांग प्रमाणीकरण शिविर का आयोजन समाज कल्याण विभाग एवं जिला चिकित्सा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पूर्व में निगम प्रशासन द्वारा ऐसे शिविरों का आयोजन कर क्षेत्र के अनेक पात्र दिव्यांगजनों के दिव्यांगता प्रमाण.पत्रध्यूनिक डिसएबिलिटी आई डी पत्र जारी कराया गया है। आगामी 30 को होने वाले शिविर में कुल 21 प्रकार की दिव्यांगता से ग्रसितजनों का शारीरिक परीक्षण कर प्रमाण.पत्र बनाये जाने की कार्यवाही की जाएगी। इन 21 प्रकार की दिव्यांगता को शामिल किया गया है। आयुक्त कीर्तिमान सिंह राठौर ने कहा कि सभी अशक्त दिव्यांगजनों को दिव्यांग प्रमाणीकरण शिविर में आए।

सहायक उद्योगों के प्रति बीएसपी की उपेक्षित रवैये पर नाराजगी

भिलाई/नवप्रदेश। एंसीलरी एसोसिएशन की एक आपात बैठक संस्था कार्यालय बीईडब्ल्यू में हुई। एसोसिएशन के तमाम पदाधिकारियों एवं सदस्यों के बीच सहायक उद्योगों के प्रति बीएसपी के उपेक्षित रवैये पर नाराजगी जताई गई। उद्योगों को हो रही तकलीफें कैसे दूर हों और उनके विकास के लिए क्या किया जाना चाहिए इन प्रमुख मुद्दों पर विचार विमर्श किया गया।

अध्यक्ष अरविंदर सिंह खुराना ने कहा कि सहायक उद्योग ऐसे उद्योग हैं जहां पर सभी तरह के कार्य होते हैंण् सहायक उद्योग बीएसपी पर आधारित हैं और बीएसपी इन उद्योगों पर निर्भर है। इतने छोटे.छोटे काम बाहर की इकाई नहीं कर सकती है। बीएसपी जो भी काम दे रही है वह कानून के बाहर नहीं दे रही। यह कानून के तहत एक फ्रेमवर्क है। उसके तहत सहायक उद्योगों को काम देना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है।

उपाध्यक्ष आशुतोष तिवारी ने कहा कि ऐसा देखा गया है कि जो सहायक उद्योग अभी तक बीएसपी को 100 करोड़ से ऊपर का काम दे रहे थे वह अब 50 करोड़ से नीचे में सिमट कर रह गए हैं यह दुर्भाग्य की बात है। महासचिव चरणजीत सिंह खुराना ने कहा कि रॉ. मटेरियल का रेट पूर्व के रेट से 30 से 40 प्रतिशत रेट बढ़ गया है। जिस समय रॉ.मटेरियल सस्ता था 80-90 करोड़ का काम मिलता था लेकिन आज 30-40 प्रतिशत रेट बढ़ने के बाद भी काम घटकर 30 से 40 करोड़ के बीच आ गया है। जबकि रॉ.मटेरियल आज के दर से जोड़ा जाए तो 80 करोड़ का काम बढ़कर 125 करोड़ का हो जाना चाहिए था।

उपाध्यक्ष व्यास प्रसाद शुक्ला ने कहा कि छोटे बड़े सभी उद्योगों को काम मिलना चाहिए किसी एक का आधिपत्य नहीं होना चाहिए जिसकी जो काम करने की शैली है उस काम के हिसाब से ही बीएसपी को चलना होगा। बैठक में यह मांग प्रमुख रूप से उठी कि एंसीलरी को इंक्वायरी बढ़ाई जाए। 31 मार्च तक बिना लेवी का डीपी एमनमेंट दिया जाए. कोरोना महामारी एवं रॉ. मटेरियल की बढ़ती कीमतों को देखते हुए नई भरपूर इंक्वायरी दी जानी चाहिए. किसी प्रकार से आरपीएन करना, नोटिस देना गलत है क्योंकि यहां के उद्योग टूट चुके हैं। वे अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं। बैंक का सपोर्ट बंद है। नया काम बीएसपी से आ नहीं रहा है क्योंकि 5 एटी में सभी को लॉक कर दिया गया है। पदाधिकारियों का कहना था कि बीएसपी हमारे संरक्षक के रूप में काम करे ना कि तालिबान के रूप में बीएसपी द्वारा कुछ इंडस्ट्रीज को साथ लेकर जैम का वर्कशॉप कराया जा रहा है जो हमारी जानकारी में नहीं हैए एसोसिएशन इसका विरोध करता है। जिस तरह से राउरकेला एवं छत्तीसगढ़ में जैम लागू नहीं है उसी प्रकार एंसीलरी को जैम से बाहर रखा जाए। बैठक में और कई मुद्दों पर चर्चा हुई एवं बीएसपी से अनुरोध किया गया कि समय रहते हुए देखें और एंसीलरी के हित में काम करें। बैठक में संरक्षक चमन लाल बंसल, जे के जैन, नीलाद्री शाह, आरके सिंह, किशन अग्रवाल, सुरेश बोपचे, डी रामास्वामी, मयूर कुकरेजा, अनिल शुक्ला, करन हाण्डा, स्वामी, देशराज यादव, रविशंकर मिश्रा सहित उद्योगपति उपस्थित थे।

वार्ड क्रमांक 70 में निरीक्षण के लिए पहुंचे निगम आयुक्त

कार्य की गुणवत्ता खराब, एजेंसी को नोटिस

भिलाई/नवप्रदेश। आयुक्त प्रकाश सर्वे शहर में जोन आयुक्त एवं अधिकारियों के साथ निरंतर मॉर्निंग विजिट में निकलकर सफाई, पेयजल, विकास कार्य एवं अन्य कार्यों का जायजा ले रहे हैं।मॉर्निंग विजिट में आयुक्त शहर के अंतिम वार्ड हुडको पहुंचे! वार्ड क्रमांक 70 में घूम.घूम कर उन्होंने सफाई व्यवस्था देखी! कुछ स्थलों में पाइपलाइन खुली पड़ी मिली जिसे व्यवस्थित करने के निर्देश दिए! आगे निरीक्षण करते हुए आयुक्त मिलन चौक के पास पहुंचेए एजेंसी के द्वारा पेवर ब्लॉक सही तरीके से नहीं लगाया गया थाए पेवर ब्लॉक का बैलेंस भी सही नहीं था! एक समान पेवर ब्लॉक नहीं लगाने को लेकर उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए एजेंसी को नोटिस जारी कर फिर से पेवर ब्लॉक को निकाल कर व्यवस्थित तरीके से लगाने के निर्देश दिए। हुडको में अतिक्रमण की शिकायत पर अधिकारियों को कार्रवाई के निर्देश निगमायुक्त को हुडको में अतिक्रमण की काफी शिकायतें मिली हैं। हालांकि जब भी शिकायतें मिली है त्वरित संज्ञान में लेते हुए निगम ने कई स्थलों से अतिक्रमण मुक्त कराया है। आयुक्त ने कहा कि अतिक्रमण के खिलाफ फौरन कार्रवाई करें। नए अतिक्रमण पर अधिकारी नजर रखें अतिक्रमण का मामला संज्ञान में आते ही स्थल को कब्जा मुक्त करावे। हुडको के एक मोहल्ले में सड़क निर्माण कार्य होना है जहां अतिक्रमण रोड़े आ रहा है इस पर 13 अतिक्रमण चिन्हाकित किए गए हैं जिन्हें हटाकर रोड का निर्माण किया जाएगा। करोड़ों की लागत से हुडको मैदान का होगा कायाकल्प आयुक्त निरीक्षण के दौरान हुडको मैदान पहुंचे। जोन आयुक्त मनीष गायकवाड ने आयुक्त को जानकारी देते हुए बताया कि 1.5 करोड़ की लागत से मैदान का विकास कार्य किया जाना है।

खुले में शौच ना करें, मिलेगा स्वस्थ्य वातावरण : साहू

रिसाली/नवप्रदेश। निगम के घनी आबादी वाले क्षेत्र रूआबांधा के नागरिकों के लिए 18 लाख 24 हजार खर्च की गई है। इस राशि से सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया गया। इसका उद्घाटन प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री जितेन्द्र साहू ने किया। उन्होंने पहले नवनिर्मीत भवन का फीता काट कर उद्घाटन किया। इसके बाद नारियल तोड़ा। प्रदेश महामंत्री साहू ने कहा कि शासन पूरे प्रदेश में किसान और श्रमिकों का जीवन स्तर सुधारने संकल्पित है। गांव से लेकर शहरी इलाके के श्रमबाहुल्य क्षेत्र में स्वच्छ वातावरण दिलाने ही यहां पर सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया गया है। इस अवसर पर पूर्व एल्डरमेन कीर्तिलता वर्मा, प्रेमचंद साहू, पूर्व पार्षद राजेन्द्र रजक, सहायक अभियंता राजकुमार जैन समेत उस वार्ड के प्रभारी अभियंता नितीश अमन साहू आदि उपस्थित थे।

सहायक अभियंता आरके जैन ने बताया कि शासन की योजना सुविधा.24 घंटे के तहत सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया गया है। यहां 10 शीटर शौचालय बनाया गया है। लोगों को सुविधा उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी के लिए केयर टेकर रखा गया है जो नियमित सफाई के अलावा बिजली पानी की व्यवस्था पर नजर रखेंगे।

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21
ई.पंजी. 202109100700208

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री प्रकाश झा पिता स्व. दिवाकर झा निवासी ग्राम शंकर नगर दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1223/9 रकबा 0.003 हे. भूमि को विक्रेता ए.एस. मदन पिता अचूतन करेली निवासी ग्राम शंकरनगर दुर्ग से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 31.08.2021 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 14.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती नीलम चंद्रा पिता/पति स्व. रामचंद्र सिंह निवासी ग्राम शंकरनगर दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1304/76, 1304/77 रकबा 0.006, 0.004 हे. भूमि को विक्रेता चन्द्रशेखर प्रसाद अकेला पिता स्व. रामचंद्र सिंह निवासी ग्राम शंकरनगर दुर्ग से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 08.09.2021 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 07.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती गंगाबाई देशमुख पिता/पति स्व. सीताराम देशमुख निवासी ग्राम रिसाली तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम रिसाली स्थित भूमि खसरा नंबर 1011 रकबा 0.07 हे. भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदिक भूमि के खातेदार/वसीयतकर्ता सीताराम आ. द्वारिका प्रसाद के द्वारा आवेदक के पक्ष में दिनांक 21.01.2021 अपंजीकृत वसीयतनामा निष्पादित किया गया है। वसीयतकर्ता की मृत्यु हो जाने पर अपंजीकृत वसीयतनामा के आधार पर आवेदक का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 08.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री मनोज कुमार वर्मा पिता ताजीराम वर्मा निवासी ग्राम सेक्टर-5 भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम रिसाली तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 274/09 रकबा 0.0200 हे. भूमि को विक्रेता श्रीमती उषा रेड्डी पिता/पति श्री ई रामलक्ष्मी रेड्डी निवासी ग्राम सेक्टर-10 भिलाई दुर्ग से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 31.08.2021 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 21.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 06.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती हरजीत कौर बल पति हरजिन्दर सिंह बल निवासी म.न. 122 गणेश मंदिर के पास हास्पीटल कालोनी दुर्ग मौजा चिखली प.ह.नं. 11 रा.नि.मं. दुर्ग 01 तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 331, 332 रकबा 0.130 हे., 0.130 हे. कुल रकबा 0.260 हे. मे से 0.20 हे., 0.20 हे. कुल 0.40 हे. भूमि को दानकर्ता हरजिन्दर सिंह बल पिता सरदार निर्मल सिंह बल से दिनांक 23.08.2021 को दानकर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त दानपत्र के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 12.10.2021 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 21.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री प्रांजल पटेल पिता चिंतामणी पटेल निवासी वार्ड नं. 56 उरला जिला दुर्ग मौजा उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. सिकोला तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 646/4 का टु. रकबा 2090 वर्गफीट हे. भूमि को आम मुख्तयार नारायण साहू पिता स्व. सोमलाल साहू से दिनांक 08.09.2021 को क्रय कर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त बैनामा के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 29.09.2021 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 13.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री दीपक चंद्रायन पिता रामकृष्ण चंद्रायन निवासी क्वा.नं. एल/23 मुकुट नगर रायपुरनाका दुर्ग मौजा उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. सिकोला तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 646/4 रकबा 4702.44 वर्गफीट हे. भूमि को आम मुख्तयार नारायण साहू पिता स्व. सोमलाल साहू से दिनांक 08.09.2021 को क्रय कर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त बैनामा के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 29.09.2021 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 13.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री विजय कुमार वर्मा पिता इतवारी वर्मा निवासी ब्लाक-1 सड़क 06 सेक्टर-5 भिलाई जिला दुर्ग मौजा उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. सिकोला तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 647/1 का टु. रकबा 4209.66 वर्गफीट हे. भूमि को आम मुख्तयार नारायण साहू पिता स्व. सोमलाल साहू से दिनांक 08.09.2021 को क्रय कर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त बैनामा के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 29.09.2021 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 13.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्रं./अ-06/वर्ष 2020-21

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक इमानुएल मिंज आ./पति स्व. स्तानिश निवासी सेक्टर-10 भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम उमरपोटी तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 312/5, 312/24 रकबा 2500 वर्गफीट भूमि जो कि स्व. सुशीला मिंज के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूमि के भूमिस्वामी की मृत्यु दिनांक 02.04.2021 को हो जाने पर फौती दर्ज कर विधिक वारिसानों का नाम वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने बाबत् आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 15.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 31.08.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — नायब तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग-1 (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है आवेदक श्री अरुण कुमार साहू वगै. आ. अशोक साहू साकिन मटिया सिमगा के द्वारा ग्राम डुमरडीह प.ह.न. 41 रा.नि.मं. अण्डा तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 553/1 का टु. रकबा 0.532 हे. मे से 1200 वर्गफीट भूमि शिवकुमार साहू आ. स्व. महावीर साहू निवासी राधिका नगर सुपेला भिलाई से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 20.09.2021 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को क्रेता के नाम पर प्रमाणीकरण किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय मे प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर दावा हो तो व नियत पेशी दिनांक 07.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम ये इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नहीं किया जावेगा

आज दिनांक 21.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया है।

मुहर — नायब तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदिका संगीता जांगडे पति मुकेश कुमार जांगडे निवासी म.न. 39 वार्ड 17 ग्राम भटगांव पो. घुमका राजनांदगांव मौजा बघेरा प.ह.नं. 48 रा.नि.मं. दुर्ग तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 334/33 रकबा 1100 वर्गफीट हे. भूमि को विक्रेता/आम मुख्तयार दशरथलाल पिता रामजी महोबिया से दिनांक 25.08.2021 को क्रय कर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त बैनामा के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 22.09.2021 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 08.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
ईश्तहार

रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती गंगाबाई देशमुख ध.प. स्व. सीताराम देशमुख साकिन रिसाली द्वारा ग्राम समोदा प.ह.न. 13 रा.नि.मं. दुर्ग-01 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 52/1 रकबा 0.85 हे. को उसके स्व. सीताराम आ. द्वारिका प्रसाद के द्वारा उसके नाम पर वसीयतनामा निष्पादित किया है के आधार पर नामांतरण किए जाने बाबत् आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। जिस पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतः उपरोक्त भूमि को वसीयतनामा के आधार पर नामांतरण किए किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 08.10.2021 तक या उसके पुर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा

रा.प्र.क्रं./अ-06/वर्ष 2020-21

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री गंगाबाई देशमुख आ./पति स्व. सीताराम देशमुख निवासी रिसाली भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम उतई तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 758/3 रकबा 0.01 हें भूमि जो कि सीताराम आ. द्वारिका प्रसाद के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूमि के भूमिस्वामी की मृत्यु दिनांक 16.04.2021 को हो जाने पर फौती दर्ज कर विधिक वारिसानों का नाम वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने बाबत् आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 08.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — नायब तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र

मा.क्र.//अ-06/ वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री गोपाल स्वामी पिता स्व. अशोक स्वामी निवासी रायपुरा तहसील व जिला दुर्ग द्वारा इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है कि उनके अशोक/ नटराज के नाम पर ग्राम जुनवानी प.ह.नं. तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नं. 317/58 एवं 330/21 रकबा 0.001 एवं 0.001 हे. भूमि एकल खाता/ शामिल खाता में दर्ज है। खातेदार/ सहखातेदार अशोक स्वामी की मृत्यु दिनांक 11.11.2019 को होने से उनका नाम विलोपित कर वारिसान हक में मृतक खातेदार के विधिक वारिसानों का नाम दर्ज करने हेतु आवेदन इस न्यायालय में विचाराधीन है।

अतः जिस किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को इस संबंध में आपत्ति दावा या उजर पेश करना हो तो दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते है। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।

आज दिनांक 16.09.2021 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया जाता है।

मुहर — नायब तहसीलदार, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला - दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र

रा.प्र.क्र. ई-कोर्ट	पक्षकार का नाम	ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन नं.
	श्री नवीन शर्मा	202108100400460

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री नवीन शर्मा आ. श्री राधेश्याम शर्मा निवासी कसारीडीह दुर्ग तह. व जिला दुर्ग छ.ग. द्वारा नीचे अनुसूची में दर्शित भूमि को उसके सम्मुख दर्शित प्रयोजन के लिए व्यपवर्तन/पुर्ननिर्धारण हेतु आवेदन पत्र छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 172 सहपठित धारा 59(2)(5) तहत् आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया हैं, जिसके संबंध में इस न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन हैं।

अनुसूची

ग्राम/प.ह.नं.जहां भूमि स्थित है	खसरा नंबर	रकबा	प्रयोजन
ग्राम बघेरा प.ह.न. 07 अ तह.व जिला दुर्ग	252/43	0.028 हें 3000 वर्गफीट	आवासीय

अतएव उपरोक्त वर्णित आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति, संस्था, शासकीय विभाग, सार्वजनिक या अर्धसार्वजनिक उपक्रम को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वे इस उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के भीतर अपनी लिखित आपत्ति/दावा स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत कालावधि के बाद प्राप्त आपत्ति/दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 25.08.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की पदमुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी, दुर्ग, जिला दुर्ग

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला - दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र

रा.प्र.क्र. ई-कोर्ट	पक्षकार का नाम	ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन नं.
	घनश्याम प्रसाद वर्मा	202107100400548

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री घनश्याम प्रसाद वर्मा आ. के.एल. वर्मा निवासी धनोरा रोड बोरसी दुर्ग तह. व जिला दुर्ग छ.ग. द्वारा नीचे अनुसूची में दर्शित भूमि को उसके सम्मुख दर्शित प्रयोजन के लिए व्यपवर्तन/पुर्ननिर्धारण हेतु आवेदन पत्र छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 172 सहपठित धारा 59(2)(5) तहत् आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया हैं, जिसके संबंध में इस न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन हैं।

अनुसूची

ग्राम/प.ह.नं.जहां भूमि स्थित है	खसरा नंबर	रकबा	प्रयोजन
ग्राम रिसाली प.ह.न. 22 तह.व जिला दुर्ग	715/9	0.020 हें 2400 वर्गफीट	आवासीय

अतएव उपरोक्त वर्णित आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति, संस्था, शासकीय विभाग, सार्वजनिक या अर्धसार्वजनिक उपक्रम को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वे इस उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के भीतर अपनी लिखित आपत्ति/दावा स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत कालावधि के बाद प्राप्त आपत्ति/दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 31.07.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की पदमुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी, दुर्ग, जिला दुर्ग

कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) पाटन जिला दुर्ग (छ.ग.)
ईश्तहार

प्र.क्र.//अ-2/ वर्ष 2020-21
ई.पंजी. 202109100600037

एतद् द्वारा सर्व आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री विकास नाहटा पिता श्रीकांती लाल निवासी भैरव सोसायटी पचपेड़ी नाका रायपुर तहसील व जिला रायपुर के द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की भूमि ग्राम सांकरा प.ह.न. 08 रा.नि.मं. अमलेश्वर तहसील पाटन व जिला दुर्ग की स्थित भूमि खसरा नंबर 109/6 रकबा 0.0424 हें. भूमि पर आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन किये जाने हेतु आवेदन पत्र छ.ग.भू.रा. संहिता 1959 की धारा 172 की सहपठित धारा 59 के तहत् प्रस्तुत किया हैं।

अतः जिस किसी भी व्यक्ति या संस्था को उजर दावा आपत्ति हो तो स्वयं या अपने अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से नियत दिनांक 23.09.2021 को न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकतें हैं। नियत दिनांक के पश्चात् प्राप्त आवेदन कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 16.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुहर लगाकर जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी, पाटन जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार अहिवारा तह. धमधा जिला दुर्ग
उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/वर्ष 2020-21
पंजी. 202108102800120

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती दिलवाई देशलहरे पति स्व. धनीराम व अन्य 09 निवासी लिमतरा तहसील धमधा जिला दुर्ग के द्वारा आवेदन किया है कि मौजा ग्राम लिमतरा प.ह.न. 50 रा.नि.मं. मुरमुंदा तहसील धमधा जिला दुर्ग छ.ग. स्थित भूमि खसरा नंबर 336, 338/2, 342, 343, 344 रकबा 0.03, 0.02, 0.04, 0.06, 0.04 हे. भूमि आवेदिका के पति धनीराम पिता स्व. रामचंद्र के नाम भूमिस्वामी हक में दर्ज है। खातेदार धनीराम पिता स्व. रामचंद की मृत्यु दिनांक 22.08.2020 को हो गया है। अतः मृतक खातेदार का नाम विलोपित कर विधिक वारिसानों के नाम पर फौती नामांतरण दर्ज किए जाने बाबत् आवेदन-पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को दावा/आपत्ति पेश करना हो तो स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर दिनांक 13.10.2021 तक पेश कर सकते है नियत अवधि के पश्चात प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुहर से जारी किया गया है।

मुहर — नायब तहसीलदार, अहिवारा (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000026
विषयः अ-6 — वर्ष 2020-21
कुरुद प.ह.न. 00050 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- श्री अशोक बंजारे अन्य 03
अनावेदक पक्षकार- आम जनता

आवेदक श्री अशोक बंजारे पिता स्व. दुर्गाप्रसाद अन्य 03 निवासी कुरुद भिलाई द्वारा ग्राम कुरुद प.ह.न. 19 अ रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 727, 724/1615 रकबा 0.2100, 0.040 हे. है जो आवेदकगण के पिता स्व. दुर्गा पिता परसदी के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी दुर्गा पिता परसदी की मृत्यु दिनांक 27.02.2020 को एवं आवेदक की माता श्रीमती भूधवंतीन की मृत्यु दिनांक 14.04.2021 को हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने हेतु फौती नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र मय खसरा बी-01, मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 04.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 21.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000121
विषयः अ-6 — वर्ष 2020-21
कोहका प.ह.न. 00019 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- जोहनदास जंघेल
अनावेदक पक्षकार- छ.ग. शासन

आवेदक श्री जोहनदास जंघेल पिता गंगाराम जंघेल निवासी कोहका भिलाई द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 19 रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 3716 रकबा 0.020 हे. है जो आवेदक के पिता स्व. गंगाराम पिता सुकलाल के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी गंगाराम पिता सुकलाल की मृत्यु दिनांक 17.07.2020 को हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने हेतु फौती नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र मय खसरा बी-01, मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 15.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000122
विषयः अ-6 — वर्ष 2020-21
कोहका प.ह.न. 00019 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- नरेन्द्र कुमार शेंडे
अनावेदक पक्षकार- छ.ग. शासन
प्रति हलका पटवारी ग्राम कोहका प.ह.न. 19

आवेदक श्री नरेन्द्र कुमार शेंडे पिता तिलकचंद शेडे निवासी कोसानगर भिलाई द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 19 रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 2611 रकबा 0.010 हे. है जो आवेदक की पत्नी यशोदा शेडे पति नरेन्द्र कुमार शेंडे के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी यशोदा शेंडे पति नरेन्द्र कुमार शेंडे की मृत्यु दिनांक 16.04.2021 को हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने हेतु फौती नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र मय खसरा बी-01, मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किया गया है।

अतः मृतक यशोदा शेंडे पति नरेन्द्र कुमार शेंडे का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसान के संबंध में जानकारी पंचनामा सहित दिनांक 30.09.2021 के पूर्व प्रस्तुत करें।

यह ज्ञापन मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 15.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000116
विषयः अ-06 — वर्ष 2020-21
कुरुद प.ह.न. 00050 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- विजय कुमार उइके अन्य 01
अनावेदक पक्षकार- छ.ग. शासन

आवेदक श्री विजय कुमार उइके पिता मेहत्तर राम उइके निवासी मरोदा सेक्टर भिलाई द्वारा ग्राम कुरुद प.ह.न. 19 अ रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 1129/9 रकबा 1000 वर्गफीट हें है जो आवेदकगण की माता स्व. कलाबाई उइके पति मेहत्तर राम उइके के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी कलाबाई उइके पति मेहत्तर राम उइके की मृत्यु दिनांक 15.05.2019 को हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने हेतु फौती नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र मय खसरा बी-1, मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 12.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 17.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000123
विषयः अ-6अ — वर्ष 2020-21
कोहका प.ह.न. 00019 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- रंगू मदनैय्या
अनावेदक पक्षकार- छ.ग. शासन

आवेदक श्री रंगू मदनैय्या पिता आर वेकंटी निवासी भिलाईनगर के द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 19 स्थित भूमि खसरा नंबर 6136 रकबा 0.010 हे. भूमिस्वामी रंगू मदनैय्या पिता आर. वेकंटी के नाम पर दर्ज है। उक्त भूमि वर्तमान राजस्व अभिलेख रंगू मदनैय्या पिता आर सेकरी के नाम पर दर्ज हो गया है जो त्रुटिपूर्ण है को सुधार किए जाने हेतु न्यायालय में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 15.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)
मामले की श्रेणी-राजस्व
ईश्तहार

मा.क्रं. 202109101000124
विषयः अ-27 — वर्ष 2020-21
कोहका प.ह.न. 00019 हे.)
पक्षकारों का विवरण : आवेदक पक्षकार- बिसेलाल
अनावेदक पक्षकार- छ.ग. शासन

आवेदक श्री बिसेलाल पिता सुकलाल लोधी निवासी आर्य नगर कोहका भिलाई तह. व जिला दुर्ग द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 19 स्थित भूमि खसरा नंबर 549, 631/12 रकबा 0.030, 0.020 हे. भूमि बिसेलाल पिता सुकलाल के नाम पर दर्ज है। उपरोक्त वर्णित भूमि को आवेदक के द्वारा अपने संतानो व पत्नी को 6 टुकडो में 05 टुकड़ा अपनी इच्छा अनुसार खाता विभाजन किए जाने हेतु न्यायालय में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 15.09.2021 को जारी किया गया है।

मुहर — अतिरिक्त तहसीलदार, भिलाई नगर (छ.ग.)

न्यूज गैलरी

नवविवाहिता को आत्महत्या करने पर किया मजबूर, 8 लोगों पर मामला दर्ज

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर के उरला थाना क्षेत्र में एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। आरोप है कि महिला के ससुराल वाले उसे आए दिन दहेज में 4 लाख रुपये लाने व बेटी को जन्म देने पर मानसिक व शारीरिक रुप से प्रताड़ित करते थे। जिसके चलते उसने अपने कमरे फांसी लगाकर जान दे दी। मामले की रिपोर्ट पर पुलिस ने जांच के बाद महिला के ससुराल पक्ष के पति एवं अन्य सात लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

थाना उरला निवासी नूरजहां उर्फ गुड़िया 21 वर्ष की शादी जुलाई 2018 में नागेश्वर नगर बीरगांव निवासी नजरुद्दीन 24 वर्ष के साथ हुआ था। दहेज में गुड़िया के माता पिता से अपनी हैसियत अनुसार नगदी 2 लाख 50 हजार रुपये एवं गहने मिलाकर करीब 5 लाख के सामान दामाद को दिये थे। गुड़िया ने जब एक बेटी को जन्म दिया तब ससुराल में उसे बेटी होने का ताना देकर आये दिन प्रताड़ित कर शारीरिक व मानसिक रुप से परेशान किया करते थे। पति व ससुराल पक्ष के लोगों द्वारा मायके से 4 लाख रुपये लाने का उस पर दबाव बनाये जाने से वह काफी परेशान रहने लगी। जिसकी जानकारी कॉल कर उसने 1 सितंबर को अपनी मां को दिया व बताया कि उसका पति व ससुराल वाले मायके से 4 लाख रुयये मांग कर लाने की बात कह उसके साथ मारपीट करते है। गुड़िया को मोबाइल पर बात करता देख उसका पति मोबाइल छीनकर फोन पर चार लाख रुपये का मांग किया। प्रताड़ना से तंग आकर गुड़िया ने 3 सितंबर को रात 9 से 10 बजे के बीच अपने कमरे में दुपट्टा बांधकर गले में फांसी लगा कर जान दे दी।

धान उपार्जन केंद्रों में चबूतरा निर्माण की स्वीकृति

रायपुर/नवप्रदेश। नगरीय प्रशासन एवं विकास तथा श्रम मंत्री तथा आरंग विधानसभा के विधायक डॉ. शिव डहरिया ने अपने विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायतों में नए धान उपार्जन केंद्र की स्वीकृति दिलाकर किसानों को होने वाली परेशानी को भी दूर करने की पहल की। उनकी पहल से धान खरीदी केंद्रों में शेडयुक्त चबूतरे की स्वीकृति होने से बारिश के दिनों में धान को भीगने से बचाया जा सकेगा। मंत्री डॉ डहरिया के प्रयासों से ग्राम पंचायत खमतराई, मुनरेठी, सेमरिया, टेकारी में धान उपार्जन केंद्रों में 4-4 नग चबूतरा निर्माण कार्य हेतु लगभग 40 लाख रुपए की स्वीकृति मिली है।

किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही : वोरा

रायपुर/नवप्रदेश। स्टेट वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन के चेयरमेन वरिष्ठ विधायक अरुण वोरा ने कहा है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जब से सत्ता की बाडोर संभाली है। तब से सर्वहारा वर्ग के साथ-साथ किसानों के हित में निरंतर फैसले किये जा रहे हैं। किसानों की कर्ज माफी, समर्थन मूल्य पर धान खरीदने का फैसला, राजीव गांधी किसान न्याय योजना, गोधन न्याय योजना ऐसी योजनाएं हैं जिसके कारण किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही हैं। वोरा ने सेलूद में हुए सहकारिता सम्मेलन में कहा कि राजीव गांधी किसान न्याय योजनाए गोधन न्याय योजना जैसी योजनाओं से ग्रामीण क्षेत्रों के रहवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। पिछले साल भूपेश सरकार ने फसल पैदा करने वाले किसानों को राजीव गांधी किसान न्याय योजना के तहत 9 हजार रुपए प्रति एकड़ की दर से राशि देने का फैसला किया था। हाल ही में मुख्यमंत्री ने भूपेश बघेल ने एक और बड़ा फैसला किया है जिसके तहत बारिश न होने से फसल बर्बाद होने पर भी किसानों को इसी दर पर राशि मिलेगी। इस फैसले से अकाल जैसी स्थिति का सामना करने वाले किसानों को बड़ी राहत मिलेगी।

फर्जी दस्तावेज से 9.30 करोड़ रुपए की ठगी, 7 लोगों पर मामला दर्ज

रायपुर/नवप्रदेश। कूटरचना व फर्जी दस्तावेज के जरिये 9 करोड़ 30 लाख रुपये का शेयर अपनी कंपनी के नाम करा लेने की रिपोर्ट गंज थाने में दर्ज करायी गई है। मामले की शिकायत पर पुलिस ने विपिन अग्रवाल अन्य 7 लोगों के खिलाफ ठगी व अन्य धाराओं में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया है।साईं विहार सिलतरा धरसींवा निवासी अंजनी पाण्डे 39 वर्ष पिता रामाधार पाण्डे ने गंज थाने में शिकायत दर्ज करायी है कि प्रार्थिया का ओजोन टॉवर फाफाडीह के पास 5 फ्लोर में मर्सस हिमसागर प्राइवेट लिमिटेड नाम से कंपनी का वह पावर ऑफ आर्टनी होल्डर है। प्रार्थिया के कंपनी का छत्तीसगढ स्टील एंड पावर लिमिटेड कंपनी में 13.7 प्रतिशत का शेयर होल्डिंग है। इसके अलावा कंपनी के अन्य 93 व्यक्तियों एवं फर्मों को छत्तीसगढ़ स्टील एंड पावर लिमिटेड कंपनी में शेयर था। आरोप है कि वज्र मेटालिक प्राईवेट लिमिटेड के डायरेक्टर विपिन कुमार अग्रवाल, कैलाश चंद अग्रवाल, विजय आनंद झांवर एवं छत्तीसगढ स्टील एंड पावर लिमिटेड रमेश सिंह ठाकुर, सुरेन्द्र सिंह संधू, आलोक मोहंती, हर्षवर्धवन अग्रवाल ने मिलकर प्रार्थिया के कंपनी हिमसागर लेमिनेटस प्रा.लि. के 9,30,00,000 रूपये मूल्य के 9430000 शेयर (13.7 प्रतिशत शेयर) को कूट रचना कर बिना बताए प्रार्थिया के कंपनी का शेयर रकम वज्र मेटलिक प्रा.लि. में 1 अक्टूबर 2018 को ट्रांसफर कर लिया गया है जिसकी जानकारी 20 अगस्त 2021 को ज्ञात हुआ। जिसके बाद आरोपियों के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करायी गई है।

बच्चों में फ्लू की दस्तक: स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने विशेष टीम सरगुजा संभाग भेजने के दिए निर्देश

रायपुर/नवप्रदेश। सूरजपुर समेत सरगुजा संभाग के कुछ अन्य इलाक़ों में बच्चों में फ़्लू फैलने की खबर पर स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने गंभीरता से लेते हुए राज्य से विशेष टीम सरगुजा रवाना करने के निर्देश जारी किए हैं। साथ ही स्वास्थ्य मंत्री ने संभाग के सरगुजा, कोरिया, बलरामपुर, जशपुर और सूरजपुर सीएमएचओ से बात कर जानकारी लेने उन्हें आवश्यक निर्देश भी जारी किए हैं। स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव ने कहा कि राजधानी से केंद्रीय टीम भेजी जा रही है,यह टीम संभाग में आवश्यक सहयोग करेगी। साथ ही ट्रेसिंग का काम भी चलाने का निर्देश दिया गया है। उत्तर प्रदेश की सरहद वाले इलाक़े से फ़्लू आने के संकेत मिले हैं। कोरिया में भी बच्चों के बड़ी संख्या में फ़्लू से प्रभावित होने की खबरें आ रही हैं। हालाँकि सूरजपुर के मुक़ाबले कोरिया में हालत इस मायने में चिंताजनक है कि संख्या के अनुपात में व्यवस्था को लेकर लगातार शिकायतें आ रही हैं।

जो झुकता है वही दिल जीतता है माला पहनने वाले से बड़ा माला पहनाने वाला होता है : ताम्रध्वज साहू

■ **राजीव भवन रायपुर में संपन्न हुआ पिछड़ा वर्ग कांग्रेस विभाग का प्रादेशिक सम्मेलन**

नवनियुक्त पदाधिकारियों को प्रदान की गई नियुक्तियां

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी पिछड़ा वर्ग विभाग के प्रादेशिक सम्मेलन का आयोजन राजीव भवन रायपुर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि खाद्य मंत्री अमरजीत भगत व समापन अवसर पर पिछड़ा वर्ग कांग्रेस विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू शामिल हुए। छत्तीसगढ़ में पिछड़ा वर्ग की संख्या लगभग 54 प्रतिशत आबादी को ध्यान में रखकर कांग्रेस पार्टी द्वारा किए जा रहे कार्यों की कड़ी में राजीव भवन में पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष व प्रदेश पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए जाने के इस महत्वपूर्ण आयोजन में कार्यक्रम का शुभारंभ करने के लिए छत्तीसगढ़ के खाद्य मंत्री अमरजीत भगत मुख्य अतिथि के रुप में पहुंचे थे। विशेष अतिथि के रुप में पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष थानेश्वर साहू, खनिज विकास निगम के अध्यक्ष गिरीश देवांगन, खाद्य निगम के अध्यक्ष रामगोपाल अग्रवाल, मुख्यमंत्री सलाहकार विनोद वर्मा, छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रभारी महामंत्री संगठन चंद्रशेखर शुक्ला सहित छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के सह प्रभारी दिनेश कुमार उपस्थित थे। पिछड़ा वर्ग कांग्रेस सम्मेलन को संबोधित करते हुए खाद्य मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी हिस्सेदारी यह नारा सिर्फ कागजों में या चिल्लाने के लिए नहीं है बल्कि इसे हम सब पिछड़ा वर्ग के साथियों को आत्मसात करना होगा। खाद्य मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि अब वो वक्त आ गया है कि जो पिछड़ों की बात करेगा वहीं प्रदेश में राज करेगा। कांग्रेस पार्टी से अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति संकल्पित रूप से जुड़ा हुआ है। प्रश्नचिन्ह तो पिछड़ा वर्ग पर लगता है यही पिछड़ा वर्ग प्रदेश में अपनी आबादी के हिसाब से सरकार बनाने की फैसला करती है।

खड़ा पेड़ भी तूफान में गिर जाता है

गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू ने कहा कि हमें जीवन में यह सीख लेनी चाहिए छोटे से बड़ा बना जा सकता है। इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि छोटे-छोटे काम से व्यक्ति बड़ा बनते हैं। उन्होंने कहा कि कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। खड़ा पेड़ तूफान में गिर जाता है लेकिन छोटे पौधे फिर से खड़े हो जाते हैं।

भाजपा मुद्दाविहीन हो चुकी : भगत

खाद्य मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी मुद्दाविहीन हो चुकी है उसके पास अब कहने के लिए कोई बात नहीं है। कांग्रेस को थूककर बहा देने की बात करते हैं लेकिन वह भूल जाते हैं कि कांग्रेस की जड़े बगैर जयचंद के नहीं हिलाई जा सकती। खाद्य मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बघेल ने पद में आते ही 27 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास कराया किंतु भाजपा की साजिश से यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। आरक्षण की घोषणा के बाद छत्तीसगढ़ में ओबीसी में तूफान आ जाना था किंतु हम चुप हैं यह चिंता का विषय है।

उन्होने कहा कि उन्होंने नवयुवक मंडल से अपनी सामूहिक नेतृत्व की यात्रा प्रारंभ की थी और आज इस मुकाम पर हैं। गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू ने कहा कि सम्मान पाने वाले से बड़ा सम्मान करने वाला होता है। जब हम किसी को फूल की माला पहनाते हैं तो वह हमारे सामने झुक जाता है। झुक कर ही संसार को जीता जा सकता है। पद लेकर इससे लेटर पेड तक सीमित नहीं रखना है बल्कि अपने कार्यों के माध्यम से संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य करना है। स्पष्ट वादिता जीवन को अनुशासित करती है। अच्छा काम करने वाला छोटे पद को बड़ा बना लेता है। उन्होंने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं बधाई देते हुए छत्तीसगढ़ सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने की अपील करते हुए छत्तीसगढ़ में पिछड़ा वर्ग अधिक से अधिक कांग्रेसी जोड़ने का आह्वान किया।

साधारण योजना के असाधारण लाभ

गो-सेवा-संरक्षण-संवर्धन के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ बना उदाहरण, समूहों को 5.24 करोड़ रूपए की राशि जारी

रायपुर/नवप्रदेश। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में गोधन न्याय योजना के तहत पशुपालकों, गौठान समितियों तथा स्वसहायता समूहों को कुल 5 करोड़ 24 लाख की राशि उनके बैंक खाते में अंतरण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि गोधन न्याय योजना हमारे लिए गो-माता का आशीर्वाद है।

मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ की गोधन न्याय योजना सफलता के नये आयाम स्थापित करती हुई आगे बढ़ रही है। छत्तीसगढ़ राज्य पूरे देश में गो-सेवा, गो-संरक्षण और गो-संवर्धन के क्षेत्र में उदाहरण बन गया है। जिस तरह गौ को कामधेनु कहा जाता है, उसी तरह गोधन न्याय योजना भी एक कामधेनु-योजना है।

छत्तीसगढ़ बना उदाहरण

मुख्यमंत्री ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि साधारण-सी लगने वाली गोधन न्याय योजना (Godhan Yojana) के लाभ असाधारण हैं। यह सिर्फ गोबर खरीदने और खाद बनाकर बेचने की योजना नहीं है, बल्कि इस योजना के माध्यम से महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता विकास, किसानों की आय में बढ़ोतरी, कृषि भूमि सुधार, उत्पादकता में वृद्धि, कृषि लागत में कमी, पशुधन विकास, खुली चराई पर रोक, फसल संरक्षण दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी सहित अनेक लक्ष्य हासिल हो रहे हैं। यही कारण है कि गो-सेवा-संरक्षण-संवर्धन के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ एक उदाहरण बना। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पशुपालक, गोबर विक्रेताओं को 1 करोड़ 72 लाख रुपए, गौठान समितियों को 2 करोड़ 4 लाख रुपए और स्व सहायता समूहों को 01 करोड़ 48 लाख रुपए इस तरह कुल 5 करोड़ 24 लाख रुपए का ऑनलाईन बैंक खाते में भुगतान किया।

प्रदेश में अब तक 51.27 लाख क्विंटल की हो चुकी गोबर खरीदी : चौबे

कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे ने कहा कि राज्य के जिन गांवों में अभी गौठान नही बन पाए हैं, वहां तेजी से गौठानों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गौठानों में बनाए जा रहे रूरल इन्ड्रस्ट्रीयल पार्क में वर्मी कम्पोस्ट निर्माण के अलावा अन्य सहायक आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जाए। राज्य में अब तक 51.27 लाख क्विंटल गोबर की खरीदी की गई है, जिसके एवज में गोबर विक्रेताओं को 102.54 करोड़ रूपए का भुगतान किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि 6 लाख 11 हजार 547 क्विंटल वर्मी कंपोस्ट एवं 01 लाख 66 हजार 370 क्विंटल सुपर कंपोस्ट का विक्रय किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि सभी गौठानों हरे चारे की व्यवस्था के लिए चारागाह विकसित किए जा रहे हैं। 4 हजार 744 गौठानों में चारा रोपण एवं बोआई का काम पूरा हो चुका है, जिसका रकबा कुल 10 हजार 838 एकड़ है।

स्वीकृत गौठानों की संख्या 10 हजार से अधिक

कृषि उत्पादन आयुक्त डॉ.कमलप्रीत सिंह ने बताया कि राज्य में स्वीकृत गौठानों की संख्या अब 10 हजार 113 हो चुकी है। इनमें से 06 हजार 170 गोठान निर्मित एवं सक्रिय हैं। इन गोठानों से 01 लाख 79 हजार 237 पशुपालकों को लाभान्वित किया जा रहा है। स्व सहायता समूहों और गौठान समितियों को अब तक कुल 57 करोड़ 43 लाख रुपए का लाभांश एवं भुगतान वितरित किया जा चुका है।

स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख सचिव शुक्ला ने किया निरीक्षण, दिए आवश्यक निर्देश

रायपुर/नवप्रदेश। स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अस्पताल से संबंधित सभी तरह के आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल की व्यवस्थाओं, मरीजों को दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं तथा अस्पताल में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों को समय-सीमा के अंदर पूरा करने के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। डॉ. आलोक शुक्ला ने अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा अधीक्षक डॉ.ओंकार खंडवाल को निर्देश दिया कि चिकित्सालय में भर्ती समस्त मरीजों को अंतः रोगी पंजीयन की सुविधा भर्ती वार्ड के अंदर ही मिले।

वार्ड के अंदर ही हों ब्लॉक

डॉ. शुक्ला ने अधिकारियों को आदेशित किया कि, डॉ. खूबचंद स्वास्थ्य सहायता योजना के अंतर्गत बीमारी से संबंधित पैकेज वार्ड के अंदर ही ब्लॉक हों। मरीज वैसे ही परेशान रहते है इस दौरान आर्थिक सहायता के लिए भटकना न पढ़े, इसका विशेष ध्यान रखा जाए, ताकि अधिक से अधिक मरीजों को स्वास्थ्य सहायता योजना के अंतर्गत उपचार सुविधा का लाभ प्राप्त हो सके। उन्होंने अस्पताल के स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग तथा बाल्य एवं शिशु रोग विभाग में हाउसिंग बोर्ड तथा पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा किये जा रहे विभिन्न निर्माण कार्यों को अतिशीघ्र पूरा करने के निर्देश दिये।

इस दौरान राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन छत्तीसगढ़ की संचालक डॉ. प्रियंका शुक्ला, संचालक चिकित्सा शिक्षा एवं अधिष्ठाता चिकित्सा महाविद्यालय डॉ. विष्णु दत्त, अम्बेडकर अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ओंकार खंडवाल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रायपुर डॉ. मीरा बघेल, सीजीएमएससी के प्रबंध संचालक कार्तिकेय गोयल, सहायक अधीक्षक डॉ. ए. वसीम तथा स्त्री एवं प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष डॉ. ज्योति जायसवाल एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बना हुआ है सिस्टम, आज भारी बारिश की संभावना

रायपुर/नवप्रदेश। खंड वर्षा के बाद कई दिनों तक नॉन स्टॉप बारिश ने प्रदेश को तरबतर कर दिया था। अब एक हफ्ते तक कुछ जगहों पर कम या न के बराबर बारिश के बाद एक बार फिर चक्रवाती हवाओं ने राजस्थान और पश्चिम बंगाल के ऊपर एक मजबूत मानसून सिस्टम बना लिया है। इसके प्रभाव से छत्तीसगढ़ में आगामी दिनों में एक बार फिर बारिश हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर संभाग के कुछ स्थानों पर भारी बारिश की संभावना है। साथ ही आकाशीय बिजली भी गिर सकती है।

रायपुर मौसम विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एचपी चंद्रा ने बताया कि एक निम्न दाब का क्षेत्र गंगेटिक पश्चिम बंगाल और उसके आसपास स्थित है' इसके साथ ऊपरी हवा का चक्रीय चक्रवाती घेरा 5.8 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक द्रोणिका इस निम्न दाब के क्षेत्र से तेलंगाना तक अंदरूनी उड़ीसा होते हुए 3.1 किलोमीटर ऊंचाई पर स्थित है। मानसून द्रोणिका जैसलमेर, कोटा, गुना, सीधी, रांची, गंगेटिक पश्चिम बंगाल में स्थित निम्न दाब के क्षेत्र और उसके बाद दक्षिण-पूर्व की ओर उत्तर-पूर्व बंगाल की खाड़ी तक स्थित है।

वहीं मौसम विभाग ने रात 8 बजे एक चेतावनी जारी कर प्रदेश के रायगढ़, सरगुजा, सूरजपुर, बलरामपुर, जशपुर, बिलासपुर, कोरिया और इन जिलों से लगे हुए जिलों में अगले 4 घंटे में भारी बारिश की संभावना भी जताई है।

मंगलवार भी हुई बारिश

प्रदेश के अधिकांश जिलों में मंगलवार को भी हल्की से मध्यम स्तर की बरसात हुई है। अम्बिकापुर और जगदलपुर में हल्की बरसात है। वहीं बेमेतरा में 11 मिमी, कुसमी में 8 मिमी और जैजैपुर में 6 मिमी बरसात हुई है। प्रतापपुर और मनोरा में 5 मिमी, वाड्रफनगर, सक्ती, सोनहट, चांपा, बोड़ला में 4 मिमी बरसात दर्ज हुई।

अच्छी बारिश की संभावना

मौजूदा सिस्टम को देखते हुए 22 सितंबर यानी आज छत्तीसगढ़ में अधिकांश स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज चमक के साथ वज्रपात होने और भारी वर्षा होने की संभावना है। भारी वर्षा का क्षेत्र मुख्यतः सरगुजा तथा बिलासपुर संभाग और उससे लगे दुर्ग और रायपुर संभाग के जिले संभावित है।

बेमेतरा में सबसे ज्यादा बारिश

रविवार को 12 से अधिक जिलों में बरसात की चेतावनी जारी की थी। सुबह की रिपोर्ट के मुताबिक, बेमेतरा में सबसे अधिक बरसात हुई। यहां 24 घंटे में 113.2 मिमी पानी गिरा। एक जून से अब तक वहां 1 हजार 673 मिमी बरसात हो चुकी है।

यह सामान्य का 148 प्रतिशत है। जांजगीर-चांपा के सारागांव में 75 मिमी बरसात हुई है।

इंडियन आयल कंपनी एलपीजी गैस परिवहनकर्ताओं के साथ कर रहा भेदभाव : प्रभात मिश्रा

■ **कंपनी की मनमानी से 22 के बाद एलपीजी ट्रकों के पहिए थमेंगे**

रायपुर/नवप्रदेश। इंडियन आयल कंपनी छग में एलपीजी गैस परिवहनकर्ताओं के साथ भेदभावपूर्ण नीति रखी है। जिसके कारण पिछली निविदा जो 11 सितंबर को खत्म हुई है उसके बाद नई टेंडर नीति में भी एलपीजी आपूर्ति की दरें घटाएं जाने के कारण एलपीजी परिवहनकर्ता डीजल और पेट्रोल के मूल्यों में वृद्धि के चलते सड़कों पर आ गये हैं। अनेक परिवहनकर्ता अपने काम धंधा को छोड़कर जहां बेरोजगार हुए हैं वहीं कुछ ने अपना कारबार बदल दिया है। छग में ढाई ट्रकों के माध्यम से एलपीजी गैस की आपूर्ति की जाती है। उक्त व्यवसाय के टूटने से लगभग एक हजार परिवार प्रभावित हुए हैं। उक्त जानकारी प्रेस क्लब रायपुर में आयोजित पत्रकारवार्ता में एलपीजी परिवहन संघ के महासचिव प्रभात मिश्रा, दिलीप केसवानी, अरविंद यादव, प्रवीण जैन आदि ने दी।

पत्रकारवार्ता में वार्ताकारों ने बताया कि उक्त मामले को लेकर गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू से समस्या के समाधान के संबंध में मुलाकात की गई थी। गृहमंत्री के हस्तक्षेप से एलपीजी आपूर्ति 22 सितंबर तक बढ़ाई गई है। वहीं इंडियन आयल कंपनी के उच्चाधिकारी 22 को ही छग में चर्चा हेतु आ रहे हैं। उक्त मामले में अन्य राज्यों यथा मध्यप्रदेश झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र आदि के परिवहनकर्ताओं को अधिक दरों पर टेंडर देकर कंपनी ने यहां के परिवहनकर्ताओं की रोजी रोटी छीन ली है। मिश्रा एवं जैन के अनुसार प्रदेश के 21 साल बाद भी अभी क्षेत्रीय कार्यालय इंडियन आयल का भोपाल ही है जबकि कंपनी को नया क्षेत्रीय कार्यालय छग में खोलना चाहिए। परिवहनकर्ताओं के लिए बाजार सीमित कर दिया गया है। उच्चाधिकारियों से चर्चा के दौरान समस्या का समाधान नहीं निकलता है तो 23 सितंबर से संपूर्ण प्रदेश में एलपीजी ट्रकों के पहिये थम जाएंगे जिसके लिए कंपनी के अधिकारी जिम्मेदार होंगे। वार्ताकारों ने दुखी मन से बताया कि दोनों लाकडाउन के दौरान कोरोना के प्रभाव के बाद भी हमारे परिवहनकर्ताओं एवं कर्मियों ने निर्बाध गति से अनवरत उपभोक्ताओं को एलपीजी गैस सिलेंडर सेवा से लाभान्वित किया है। अन्य व्यवसायों की तरह एलपीजी गैस सर्विस बिना रूके लगातार जारी है। उन्होंने बताया कि अन्य गैस कंपनियों जैसे हिंदूस्तान पेट्रोलियम, भारत पेट्रोलियम के मुकाबले इंडियन आयल का छग प्रदेश में एलपीजी का 60 प्रतिशत कारबार होता है इसके बाद भी यहां के उपभोक्ताओं के हितों की अनदेखी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया जाना न्यायोचित नहीं है।

पितृपक्ष प्रारंभ | **6 अक्टूबर को पितृमोक्ष अमावस्या के दिन ज्ञात-अज्ञात मृतकों को पिंडदान कर श्राद्ध तर्पण किया जाएगा**

नदी तालाबों में पहुंचकर परिजनों ने पितरों का जल तर्पण के साथ श्राद्ध शुरू किया

रायपुर/नवप्रदेश। सोमवार से पितृपक्ष शुरू हुआ है। छह अक्तूबर तक पितरों का तर्पण किया जाएगा। धार्मिक, मांगलिक कार्य नहीं होंगे। बाजारों में खरीदारी पर भी असर पड़ेगा। पितृपक्ष संपन्न होने के बाद नवरात्र पर्व के साथ बाजार में रौनक लौटेगी। सोमवार से पितृपक्ष शुरू हो जाएगा। छह अक्तूबर तक पितृपक्ष चलेगा। इस दौरान लोग अपने अपने पूर्वजों का श्राद्ध करेंगे। दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए अनुष्ठान किए जाएंगे। पितरों के तर्पण से पितृ प्रसन्न होते हैं। चौबे कालोनी के पंडित विनित शर्मा के मुताबिक जिस तिथि को व्यक्ति का निधन होता है उसी तिथि को उसका श्राद्ध करने की परंपरा है। श्राद्ध करने से पितृ दोष शांत होता है। पूर्वजों की कृपा मनुष्य पर हमेशा बनी रहती है। बताया कि पितृपक्ष सोमवार से शुरू होकर छह अक्तूबर को संपन्न होगा। ज्ञातव्य है कि पितृपक्ष में शास्त्रोत्क मान्यता के अनुसार 15 दिन पितर अपने परिजनों को पृथ्वी पर आकर उनके मन मुताबिक बनाये गये भोजन का स्वाद लेकर उन्हें अपना आर्शीवाद देते हैं। राजधानी सहित प्रदेशभर में आज हिन्दू धर्म को मानने वाले भक्तों ने सुबह से ही नदी अथवा तालाबों में पहुंचकर स्नान के साथ ही सूर्य की ओर देखते हुए हाथ में पानी का आचमन कर दूबी से पिंड के लिए बने आटे के गोलों को श्रद्धापूर्वक अर्पित कर अपने पूर्वजों का स्मरण किया।

पौराणिक मान्यता के अनुसार श्राद्ध पक्ष के दौरान किसी नई वस्तु की खरीदारी व गृह प्रवेश समेत अन्य मांगलिक कार्य धार्मिक अनुष्ठान करना शुभ नहीं रहेगा। विधि विधान से पितरों का श्राद्ध करना चाहिए। मातृ-अथवा पितरों को उनकी निधन तिथि पर श्रद्धा पूर्वक स्मरण करने पर न केवल पितरों का आर्शीवाद मिलता अपितु संतुष्ट होने पर पूर्वजों द्वारा अपने परिजनों के लिए अक्षय समृद्धि के द्वार खोले जाते हैं। सर्व पितृमोक्ष अमावस्या के दिन 6 अक्टूबर को परिवार के ज्ञात-अज्ञात पूर्वजों को ज्ञात कर उनका पूर्ण भक्तिभाव से श्राद्ध तर्पण किया जाता है।

संपादकीय

कैप्टन का रन आउट होना

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह आखिरकार इस्तीफा देने पर मजबूर हो गए। उनका कार्यकाल छह माह से भी कम समय का बचा था लेकिन पार्टी हाई कमान की बेरूखी के चलते वे इस कदर आहत हुए कि उन्होने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना ही बेहतर समझा। कैप्टन अमरिंदर सिंह अपनी बदौलत पंजाब में कांग्रेस को सत्ता में लेकर आए थे। उनका कार्यकाल भी ठीक ठाक ही रहा लेकिन भाजपा से कांग्रेस में गए नवजोत सिंह सिद्धू से उनकी पटरी नहीं बैठ पाई। नवजोत सिंह सिद्धू पंजाब के उपमुख्यमंत्री पद पर काबिज होना चाहते थे लेकिन अमरिंदर सिंह ने उन्हे सिर्फ कैबिनेट मंत्री का ही दर्जा दिया था जिससे नाराज होकर नवजोत सिंह सिद्धू ने बहुत जल्द मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद से नवजोत सिंह सिद्धू ने अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। क्रिकेट खिलाड़ी रहे नवजोत सिंह सिद्धू ने आरोप रूपी बाउंसर पर बाउंसर फेंक के कैप्टन अमरिंदर सिंह को क्लीन बोल्ड करने की हर संभव कोशिश की लेकिन राजनीति के अनुभवी खिलाड़ी कैप्टन अमरिंदर सिंह पिच पर डटे रहे। आखिरकार कैप्टन को रन आउट होना पड़ा। इस तरह नवजोत सिह सिद्धू ने कैप्टन अमरिंदर सिंह को मुख्यमंत्री पर से हटवाकर ही दम लिया। दरअसल नवजोत सिंह सिद्धू के सिर पर पार्टी आलाकमान का हाथ रहा है और कैप्टन अमरिंदर सिंह की आपत्ति के बावजूद नवजोत सिंह सिद्धू को पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष भी बनाया गया था। इसपर भी अमरिंदर सिंह ने नाखूशी जाहिर की थी किन्तु पार्टी अनुशासन की डोर में बंधे रहने के कारण उन्होने खुलकर इसका विरोध नहीं किया था। अब जबकि उन्होने मुख्यमंत्री पद छोड़ दिया है तब उन्होने नवजोत सिंह सिद्धू पर आक्रमण तेज कर दिया है और आरोप लगाया है कि नवजोत सिंह सिद्धू पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान के दोस्त है और वहां के आर्मी चीफ कमर वाजवा के साथ गले मिल चुके है इसलिए वे देश के लिए भी खतरनाक साबित हो सकते है। कैप्टन के इस गंभीर आरोप के बाद यह तय है कि दोनों के बीच लड़ाई अभी लंबी चलेगी। यह तो सिर्फ ट्रेलर है पूरी पिक्चर अभी बाकी है। अब देखना होगा कि क्या कैप्टन अमरिंदर सिंह पार्टी में रहकर ही लड़ाई लड़ते है या अपनी अलग पार्टी बनाते है या फिर आम आदमी पार्टी या भाजपा का दामन थामते है। तीनों ही स्थितियों में कांग्रेस को पंजाब में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में नुकसान उठाना पड़ सकता है।

विचार

कांग्रेस और भाजपा की एकरूपता

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

पंजाब, गुजरात, उत्तराखंड और कर्नाटक में जिस तरह मुख्यमंत्री बदले गए हैं, क्या इस प्रक्रिया के पीछे छिपे गहरे अर्थ को हम समझ पा रहे हैं? किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए यह काफी चिंता का विषय है। इन चारों राज्यों में पिछले दिनों जिस तरह से मुख्यमंत्रियों को बदला गया है, उस तरीके में चमत्कारी एकरुपता दिखाई पड़ रही है। पंजाब में कांग्रेस है और शेष तीन राज्यों में भाजपा है। ये दोनों अखिल भारतीय पार्टियां हैं। इनमें से भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। और कांग्रेस दुनिया की सबसे पुरानी पार्टियों में से एक है। ये दोनों पार्टियाँ दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की सबसे बड़ी पार्टियाँ है। इन दोनों पार्टियों की कार्यपद्धति में आजकल अदभुत समानता दिखाई पड़ने लगी है। चारों राज्यों में सत्ता-परिवर्तन चुटकी बजाते ही हो गया। कोई दंगल नहीं हुआ। कोई उठा-पटक नहीं हुई। हटाए गए मुख्यमंत्री अभी तक अपनी पार्टी में ही टिके हुए हैं। उन्होंने बगावत का कोई झंडा नहीं फहराया। दोनों पार्टियों के जो मुख्यमंत्री अपने-अपने राज्यों में अभी भी टिके हुए हैं, उन्हें डर लग रहा है कि कहीं अब उनकी बारी तो नहीं है। जो नए मुख्यमंत्री लाए गए हैं, उनकी चिंता यह है कि अगले चुनाव में अपनी पार्टी को कैसे जितवाया जाए? दोनों पार्टियों की कोशिश है कि उन्होंने जो नए मुख्यमंत्री ऊपर से उतारे हैं, वे येन-केन-प्रकारेण चुनाव की वैतरणी तैर कर पार कर लें। दोनों पार्टियाँ अपने आपको राष्ट्रीय कहती हैं लेकिन उनका चुनावी पैंतरा शुद्ध जातिवादी है। गुजरात में भाजपा यदि पटेल वोटों पर लार टपका रही है तो पंजाब में कांग्रेस ने दलित वोटों का थोक सौदा कर लिया है। उसने अपने कई सुयोग्य प्रांतीय नेताओं को वैसे ही दरकिनार कर दिया है, जैसे गुजरात में भाजपा ने किया है। दलित वोट पटाने के लिए उसने एक ऐसे व्यक्ति को मुख्यमंत्री बना दिया है, जिस पर कई तुच्छ कोटि के आरोप पहले से ही लगे हुए हैं। यहां असली सवाल यह है कि इन दोनों महान पार्टियों को इस वक्त जातिवाद का नगाड़ा क्यों पीटना पड़ रहा है। कांग्रेस के बारे में तो यह कहने की जरुरत नहीं है कि उसका केंद्रीय नेतृत्व जनता की दृष्टि में लगभग निष्प्रभावी हो गया है। लेकिन भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व का भी विश्वास खुद पर से हिल गया दिखता है। जो नेतृत्व हरयाणा में एक पंजाबी और गुजरात में एक जैन को मुख्यमंत्री बनाकर अपने दम पर जिता सकता था, अब उसकी भी सांस फूलती दिखाई पड़ रही है। वह भी नए चेहरों और जातिवादी थोक आधार की तलाश में जुट गया है। जनता में चाहे दोनों नेतृत्व कम-ज्यादा हिले हों लेकिन अपनी-अपनी पार्टी में उनकी जकड़ पहले से ज्यादा मजबूत हो गई है। लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए यह शुभ नहीं है।

कोविड टीकाकरण की गति बढ़ानी होगी

राजेश माहेश्वरी

> देश में वयस्क आबादी 94 करोड़ है, जिसे पूरी तरह टीकाकृत करने के लिए 188 करोड़ खुराक की आवश्यकता होगी। खास बात है कि सीरम इंस्टीट्यूट साल के शुरुआत में हर महीने 6.5 करोड़ कोविशील्ड की खुराक का उत्पादन कर रहा था, वह जून में 10 करोड़, अगस्त में 12 करोड़ पर पहुंच गया। उम्मीद है कि सितंबर में यह 20 करोड़ को भी पार कर जायेगा। इससे टीकाकरण की गति को तीव्र करने में सरकार को सहूलियत मिलेगी। साथ ही दो अन्य टीकों- कोवैक्सीन और स्पूतनिक से भी अभियान को मजबूती मिल रही है। हालांकि, कुछ राज्यों में टीकाकरण अभियान बहुत धीमा है। अभी तक 18 प्रतिशत वयस्कों को ही दोनों खुराकें और 58 प्रतिशत को एक खुराक मिल सकी है। सार्थक यह है कि देश में कई अन्य टीके ट्रायल के अंतिम चरण में हैं। अच्छी बात यह भी है कि देश ने बच्चों के लिये जायडस-कैडिला की जायकोव-डी वैक्सीन विकसित कर ली है।

कोरोना महामारी को हराने के लिये टीकाकरण ने बड़ी भूमिका निभायी है। प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर देश भर में ढाई करोड़ से ज्यादा लोगों को टीका लगाया गया। अब तक देश में 81 करोड़ से ज्यादा लोगों को बचाव का टीका लग चुका है। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में ये आंकड़ा भले ही कम लग रहा हो, लेकिन विश्व परिदृश्य के हिसाब से भारत कई छोटे देशों की कुल आबादी से कई गुना ज्यादा टीकाकरण कर चुका है। निस्संदेह देश की आधी से अधिक आबादी को कोरोना जैसी घातक बीमारी से बचाव के लिये टीकाकरण देश के स्वास्थ्य तंत्र और सरकार की बड़ी उपलब्धि है। वहीं दूसरी ओर तथ्य यह भी है कि देश की आबादी लगभग 135 करोड़ है। ऐसे में देश में दिसंबर तक वयस्क आबादी के पूर्ण टीकाकरण के लक्ष्य को हासिल करने के लिये अभियान में तेजी लाने की जरूरत से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

वहीं इस तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि अभी उन्नीस करोड़ से अधिक लोगों को ही दोनों डोज लगी हैं। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि पहले और दूसरे टीके की संख्या में इतना अंतर क्यों है? क्या पहला टीका लगाना सरकार की प्राथमिकता में शामिल है? विशेषज्ञों के अनुसार संक्रमण की एक अन्य लहर को रोकने के लिए इस साल के अंत तक 60 फीसदी आबादी को वैक्सीन की दोनों खुराकें दी जानी आवश्यक हैं।

देश में 16 जनवरी को टीकाकरण अभियान की शुरुआत के बाद 10 करोड़ के आंकड़े पर पहुंचने में 85 दिन लगे थे, वहीं इस महीने की सात से 21 तारीख के बीच टीकाकरण का आंकड़ा 60 करोड़ से 81 करोड़ पर पहुंच गया। आंकड़ों के अनुसार 99 प्रतिशत स्वास्थ्यकर्मियों ने पहली डोज और 82 प्रतिशत स्वास्थ्यकर्मियों ने दोनों डोज ले ली है। इसके अलावा, 100 प्रतिशत फ्रंटलाइन वर्कर्स को पहली डोज जबकि 78 प्रतिशत को वैक्सीन को वैक्सीन की दोनों डोज दे दी गई है। भारत में पहले 10 करोड़ लोगों को वैक्सीन डोज देने में 85 दिन लगे थे। 10 से बीस करोड़ का आंकड़ा पार करने में 45 दिन और 20 से 30 करोड़ के आंकड़े तक पहुंचने में 29 दिन लगे. 30 करोड़ डोज के आंकड़े से 40 करोड़ तक पहुंचने में 24 दिन लगे। और 50 करोड़ डोज का आंकड़ा पार करने में

20 दिन लगे।. निस्संदेह, इक्यासी करोड़ लोगों को टीका लगाना हमारी बड़ी उपलब्धि है, लेकिन सार्वजनिक स्थलों में बढ़ती भीड़ व कोरोना से बचाव के उपायों के प्रति हमारी लापरवाही चिंता बढ़ाने वाली है। हम न भूलें कि केरल व महाराष्ट्र अभी दूसरी लहर के कहर से मुक्त नहीं हो पाये हैं। फिलहाल आने वाले संक्रमण के आधे से अधिक मामले इन राज्यों से आ रहे हैं।

इसमें दो राय नहीं कि भारत को समय रहते देश में तैयार व देश में विकसित टीका मिल गया। हम इसके लिये विकसित देशों के मोहताज नहीं रहे। महत्वपूर्ण यह भी कि वयस्कों को यह टीका मुफ्त लगाया गया। पहले टीकाकरण को लेकर आम लोगों में जिस तरह की उदासीनता और संकोच का भाव दिखता था, वह अब नहीं है और लोग तेजी से टीका लगवा रहे हैं। दूसरी लहर तक कुछ नेताओं के बरगलाने और तमाम भ्रांतियों के चलते लोग टीका लगवाने से संकोच कर रहे थे, पर अब ऐसा नहीं है। वर्तमान में टीकाकरण का काम तेजी से जारी है। जो लोग पहले टीका लगवाने से भागते थे, उन्होंने देखा कि उनके आस-पास रहने वाले सभी पढ़े-लिखे लोग सपरिवार टीका लगा रहे हैं और किसी की मृत्यु भी कोविड से नहीं हो रही है, तो उन्होंने समझ लिया कि टीका लगवाने से कोई खास परेशानी नहीं होगी और वे भी टीका लगवाने के लिए प्रेरित हुए। आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग टीके लगवा रहे हैं। वर्तमान में सरकार के समक्ष टीके की आपूर्ति की समस्या है, न कि टीका लगवाने वालों को घर से निकालने की। हालांकि अभी निश्चिंत होने का समय नहीं है, क्योंकि खतरा अभी टला नहीं है। विभिन्न राज्यों में कुछ न कुछ नए मामले सामने आ ही रहे हैं। केरल और महाराष्ट्र में भारी संख्या में प्रति दिन नए मामले सामने आ रहे हैं।

देश में वयस्क आबादी 94 करोड़ है, जिसे पूरी तरह टीकाकृत करने के लिए 188 करोड़ खुराक की आवश्यकता होगी। खास बात है कि सीरम इंस्टीट्यूट साल के शुरुआत में हर महीने 6.5 करोड़ कोविशील्ड की खुराक का उत्पादन कर रहा था, वह जून में 10 करोड़, अगस्त में 12 करोड़ पर पहुंच गया। उम्मीद है कि सितंबर में यह 20 करोड़ को भी पार कर जायेगा। इससे टीकाकरण की गति को तीव्र करने में सरकार को सहूलियत मिलेगी। साथ ही दो अन्य टीकों- कोवैक्सीन और स्पूतनिक से भी अभियान को मजबूती मिल रही है। हालांकि, कुछ राज्यों में टीकाकरण अभियान बहुत धीमा है। अभी तक 18 प्रतिशत वयस्कों को ही दोनों खुराकें और 58 प्रतिशत को एक खुराक मिल सकी है। सार्थक यह है कि देश में कई अन्य टीके ट्रायल के अंतिम चरण में हैं। अच्छी बात यह भी है कि देश ने बच्चों के लिये जायडस-कैडिला की जायकोव-डी वैक्सीन विकसित कर ली है। हालांकि, कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि जिन बच्चों को हार्ट, लंग या लीवर जैसी गंभीर बीमारियों से जूझना पड़ा है, उन्हें ही पहले वैक्सीन दी जाये। आमतौर पर माना जाता है कि बच्चों में वयस्कों के मुकाबले रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। बहरहाल, बारह से सत्रह साल के बच्चों को वैक्सीन अक्तूबर से देनी आरंभ की जायेगी।

विशेषज्ञ अक्तूबर में कोरोना की तीसरी लहर की आशंका जता रहे हैं। दरअसल, यह देश में त्योहारों का मौसम होगा और हमारी लापरवाही भारी पड़ सकती है। लोगों को भीड़ में जाने से बचने की भी जरूरत है। ऐसे समय में, जब तमाम तरह की सामाजिक और औद्योगिक गतिविधियां शुरू हो चुकी हैं, तो कोविड उपयुक्त व्यवहार का पालन जरूरी है। चूंकि अब लगभग सभी स्कूल भी खुल चुके हैं, इसलिए बच्चों की सुरक्षा पर भी ध्यान देना जरूरी है। उन्हें कोविड उपयुक्त व्यवहार के पालन के प्रति जागरूक करना होगा। इस समय कोविड के चलते अन्य रोगों से बचाव के तरीकों पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जो गलत है। बहरहाल, दूसरी लहर की भयावहता के बावजूद पूरे देश में सख्त लॉकडाउन न लगाये जाने के परिणाम अब अर्थव्यवस्था में सकारात्मक बदलाव के रूप में दिखे हैं। कई सेक्टरों में आशाजनक परिणाम सामने आये हैं। विकास दर में तेजी आई है। लेकिन कोरोना से लड़ाई अभी लंबी चलनी है, जिसमें संक्रमण से बचाव के परंपरागत उपायों पर ध्यान देना होगा। इसके लिये जहां व्यक्तिगत स्तर पर भी सतर्कता जरूरी है, वहीं टीकाकरण अभियान में तेजी लाने की जरूरत है।

आमजन को लगा भरोसे का टीका

रमेश सराफ

> देशवासियों ने देश में निर्मित टीके पर विश्वास कर उसको लगवाया। देशवासियों ने बिना डर के देश में निर्मित कोरोना के टीके को लगवा कर कोरोना की लहर को रोकने की दिशा में बहुत बड़ा काम किया है। उसी का परिणाम है कि आज हम कोरोना महामारी को मात देकर सुरक्षा चक्र की ओर बढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं महाराष्ट्र के पुणे में स्थित सिरम इंस्टीट्यूट ने जहां देश में पहला कोविशील्ड टीके का निर्माण किया। वही हैदराबाद की भारत बायोटेक कंपनी ने स्वदेशी टीका कोवैक्सीन को बनाने में सफलता हासिल की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें देश-विदेश से छोटे-बड़े सभी राजनेताओं के बधाई संदेश मिल रहे थे। पार्टी कार्यकर्ता देश के विभिन्न भागों में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे थे। इसी दौरान प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर एक ऐसा कार्यक्रम भी संपन्न हो रहा था। जिससे दुनिया भर में भारत का सम्मान तो बढ़ा ही साथ ही देशवासियों की सुरक्षा की दृष्टि से एक मील का पत्थर स्थापित हुआ। भारत के चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर एक दिन में ही दो करोड़ पचास लाख लोगों को कोरोना वैक्सीन की डोज लगाकर एक रिकॉर्ड कायम किया है। इसके लिए देश के सभी चिकित्साकर्मी व टीकाकरण से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं।

किसी भी एक देश में दिन में ढ़ाई करोड़ से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह हमारे देश के चिकित्साकर्मियों के जोश, मेहनत व जज्बे के कारण ही संभव हो पाया है। दुनिया में बहुत से देशों की तो आबादी ही ढाई करोड़ से कम है। जबकि हमारे देश में एक दिन में ही ढाई करोड़ से अधिक कोरोना टीके की खुराक लगाई जा चुकी है। देश में कोरोना वैक्सीन का टीकाकरण बहुत तेजी से हो रहा है। देश में अब तक 18 वर्ष से अधिक आयु के 80 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगाई जा चुकी है। जबकि करीबन 20 करोड लोगों को दोनों डोज लग चुकी है। देश में प्रतिमाह 20 से 25 करोड़ कोरोना वैक्सीन की डोज लगाई जा रही है। जिनका निर्माण हमारे देश में ही हो रहा है। आठ महीने के कम समय में देश में आधी से अधिक आबादी को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगने से देशवासियों का मनोबल बढ़ा है तथा खुद को कोरोना के संक्रमण से सुरक्षित समझने लगे हैं। एक समय था जब देश में कोरोना वैक्सीन को लेकर बहुत मारा-मारी हो रही थी। वैक्सीन आवंटन को लेकर केन्द्र

व राज्य सरकारों द्वारा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए जा रहे थे। कोरोना वैक्सीन केंद्रों पर उमड़ रही भारी भीड़ की फोटो समाचार पत्रों की सुर्खियां बन रही थी। केंद्र सरकार विरोधी दलों के निशाने पर थी। लोगों में टीकाकरण में होने वाली देरी को लेकर सरकार के प्रति रोष व्याप्त हो रहा था। इसके लिये केंद्र और राज्य सरकारी एक दूसरे को दोषी ठहरा रही थी। मगर आज स्थिति पूरी तरह बदली हुई है। देश में तेजी से टीकाकरण हो रहा है। साथ ही टीकाकरण का पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन कर रही है। पूर्व में कुछ समय तक 18 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों के टीकाकरण की जिम्मेवारी केंद्र सरकार ने राज्यों पर डाल दी थी। जिसको लेकर केंद्र और राज्यों में टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इससे केंद्र सरकार की छिछलेदारी हो रही थी। हालांकि उस दौरान महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात सहित कई प्रदेश सरकारों ने अपने खर्चे से उक्त आयु वर्ग के लोगों का बड़ी संख्या में टीकाकरण भी करवाया था। फिर केंद्र व राज्य के मध्य इस बात पर सहमति बनी कि सभी को निशुल्क टीकाकरण केंद्र द्वारा करवाया जाएगा। तब से केन्द्र टीका लगवा रहा है।

21 जून विश्व योग दिवस से केंद्र सरकार ने 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को निशुल्क टीका लगाने का कार्यक्रम शुरू करवाया था जो आज बहुत तेजी से चल रहा है। उसके बाद से टीकाकरण को लेकर केंद्र व राज्य सरकारों के मध्य व्याप्त आपसी खींचातानी व बयान बाजी भी नहीं सुनने को मिल रही है। केंद्र द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम में देश की सभी राज्य सरकारें पूरी सक्रियता से जुटी हुई है। उसी का परिणाम है कि भारत में एक दिन में ढाई करोड़ से अधिक टीकाकरण संभव हो पाया है। केंद्र सरकार का मानना है कि दिसम्बर 2021 तक देश के सभी व्यस्क 94 करोड़ आबादी को कोरोना वैक्सीन का टीका लगा दिया जाएगा। ताकि देश के लोग कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से सुरक्षित हो सके।

हमारे देश में जिस तेजी से टीकाकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उससे लगता है कि हम तय समय से पहले ही टीकाकरण का लक्ष्य हासिल कर लेंगे। वैज्ञानिक एंवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ शेखर पांडे का मानना है कि देश में टीकाकरण अभियान सफल होने का सबसे प्रमुख कारण है कि सरकार ने समय रहते टीकाकरण अभियान की नीति बनाई। देश के वैज्ञानिकों ने टीके की खोज की और उसको बनाया। निजी कंपनियों ने अपने संयंत्रों में उनका बहुत तेजी से उत्पादन किया। सरकार ने व्यवस्थित तरीके से उसे आम व्यक्ति तक पहुंचाने की सुविधा उपलब्ध कराई।

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

तू बनारस के

तू बनारस के अस्सी घाट सी मुझे घाट वरूणा होना होगा! तुझ तक पहुँचने के लिए मुझे नाव कोई बनना होगा! तू गंगा जैसी है मुझे तुझ जैसा पावन होना होगा! मुझे हर मौसम में मौसम सावन होना होगा! तू नई नवेली नार सी जैसे घाट किनारे आरती! मुझे संग तेरे चलने के लिए दीपक कोई बनना होगा! तू राजघाट के पुल सी है दिन रात धड़कती है मुझमें! तेरे दिल में धड़कने के लिए मुझको बनारस बनना होगा! - **शिल्पी अग्रवाल**

एक दिन तो सब खो

एक दिन तो सब खो ही जाना है फिर भी न जाने क्यों कुछ लोग पहले ही खो देते हैं न जाने क्यों संभाल नहीं पाते जरूरी कीमती सामानों को प्रेम और संवेदनाओं को विश्वास और प्रतीक्षा को ये पा लेने को खुद की जीत समझते हैं और खो देने को दूसरों की हार।

- अनामिका चक्रवर्ती

खास पाती

बहुत चीखा ,बहुत चिल्लाया

बहुत चीखा ,बहुत चिल्लाया कोशिश करता रहा, कभी रह ना पाया अब क्या करूं समझ से परे दिखता मुझे हर कोई बहरा है कोई नहीं है हाथ मिलाता कोई नहीं है हाथ बढ़ाता लगता है चारों तरफ बस जाति-धर्म का पहरा है किस से लड़ूँ ,किसको समझाऊं ये सीना चीर कर मैं किसको दिखाऊं कोशिश जारी है निकलने की बाहर मगर ये दलदल बहुत गहरा है मगरमच्छ हैं, लोमड़ी हैं, और सियार हैं इसमें बहुत सारे बुजुर्ग ,तजुर्बेदार हैं संकुचित मानसिकता वाला हर कोई अब यहां पर आकर ठहरा है विश्वास अब किसी पर होता नहीं मर्द अकेला कभी रोता नहीं जद्दोजहद जारी है पहचानने की क्या करूं सबके चेहरे पर एक चेहरा है। - **प्रवीण माटी**

तेरे सजदे मे झुक जाती है

तेरे सजदे मे झुक जाती है दुनीयाँ तेरे लहराते आंचल से सवर जाती है ये दुनियाँ हर पल एक नया रूप् येक नई शक्शियत हर बार दबाने लगे लोग उँगलियाँ दांतो तले परी कथा की नायिका जैसी तेरी मुस्कराहट से निखर जाती है ये दुनियाँ अपने आत्म विशवास सूझबूझ की जादुई छड़ी से जब तू कमर कसती है तो थम जाती है ये दुनीयाँ आँख में पानी नही , अब आग लिखा जाएगा आज तेरे बारे में एक नया इतिहास लिखा जाएगा अपने हिस्से का सूरज चाँद तारे भी मुझे चाहिए इस धरा से मेरा मन नही भरता मुझको पूरा आसमान भी चाहिए। - हेमा पाण्डेय

आया पतझड़ जो पर्ण हुए तरु

आया पतझड़ जो पर्ण हुए तरु से जुदा उनकी बिछडन देखी तो तेरी याद आई हुई मौसम की पहली बरसात जब शुरू सोंधी मिट्टी मंहकी तो तेरी याद आई ऋतु बासन्ती आई लिए पुरबइया संग लता फूलों लदी तो तेरी याद आई। **-सतीश मैथिल तनुज**

करेगा इश्क तो रोना पड़ेगा

करेगा इश्क तो रोना पड़ेगा गमों से रूबरू होना पड़ेगा सुनेगा रात दिन यदि उसकी बातें उमर भर बोझ ही ढोना पड़ेगा अरे तू छोड़ दे करना सियासत सियासत में तुझे रोना पड़ेगा बचेगा कुछ नहीं इस जिंदगी में हवाले मौत के होना पड़ेगा करेगा याद वह संजय की' बातें उसे जब ज़ख्म खुद धोना पड़ेगा। - **संजय कुमार गिरि**

दर्द का वो गांव दर्द का वो

दर्द का वो गाँव दर्द का वो गाँव था आँसुओं की छाँव था गिन रहे थे रैन-दिवस सांसों का ना चाव था यूँ चली आँधी जो इक पंछी सभी उड़ने लगे नीड थी न ठान्व था पतझड़ का गाँव था कौन जान पाया यहाँ वक्त के गर्भ क आव था न ताव था दर्द का इक गाँव था। - **सविता वर्मा ग़ज़ल**

करनी का पौधा लगाओ उसमें

करनी का पौधा लगाओ। उसमें प्रेम का पानी तथा भजन सिमरन का खाद डालकर उसे पूरी जिंदगी बडा करने में लगा दो और जब वह बड़ा हो जाएगा तो मुक्ति वाला फल देगा जिसे खाकर और कुछ खाने की इच्छा नहीं रहेगी। नज़र बदलो नजारे बदलेंगे, खुद को बदलो हजारो बदलगें, जुड़ जाओ सेवा,सिमरण,सत्संग से, किस्मत के फिर सितारे बदलेंगे। - **डॉ दुलारी चंद्राकर**

गम है तो वो नसीब खुशी

गम है तो वो नसीब खुशी है तो इनायत। क्या खूब तेरी रस्म है क्या खूब रवायत।। कठिनाईयाँ जिंदगी की,सब नजराने हैं तेरे। मरने की भी लेनी क्या तुझसे इजाज़त।। गुजारी है जिंदगी, छल कपट में जिसने। क्या खूब,ढूंढते रहे मुझमें ही शराफत। ताउम्र जो औरों का ही हमदर्द रहा हो। उनको मसीह माने करें उनकी इबादत। - **कमलकांत डोंगरे**

QUIZ TIME

1) बस्तर अंचल की बोली नहीं है? (कुडुख / सादरी / हल्बी / डोरली)
2) प्रदेश के 14 अनुसूचित जिलों में कौन-सा जिला सम्मिलित नहीं है?
3) छत्तीसगढ़ में जलवायु का फैलाव कैसा है?
4) 1918 के किसान उरांव विद्रोह जो कोरिया रियासत में संपन्न हुआ के नेतृत्वकर्ता कौन थे?
5) छत्तीसगढ़ के नामकरण के संबंध में यह मत किसके द्वारा दिया गया है? 'महाजनपद काल में छत्तीसगढ़ चेदी महाजनपद के अंतर्गत आता था और कालांतर में यही चेदिसगढ़ से अपभ्रंश होकर छत्तीसगढ़ बना'।

Ramaquiz

उत्तरमाला- (1) सादरी (2) [illegible] (3) उष्णकटिबंधीय आर्द्र मानसूनी (4) [illegible] (5) [illegible]

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। 1539- सिख संप्रदाय के पहले गुरु गुरुनानक देव का करतापुर में निधन। 1711- फ्रांसीसी सैनिकों ने रियो डी जनेरियो पर कब्जा किया। 1792- फ्रांस गणराज्य की स्थापना की घोषणा हुई। 1903- अमेरिका के इटालो मार्चिओनी को आइसक्रीम कोन के लिए पेटेंट हासिल किया। 1914- मद्रास बंदरगाह पर जर्मन युद्धपोत इम्देन ने बमबारी की। 1914- प्रथम विश्व युद्ध-जर्मन नौसैनिक बलों ने फ्रेंच पोलिनेशिया में पपीते पर बमबारी की। 1949- तत्कालीन सोवियत रूस ने पहला परमाणु बम का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। 1965- संयुक्त राष्ट्र की पहल पर भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम घोषित हुआ। 1966- अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'सर्वेयर-2' चंद्रमा की सतह से टकराया। 1988- नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। 1991- चरित्र अभिनेत्री दुर्गा खोटे का निधन। 2007- नासा के एअर क्राफ़्ट ने मंगल ग्रह पर गुफाओं जैसी सात आकृतियों का पता लगाया। 2010- रूस ने ईरान को हथियार और गोला बारूद की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है। 2011- भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और पटौदी के नवाब मंसूर अली खान पटौदी का निधन। 2013- पाकिस्तान में पेशावर के एक चर्च में आत्मघाती हमले में 78 लोग मारे गये।

41 की हुई करीना कपूर

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड की जानीमानी अभिनेत्री करीना कपूर आज 41 वर्ष की हो गयी। 21 सितंबर 1980 को मुंबई में जन्मीं करीना कपूर को अभिनय की कला विरासत में मिली। उनके पिता रणधीर कपूर अभिनेता जबकि मां बबीता और बहन करिशमा कपूर जानी मानी फिल्म अभिनेत्री थी। घर में फिल्मी माहौल रहने के कारण करीना अक्सर अपनी बहन के साथ शूटिंग देखने जाया करती थीं। इस वजह से उनका भी रूझान फिल्मों की ओर हो गया और वह भी अभिनेत्री बनने के ख्वाब देखने लगीं। करीना कपूर ने बतौर अभिनेत्री अपने सिने करियर की शुरूआत वर्ष 2000 में प्रदर्शित फिल्म रिफ्यूजी से की। इस फिल्म में उनके नायक की भूमिका अभिषेक बच्चन ने निभायी थी जो उनकी भी पहली फिल्म थी। हालांकि फिल्म टिकट खिड़की पर कोई खास कमाल नही दिखा सकी।

वर्ष 2001 में प्रदर्शित फिल्म मुझे कुछ कहना है करीना के करियर की पहली सुपरहिट फिल्म साबित हुयी। वर्ष 2001 में करीना को सुभाष घई की फिल्म यादें में काम करने का अवसर मिला लेकिन कमजोर पटकथा के कारण यह फिल्म टिकट खिड़की पर औंधे मुंह गिर गई। हालांकि उस वर्ष उनकी कभी खुशी कभी गम और अजनबी. जैसी सुपरहिट फिल्में भी प्रदर्शित हुयी लेकिन कामयाबी का श्रेय इन फिल्मों के अभिनेताओं को अधिक दिया गया।

वर्ष 2002 में करीना कपूर के करियर के लिये महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ। इस वर्ष उनकी जीना सिर्फ मेरे लिये और मुझसे दोस्ती करोगे जैसी हिट फिल्में प्रदर्शित हुयी। वर्ष 2003 में करीना को सूरज बड़ज़ात्या की फिल्म मैं प्रेम की दीवानी हूं में काम करने का अवसर मिला। इस फिल्म में ऋतिक रौशन और अभिषेक बच्चन जैसे सितारे थे बावजूद यह फिल्म टिकट खिड़की पर कोई खास कमाल नही दिखा सकी। वर्ष 2004 में करीना के अभिनय के नये आयाम देखने को मिले। इस वर्ष करीना की युवा, चमेली, हलचल और एतराज जैसी सुपरहिट फिल्में प्रदर्शित हुयी। सुधीर मिश्रा के निर्देशन में बनी फिल्म चमेली में करीना ने अपने दमदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लिया। फिल्म में उनके दमदार अभिनय के लिये उन्हें फिल्म फेयर का पुरस्कार भी दिया गया।

वर्ष 2006 में करीना कपूर की सुपरहिट फिल्म ओंकारा प्रदर्शित हुयी। विशाल भारद्वाज के निर्देशन में बनी फिल्म ओंकारा में करीना को उनके दमदार अभिनय के लिये फिल्मफेयर की ओर से क्रिटिक्स अवार्ड द्वारा गया। इसी वर्ष प्रदर्शित फिल्म डॉन में करीना कपूर ने कैमियो किया। इस फिल्म में करीना ने हेलन के सुपरहिट गाने ये मेरा दिल यार का दीवाना पर डांस कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

वर्ष 2007 में प्रदर्शित फिल्म जब वी मेट करीना कपूर के करियर की एक और सुपरहिट फिल्म साबित हुयी। इम्तियाज अली के निर्देशन में बनी इस फिल्म में करीना के

15 अक्टूबर को ओटीटी पर रिलीज होगी तापसी की रश्मि रॉकेट

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री तापसी पन्नू की फिल्म रश्मि रॉकेट 15 अक्टूबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म रिलीज होगी। तापसी पन्नू लंबे समय से अपनी आने वाली फिल्म 'रश्मि रॉकेट' को लेकर चर्चा में चल रही हैं। फिल्म मेकर्स ने इस फिल्म की रिलीज डेट की अनाउंसमेंट कर दी गई है। यह फिल्म दशहरा के अवसर पर 15 अक्टूबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर रिलीज होगी। तापसी पन्नू ने खुद फिल्म का पोस्टर शेयर कर फैंस को दी है। पोस्टर के कैप्शन में उन्होंने लिखा, ÷ये चुनौतियों भरी रेस शुरू हो चुकी है और अब रावण दहन पे ही आके रुकेगी। बहुत कुछ नष्ट करना है रश्मि को इस साल। रश्मि के साथ इस रेस में ऑन और ऑफट्रेक दौड़ने के लिए तैयार हो जाइए। इसमें उसे आपकी आवश्यकता होगी। 'रश्मि रॉकेट' 15 अक्टूबर 2021 को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर टेकऑफकरने के लिए तैयार है। गौरतलब है कि 'रश्मि रॉकेट' में तापसी के अलावा सुप्रिया पाठक, अभिषेक बनर्जी, प्रियांशु पेन्युली और सुप्रिया पिलगांवकर भी मुख्य भूमिकाओं में हैं।

'मिस्टर लेले' के एक खास गाने में दिखेंगे रणबीर कपूर

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के रॉकस्टार रणबीर कपूर आने वाली फिल्म 'मिस्टर लेले' के एक खास गाने में नजर आयेंगे। रणबीर कपूर फिल्म 'मिस्टर लेले' में खास अंदाज में नजर आएंगे। चर्चा है कि रणबीर जल्द ही इस कॉमिक थ्रिलर में स्पेशल सॉन्ग सीक्वंस के लिए विकी कौशल, कियारा आडवाणी और भूमि पेडनेकर को जॉइन करेंगे। गाने को तनिष्क बागची और रोचक कोहली कंपोज कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि फिल्म निर्माता करण जौहर और निर्देशक शशांक खेतान, दोनों ही रणबीर को गाने में लेना चाहते थे। बताया जा रहा है कि यह एक डांस नंबर है जो मुंबई के महबूब स्टूडियोज में शूट होगा। कहा जा रहा है कि स्पेशल डांस नंबर में रणबीर के स्टाइलिस्ट मनीष मल्होत्रा होंगे और उनके जबरदस्त हुक स्टेप्स होंगे। यह ट्रैक फिल्म की हाइलाइट होगा।

न्यूज गैलरी

अक्टूबर में महंगें हों जायेंगे टाटा मोटर्स के वाहन

नई दिल्ली (वार्ता)। सबसे बड़ा कॉमर्शियल वाहन निर्माता टाटा मोटर्स अपने कॉमर्शियल वाहनों की कीमतें 1 अक्टूबर से बढ़ाने की घोषणा की है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि कीमतों में 2 प्रतिशत तक वृद्धि की जायेगी और इसे वाहन के मॉडल एवं वैरिएंट के आधार पर लागू किया जाएगा। उसने कहा कि स्टील एवं कीमती धातुओं जैसी कमोडिटीज की लागत में हो रही निरंतर वृद्धि के कारण, कंपनी को उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी कर इसका कुछ भार उपभोक्ताओं पर डालने की जरूरत महसूस हुई। कंपनी ने कहा कि कीमत में बढ़ोतरी को कम से कम करने के लिए और प्रयास किये हैं और इसके लिए इसने उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर लागत के कुछ हिस्से को समायोजित किया है।

रुपया 26 पैसे लुढ़का

मुंबई (वार्ता)। दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर के मजबूत होने के साथ ही आयातकों और बैंकरों की लिवाली के दबाव में सोमवार को अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 26 पैसे लुढ़ककर 73.74 रुपये प्रति डॉलर रह गया। पिछले कारोबारी दिवस रुपया चार पैसे की बढ़त लेकर 73.48 रुपये प्रति डॉलर रहा था। कारोबार की शुरुआत में रुपया 34 पैसे की बड़ी गिरावट लेकर 73.82 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और सत्र का यही न्यूनतम स्तर भी रहा। हालांकि बिकवाली के बल पर यह 73.62 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर भी पहुंचा।

इंग्लैंड का अगले महीने निर्धारित पाकिस्तान का दौरा रद्द

लंदन (वार्ता)। इंग्लैंड पुरुष एवं महिला क्रिकेट टीम के अगले महीने निर्धारित पाकिस्तान दौरे को रद्द कर दिया गया है। इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने सोमवार को इसकी पुष्टि की है। इससे तीन दिन पहले न्यूजीलैंड ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए न्यूजीलैंड पुरुष क्रिकेट टीम का पाकिस्तान दौरा रद्द किया था। ईसीबी ने खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ के शारीरिक और मानसिक हित को प्राथमिकता का हवाला देते हुए दौरे को रद्द करने की बात कही है जो दौरों पर कोरोना और बायो-बबल (जैव सुरक्षित वातावरण) से बहुत तनाव में हैं। ईसीबी ने एक बयान में कहा, ÷ इस साल की शुरुआत में हम अक्टूबर में पाकिस्तान में दो अतिरिक्त टी-20 विश्व कप अभ्यास मैच खेलने के लिए सहमत हुए थे, जिसमें पुरुषों के मैचों के साथ-साथ डबल हेडर मुकाबलों के साथ महिलाओं का एक छोटा दौरा भी शामिल था, लेकिन ईसीबी ने इस हफ्ते के अंत में पाकिस्तान में इन अतिरिक्त मैचों पर चर्चा करने के लिए एक बैठक बुलाई थी, जिसके बाद हमने अनिच्छा से दोनों टीमों के इस दौरे को रद्द करने का फैसला लिया है। उल्लेखनीय है कि न्यूजीलैंड के फैसले के बाद ही इंग्लैंड दौरे पर संदेह खड़ा हो गया था और इस सप्ताहांत हुई बोर्ड की बैठक में ईसीबी को पाकिस्तान का दौरा रद्द करने के निष्कर्ष पर आना ही पड़ा। ईसीबी ने कहा, हमारे खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ की मानसिक और शारीरिक भलाई हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और वर्तमान में हम जिस हालात में रह रहे यह और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। हम जानते हैं कि पाकिस्तान की यात्रा के बारे में चिंताएं बढ़ रही हैं और हमारा मानना ??है कि आगे बढ़ने से एक ऐसे खेल समूह पर और दबाव पड़ेगा जो पहले से ही प्रतिबंधित कोरोना वातावरण में लंबे समय तक रह चुका है। ईसीबी का मानना है कि यह दौरा पुरुषों के टी-20 विश्व कप के लिए आदर्श तैयारी नहीं होगी, जो 14 अक्टूबर से संयुक्त अरब अमीरात और ओमान में शुरू हो रहा है। ईसीबी ने कहा, ÷ हमारी पुरुष टी-20 टीम के लिए अतिरिक्त जटिलता है। हमारा मानना है कि इन परिस्थितियों में दौरा करना आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप के लिए आदर्श तैयारी नहीं होगी। जहां अच्छा प्रदर्शन करना 2021 के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है।

चक्रवर्ती और आंद्रे रसेल की घातक गेंदबाजी, केकेआर नौ विकेट से जीता मैच

अबू धाबी (वार्ता)। मिस्ट्री स्पिनर वरुण चक्रवर्ती (3/13) और तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर आंद्रे रसेल (3/9) की घातक गेंदबाजी की बदौलत कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने आईपीएल 14 के 31वें मैच में यहां सोमवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को नौ विकेट से हरा दिया। बेंगलुरु की टीम टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 100 रन भी नहीं बना सकी और 19 ओवर में 92 रन बना कर ऑलआउट हो गई। जवाब में केकेआर ने सलामी बल्लेबाजों शुभमन गिल (48) और वेंकटेश अय्यर (41) की पहले विकेट के लिए 82 रन की शानदार साझेदारी की बदौलत 10 ओवर में ही नौ विकेट से मैच जीत लिया। शुभमन ने छह चौकों और एक छक्के के सहारे 34 गेंदों पर 48 और वेंकटेश ने सात चौकों और एक छक्के की मदद से 27 गेंदों पर 41 रन बनाए। इससे पहले कोलकाता ने घातक गेंदबाजी करते हुए बेंगलुर के बल्लेबाजों के चारों खाने चित किया। केकेआर के गेंदबाजों का पहला शिकार खुद विराट बने, जिन्हें दूसरे ओवर में तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा ने आउट किया। इसके बाद देवदत्त पडिकल और श्रीकर भारत ने 31 रन की साझेदारी कर पारी को संभाला, लेकिन तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन ने पडिकल को आउट कर यह साझेदारी तोड़ दी और इसके बाद तो विकेटों की झड़ी लग गई। यहां से चक्रवर्ती और रसेल ने मोर्चा संभाला और आरसीबी की बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी।

पेट्रोल और डीजल में 16वें दिन भी टिकाव

नई दिल्ली (वार्ता)। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कल तेल की कीमतों में हुयी भारी गिरावट के बावजूद मंगलार को दिल्ली में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में लगातार 16 वें दिन टिकाव बना रहा।

गत पांच सितंबर को इन दोनों की कीमतों में 15-15 पैसे प्रति लीटर की कमी की गयी थी। दिल्ली में आज इंडियन ऑयल के पंप पर पेट्रोल जहां 101.19 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 88.62 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अनुसार, दिल्ली में पेट्रोल 101.19 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 88.62 रुपये प्रति लीटर पर रहा। दुनिया की प्रमुख मुद्रा की तुलना में डॉलर में आयी मजबूती के दबाव में कल तेल की कीमतों में करीब दो फीसदी की नरमी रही। अमेरिकी बाजार में कल ब्रेंट क्रूड 1.41 डॉलर उतरकर 73.92 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 1.68 डॉलर गिरकर 69.29 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की रोजाना समीक्षा होती है और उसके आधार पर हर दिन सुबह छह बजे से नयी कीमतें लागू की जाती हैं।

बंगाल में आयकर छापा, 700 करोड़ की अघोषित आय का खुलासा

नई दिल्ली (वार्ता)। आयकर विभाग ने पश्चिम बंगाल के प्रमुख स्टील निर्माता के यहां छापेमारी कर 700 करोड़ रुपये से अधिक की अघोषित आय का पता लगाया है और इस संबंध में जांच अभी जारी है।

विभाग ने आज यहां जारी बयान में कहा कि गत 17 सितंबर को यह छापेमारी की कार्रवाई राज्य में 15 स्थानों पर शुरू की गयी जिसमें आठ आवासीय परिसर, नौ कार्यालय और आठ फैक्ट्री शामिल है। कोलकाता, दुर्गापुर, आसनसोल और पुरूलिया के साथ ही राज्य के अन्य हिस्सों में यह कार्रवाई की गयी। इस कार्रवाई के दौरान अघोषित आय को लेकर बहुत से दस्तावेज और डिजिटल साक्ष्य मिले हैं। अघोषित आय को असुरक्षित ऋण में और फर्जी कंपनियों के शेयर खरीद में लगाया गया है। इसके अतिरिक्त संपत्ति के कागजात भी मिले हैं और अलग अलग नामों पर भी भूमि के कागजात मिले हैं।

संजीत, शिवा थापा और मोहम्मद हुसामुद्दीन फाइनल में

बल्लारी (वार्ता)। संजीत, शिव थापा और मोहम्मद हुसामुद्दीन ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए सोमवार को कर्नाटक के बल्लारी में इंस्पायर इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स में पांचवीं एलीट मेन्स राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप के फाइनल में प्रवेश किया।

सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड (एसएससीबी) का प्रतिनिधित्व करने वाले मौजूदा एशियाई चैंपियन संजीत दिल्ली के अपने प्रतिद्वंद्वी हर्ष कौशिक के खिलाफ प्रभावी साबित हुए। उन्होंने 92 किग्रा सेमीफाइनल मुकाबले में हर्ष पर 5-0 से जीत दर्ज की। संजीत का फाइनल में हरियाणा के नवीन कुमार से सामना होगा जो पंजाब के राघव चौधरी को हरा कर फाइनल में पहुंचे हैं। फाइनल मुकाबले मंगलवार को होंगे।

गत चैंपियन हुसामुद्दीन को 57 किग्रा सेमीफाइनल मुकाबले में 4-1 से जीत हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। स्वर्ण पदक मैच में उनका मुकाबला दिल्ली के रोहित मोर से होगा। दीपक (51 किग्रा), आकाश (54 किग्रा), एताश खान मोहम्मद (60 किग्रा), दलवीर सिंह तोमर (63.5 किग्रा), आकाश (67 किग्रा), सुमित (75 किग्रा), सचिन कुमार (80 किग्रा), लक्ष्य (86 किग्रा) और नरेंद्र (+92 किग्रा) फाइनल में पहुंचने वाले अन्य एसएससीबी मुक्केबाज हैं।

केआईआईटी अपने दो स्टेडियम्स का नाम ओलंपियन और पैरालंपियन के नाम पर रखेगा

भुवनेश्वर (वार्ता)। मानित विश्वविद्यालय कलिंग औद्योगिक प्रौद्योगिकी संस्थान (केआईआईटी) ने अपने दो स्टेडियमों का नाम पैरालंपियन और ओलंपियन के नाम पर रखने का फैसला किया है। केआईआईटी ने कैंपस-12 में इंडोर स्टेडियम का नाम पैरा बैडमिंटन एथलीट प्रमोद भगत के नाम पर रखने की घोषणा की है, जहां वह अभ्यास करते हैं। वहीं केआईआईटी के सिंथेटिक एथलेटिक स्टेडियम का नाम दुती चंद के नाम पर रखने का फैसला लिया है। केआईआईटी और केआईएसएस के संस्थापक अच्युत सामंत ने आज यहां एक समारोह में ओलंपियंस और पैरालंपियंस को बधाई देते हुए कहा कि दिसंबर 2021 में केआईआईटी के इन दोनों स्टेडियमों का नाम क्रमशः प्रमोद भगत और दुती चंद के नाम पर कर दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि प्रमोद ने हाल ही में टोक्यो में संपन्न पैरालंपिक खेलों में बैडमिंटन में स्वर्ण पदक जीता है।

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती दिप्ती कुन्डू पिता/पति स्व. देवजीत कुन्डू अन्य निवासी ग्राम पोटियाकला तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम पोटियाकला तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 165/79 रकबा 0.022 हे. भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार देवजीत कुन्डू आ. स्व. जी.एन. कुन्डू की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 13.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री धुधरु यादव पिता स्व. मोहनलाल यादव निवासी ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम कसारीडीह तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 213/2, 213/29 रकबा 0.003, 0.005 हे. भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार मोहनलाल यादव की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 07.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 20.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/वर्ष 2020-21
ई.पंजी. 202109100700202

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका आरती रोडगे पिता/पति स्व. प्यारेलाल घरडे निवासी ग्राम राजीव नगर तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1278/115 रकबा 0.005 हे. भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार प्यारेलाल घरडे की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30.09.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 16.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

पंजी. 202107100400379

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदिका चमेली चौधरी पति बोधनलाल चौधरी निवासी धनोरा द्वारा अपने स्वामित्व की भूमि ग्राम धनोरा प.ह.न. 39 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 601/34 रकबा 0.024 हें 2610 वर्गफीट के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 23.07.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

पंजी. 202109100400219

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री टेकराम साहू आ. विशालराम साहू निवासी कोनारी द्वारा अपने स्वामित्व की भूमि ग्राम धनोरा प.ह.न. 39 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 601/13 रकबा 0.022 हें 2400 वर्गफीट के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 17.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

पंजी. 202109100400209

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदिका श्रीमती बॉबी दिल्लीवार पति श्री नरेश कुमार दिल्लीवार निवासी क्वा. नं. 06 सेक्टर 07 भिलाई तह. व जिला दुर्ग द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की ग्राम जामुल प.ह.न. 18 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 792/8 रकबा 0.013 हें 1382 वर्गफीट भूमि के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 17.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

पंजी. 202109100400208

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री रितेश तिवारी आ. राजकुमार तिवारी निवासी ब्रजराज नगर झाडसुगुडा तह. व जिला दुर्ग द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की ग्राम जामुल प.ह.न. 18 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 793/7 रकबा 0.011 हें 1200 वर्गफीट भूमि के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 17.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

पंजी. 202109100400203

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री किन्तु सोलंकी आ. चंद्रकांत सोलंकी निवासी उतई तह. व जिला दुर्ग द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की ग्राम उतई प.ह.न. 42 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 986/88 रकबा 0.071 हें मे से 0.051 हे. 5000 वर्गफीट भूमि के वाणिज्यिक प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 20.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

जर्जर सड़क को लेकर कीचड़ में बैठ गए थे जपं सदस्य व ग्रामीण, 24 घंटे में मरम्मत

जनपद सदस्य ने जिला प्रशासन और मीडिया का जताया आभार

बालोद/नवप्रदेश। बालोद दल्ली मार्ग पर कुसुमकसा के मुख्य चौक के पास नेशनल हाईवे पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए थे। जहां बारिश का पानी भरा हुआ था। सोमवार को इन गड्ढों में बैठकर जनपद सदस्य संजय बैस सहित आसपास के व्यापारियों ने नारेबाजी के साथ प्रदर्शन किया था व विभाग की लापरवाही को उजागर किया था कि किस तरह से सड़क के मरम्मत पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

इस संबंध में हमने प्रमुखता से खबर प्रकाशित की। खबर प्रकाशन की 24 घंटे के भीतर ही मामले में नया मोड़ आ गया और जो विभाग अब तक इस जगह की अनदेखी कर रहा था वह भी यहां मरम्मत के लिए आ पहुंचा। जानकारी के मुताबिक जिला प्रशासन कलेक्टर जनमेजय महोबे द्वारा भी संबंधित विभाग के अफसरों को इसके लिए फटकार लगाई गई और इसे गंभीरता से लेते हुए मरम्मत का काम करवाया गया।

जनपद सदस्य संजय बैस ने बताया कि सुबह से ही विभाग के इंजीनियर व कर्मचारी आ गए थे व स्थिति देखें और यहां मरम्मत शुरू की गई। यहां पर डामरीकरण होगा। इसके पहले दिन समतलीकरण का काम हुआ है। गड्ढों में भरे पानी को निकासी की व्यवस्था बनाई गई है। यहां गड्ढा होने का प्रमुख कारण पानी भर जाना है। पानी निकासी का रास्ता नहीं था इसलिए बारिश के बाद जब यहां पानी भरता है और लगातार भारी वाहन चलते हैं तो यहां गड्ढा हो जाता है। इसके लिए भी विभाग द्वारा पहल की गई और निकासी के लिए रास्ता बनाया गया। ताकि पानी ना भरें। फिलहाल गड्ढों को समतल किया गया है।

बुधवार को यहां डामरीकरण करने की बात नेशनल विभाग के अधिकारी कर रहे हैं। तो वहीं इस पहल के लिए जनपद सदस्य ने जिला प्रशासन के साथ-साथ मीडिया का भी आभार जताया। उन्होंने कहा कि मीडिया ने इस मामले को प्रमुखता से उठाया। जिसके चलते शासन प्रशासन ने इस पर तत्काल ध्यान दिया।

ज्ञात हो कि जनपद सदस्य सहित व्यापारी इस हालात में आंदोलन को मजबूर हो गए थे। सड़क की बदहाली को दिखाने के लिए वे कीचड़ में ही बैठकर प्रदर्शन किए थे। जनपद सदस्य के अलावा व्यापारी संघ एवं राम जानकी सेवा समिति के लोगों द्वारा सांकेतिक धरना प्रदर्शन किया गया था। जिस पर जिला प्रशासन ने तत्काल संज्ञान लिया। गड्ढों को मरम्मत किया गया।

लोगों की आवाजाही में अब थोड़ी बहुत सुविधा मिलने लगी है। गड्ढों से निजात मिला है व स्थाई हल निकालने के लिए यहां पानी निकासी का रास्ता बनाया गया है। तो वहीं बुधवार को गड्ढों को पूरी तरह से समतल करने के बाद वहां डामरीकरण भी कर दिया जाएगा। इस पहल के लिए जनपद सदस्य संजय बैस, व्यापारी संघ के अध्यक्ष प्रकाश चंद कुचेरिया, राम जानकी सेवा समिति के अध्यक्ष विरेंद्र सिन्हा ने कलेक्टर, नेशनल हाईवे विभाग के अफसर व मीडिया का भी आभार व्यक्त किया।

पीएससी में चयनित दिव्या वैद्य को कलेक्टर ने दी बधाई

गरियाबंद/नवप्रदेश। अभी हाल ही में पीएससी 2019 के मुख्य परीक्षा का परिणाम जारी हुआ। जिसमें गरियाबंद नगर की बेटी कुमारी दिव्या वैद्य का चयन हुआ है। आज उन्होंने कलेक्टर से मिलकर धन्यवाद और आभार प्रकट किया। उन्होंने बताया कि वे जिला प्रशासन द्वारा संचालित रत्नगर्भा अकादमी ''रेस'' से विशेष मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त की है। जिसके कारण मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार में आत्मविश्वास के साथ बेहतर प्रदर्शन कर पायी। कलेक्टर निलेश क्षीरसागर ने इस अवसर पर उन्हें गुलदस्ता और मोमेंटो प्रदान कर इस सफलता के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि रत्नगर्भा से पहली सफल प्रतियोगी के रूप में आपका चयन हुआ है। उन्होंने कोचिंग संस्थान के संबंध में कहा कि इसे आने वाले प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी प्रारंभ किया जायेगा। कलेक्टर ने आगामी प्रतियोगी जैसे पुलिस विभाग, फूड, राजस्व और पीएससी के लिए 02 अक्टूबर गांधी जयंती से पुनः कोचिंग प्रारंभ करने कहा है। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ संदीप अग्रवाल द्वारा भी दिव्या को बधाई दी गई। श्री अग्रवाल ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

प्लेसमेंट कैम्प 24 सितम्बर को

गरियाबंद/नवप्रदेश। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र, गरियाबंद द्वारा 24 सितम्बर, शुक्रवार को प्रातः 11 बजे से दोपहर 03.00 बजे तक जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र परिसर, गरियाबंद में निःशुल्क प्लेसमेंट कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। मारूति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने भारत सरकार के साथ मिलकर सीटीएस स्कीम के तहत गुड़गांव, हरियाणा में 02 वर्ष के आई.टी.आई (ट्रेड आटोमोटिव मैन्युफैक्चरिंग टेक्नीशियन) को में प्रशिक्षण हेतु नामांकन इस वर्ष के लिए शुरू किया गया है।

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता व सतर्कता जरूरी : कलेक्टर

मानसिक स्वास्थ्य व स्पंदन के तहत लोहारा पुलिस व स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित की गई जवानों के लिए कार्यक्रम

कवर्धा/नवप्रदेश। शारीरिक स्वास्थ्य की भांति मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना और इस दिशा में सतर्क रहना अति आवश्यक है। एक सबसे चैलेंजिग बात यह है कि आज भी अच्छे खासे पढ़े - लिखे , शिक्षित वर्ग में मेंटल प्रॉब्लम्स के इलाज या लक्षण के लिए स्वीकारोक्ति नही है। लोग मन की बीमारी को स्वीकार ही नही कर पाते हैं और यही वजह है कि इसके उपचार में देरी होती है।

हमें अपना कार्य पॉजिटिव अप्रोच के साथ करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से कार्य का परिणाम भी अच्छा आएगा और निपटारा भी जल्द होगा। हमें डेली रूटीन, हेल्दी लाइफस्टाइल, योगा , हेल्दी डाइट का प्रॉपर ध्यान रखना चाहिए व इसको नियम से अपनी लाइफ में शामिल करनी चाहिए। उक्त बातें जिला कलेक्टर रमेश कुमार शर्मा ने आज लोहारा के एक कार्यक्रम में कही। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग व पुलिस विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम की सराहना भी की व कहा कि इस तरह का कर्यक्रम समय-समय पर करते रहना चाहिए। उन्होंने पूरी टीम को बधाई व शुभकामनाएं भी दी।

पुलिस विभाग से एस पी मोहित गर्ग ने अपना अनुभव व जानकारी लोगों से साझा करते हुए मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि मानसिक समस्याएं होने पर इनका निदान भी मौजूद रहता है। कभी-कभी हम या हमारे आस-पास के लोग इस निदान को तलाश नही पाते हैं, ऐसे में हमें काउंसलर्स व मनोरोग चिकित्सक का सहारा लेना चाहिए।

उन्होंने पुलिस जवानों को तनाव प्रबंधन के बारे में जागरूक रहने की सलाह भी दी और कहा कि तनाव सबको होता है आपका नजरिया तय करता है कि आप कितने समय में उस तनाव से उबरते हैं। कार्यक्रम में मेंटल व फिजिकल हेल्थ के सबन्धों को लोहारा बीएमओ डॉ संजय खरसन द्वारा व मेंटल हेल्थ प्रोग्राम की जिले में दशा-दिशा को कार्यक्रम के नोडल डॉ विनोद चन्द्रवंशी ने विस्तार से बताया।

उल्लेखनीय है कि स्वास्थ्य विभाग और लोहारा पुलिस विभाग की ओर से आज लोहारा के मंगल भवन में पुलिस जवानों के लिए मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर रमेश कुमार शर्मा, एस पी मोहित गर्ग, डीएसपी मोनिका सिंह परिहार, लोहारा थाना टी आई, बीएमओ डॉ संजय खरसन, मेंटल हेल्थ प्रोग्राम के जिला नोडल डॉ विनोद कुमार चन्द्रवंशी, निरीक्षक आनंद शुक्ला, स्वास्थ्य विभाग की ओर से तूलिका शर्मा, अनिल हियाल, अराधना बंजारे, सुनील शर्मा बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि गण व पुलिस जवान उपस्थित थे।

कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा ने जिला चिकित्सालय का किया निरीक्षण

राजनांदगांव/नवप्रदेश। कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा ने बसंतपुर स्थित जिला चिकित्सालय का निरीक्षण किया। उन्होंने मरीजों को ऑनलाईन ओपीडी पर्ची कम्प्यूटर से देने के निर्देश दिए। उन्होंने मरीजों के बैठने के लिए वेटिंग चेयर उपलब्ध कराने के लिए कहा तथा अन्य सुविधाओं की जानकारी ली।

सीजीएमएसई के अधिकारी को सीपेज ठीक करने के निर्देश दिए। जिला चिकित्सालय परिसर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने के लिए कहा। कलेक्टर ने हॉस्पिटल के सहायक ग्रेड-3 हरीश कुमार देवांगन को लापरवाही एवं अनुशासनहीनता के लिए कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि सभी डॉक्टरए नर्स तथा स्टॉफ समय पर हॉस्पिटल आएंगे। उन्होंने दवाई की उपलब्धता के संबंध में जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मिथलेश चौधरी, डीपीएम गिरीश कुर्रे, सिविल सर्जन डॉ. चंद्रवंशी, सीजीएमएससी के इंजीनियर शैलेश नागेश्वर, मेडिकल कॉलेज के एवीन चौधरी एवं अन्य डॉक्टर तथा स्टॉफ उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

बेमेतरा व महासमुंद...

स्कूल में मंगलवार को 5 छात्र संक्रमित मिले हैं। वहीं 3 छात्रों में कोरोना के लक्षण भी पाए गए हैं। इस खबर के बाद गांव के आस-पास क्षेत्र में हडकंप मच गया है। हायर सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य पुसकुमार साहू ने बताया मंगलवार स्वास्थ्य विभाग की टीम जांच सैम्पल लेने आई थी। जिसमें 8 बच्चों में कोरोना के लक्षण पाए गए हैं। उन्होंने बताया इसके पहले जांच हुई थी जिसमें एक भी बच्चे संक्रमित नहीं मिले थे। एक साथ 8 बच्चों में लक्षण पाए जाने के बाद यहां पूरी तरह से ऐतिहात बरती जा रही है।

सोमवार देर रात तक स्वास्थ्य बुलेटिन में जारी आंकड़ों के अनुसार महासमुंद जिले में केवल 1 मरीज ही संक्रमित पाया गया था। अब स्कूली बच्चों के संक्रमण के बाद शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में हड़कंप मच गया है। महासमुंद कलेक्टर डोमन सिंह ने बच्चों के संक्रमण की पुष्टि करते हुए कहा कि स्वास्थ्य अमले को स्कूल भेजकर पूरी तरह से सैनेटाइज किया गया है। शेष बच्चों का भी सैम्पल लेकर जाँच ढके लिए भेजा गया है। जिन बच्चों में लक्षण पाए गए हैं उन्हें और जो पॉजिटिव हैं उन्हें क्वारेंटाइन किया गया है।

ब्रिटेन का रवैया भेदभाव...

यूके की यात्रा करने वाले हमारे नागरिकों को प्रभावित करती है। विदेश मंत्री ने ब्रिटेन के नए विदेश सचिव के समक्ष इस मुद्दे को मजबूती से उठाया है। मुझे बताया गया है कि कुछ आश्वासन दिए गए हैं कि इस मुद्दे को सुलझा लिया जाएगा।'

ब्रिटेन ने बदले हैं यात्रा नियम

आपको बता दें कि ब्रिटेन ने अपने कोविड-19 यातायात नियमों में बदलाव किए हैं लेकिन इसके साथ ही एक नए विवाद को जन्म भी दे दिया है। ब्रिटेन पर आरोप लग रहे हैं कि वह भारत के साथ भेदभाव कर रहा है। ब्रिटेन सरकार पर अब भारत से आने वाले यात्रियों के लिए तय नियमों समीक्षा करने का दबाव भी बढ़ता जा रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि ब्रिटेन ने नए नियमों के तहत 'कोविशील्ड' वैक्सीन लेने वालों को टीका लिया हुआ नहीं माना जाएगा, जबकि ऑक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका वैक्सीन पाए लोगों को मान्यता दी गई है।

आरोपियों को एमपी...

गया। चार सदस्यीय दल जिसमे पाढर चौकी प्रभारी उप निरीक्षक (एसआई) विनोद यादव, सहायक उप निरीक्षक दिलीप तांडेकर, आरक्षक नवीन रघुवंशी एवं अरूण लोवंशी शामिल थे, जो दो चोर को रायपुर से गिरफ्तार कर लौट रहे थे।

बड़चिचोली के करीब जैसे ही पुलिस की कार पहुंची तो अँधेरे में खड़ी ट्रक से कार की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। जिसमे कार के सामने का भाग बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। घटना में पाढर चौकी प्रभारी विनोद यादव (एसआई) की मौके पर ही मौत हो गई, वही सहायक उप निरीक्षक दिलीप तांडेकर, आरक्षक नवीन रघुवंशी एवं अरूण लोवंशी घायल हो गए। वहीं दोनों चोर कार के पीछे बैठे होने के कारण उनको कोई चोट नहीं लगी। दोनो आरोपी पुलिस सुरक्षा में है।

अस्पताल संचालक को दो...

अब आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

ऐसे घूमी संदेह की सुई : डॉ. के गायब होने के बाद शहर के एक व्यक्ति ने उन्हें कॉल किया तो रिसीव ही नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद मोबाइल पर मैसेज आया कि अभी बात नहीं कर सकता। मेरे साले के यहां इनकम टैक्स का छापा पड़ा है। फ्री होकर बात करेंगे। पुलिस के अनुसार बिलासपुर में उनका कोई साला नहीं रहता है। ऐसा मैसेज किसी ने उनसे जान बूझकर भ्रमित करने के लिए लिखवाया है। उनके दो साले हैं और झारखंड में रहते हैं। जिस पर कुछ गड़बड़ होने की पुख्ता हो गई।

अपहरण की वजह ये : आरोपी डॉक्टर मूल रूप से मुरादाबाद के रहने वाले हैं। कोरोना काल के दौरान वे प्रैक्टिस करने दिल्ली की एक एजेंसी के माध्यम से बिलासपुर पहुंचे थे। यहां स्काई अस्पताल में प्रैक्टिस कर रहे थे। कोरोनाकाल में हुई कमाई के बाद से ही उसके कमीशन को लेकर अस्पताल प्रबंधन और डॉक्टर के बीच विवाद चल रहा था। इस मामले में सीएमओ और अन्य अफसरों से शिकायत भी की गई थी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला था।

नरेंद्र गिरि केस...

प्राप्त राज्य मंत्री रह चुके हैं। जबकि सुशील मिश्रा भारतीय जनता पार्टी के नेता हैं। इनके अलावा मुरादाबाद में तैनात एडिशनल एसपी ओपी पांडेय भी मौजूद थे, जिनके सामने ये समझौता हुआ था। इस दौरान एक वीडियो भी बनाया था, जिसमें आनंद गिरि अपने गुरु नरेंद्र गिरि के पैर छू रहे थे। बता दें कि आनंद गिरि को हिरासत में लिए जाने से पहले ही उन्होंने अपने इंटरव्यू में कहा था कि उनके गुरु के साथ जो विवाद था, उसे खत्म कर दिया गया है और हमारे बीच समझौता हो गया था।

आज अमेरिका के लिए...

है। इसमें क्लाइमेट चेंज, शिक्षा जैसे मुद्दों पर भी चर्चा हो सकती है।

25 सितंबर को UNGA में पीएम मोदी का संबोधन

पीएम मोदी वॉशिंगटन से न्यू यॉर्क जाएंगे। वहां वह यूएन जनरल असेंबली के 76वें सेशन के दौरान जनरल डिबेट को संबोधित करेंगे। यह कार्यक्रम 25 सितंबर को होगा।

शत-प्रतिशत टीकाकरण के लिए पूरी ऊर्जा एवं उत्साह से रणनीति बनाकर कार्य करें : सिन्हा

राजनांदगांव/नवप्रदेश। कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा ने जिले में वैक्सीनेशन की समीक्षा के लिए बैठक ली। इस अवसर पर सभी एसडीएम, जनपद सीईओ, बीएमओ तथा सीएमओ वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से जुड़े रहे। कलेक्टर ने कहा कि कोविड-19 की तीसरी लहर की आशंका को देखते हुए जिले में टीकाकरण की गति बढ़ाने की दिशा में पूरी टीम को मेहनत से कार्य करना होगा। जिले में टीके पर्याप्त संख्या में है तथा शत-प्रतिशत टीकाकरण के लिए पूरी ऊर्जा एवं उत्साह से रणनीति बनाकर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने सभी बीएमओ से कहा कि जिन क्षेत्रों में टीकाकरण कराने से लोग छूट गए हैं ऐसे स्थानों का चिन्हांकन कर वहां शिविर लगाकर कार्य करें और टीकाकरण की गति बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि बुधवार एवं गुरूवार को महाअभियान चलाकर टीकाकरण कराया जाएगा। इसके लिए सभी आवश्यक संसाधन एवं तैयारी होनी चाहिए। टीकाकरण के लिए सामुदायिक सहभागिता बहुत जरूरी है और इसके लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं मितानिन बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। टीकाकरण के डाटा एंट्री के लिए कम्प्यूटर ऑपरेटर बढ़ाएं। कलेक्टर ने विकासखंडवार वैक्सीनेशन की समीक्षा की।

कलेक्टर श्री सिन्हा ने कहा कि इस महाअभियान के लिए जनप्रतिनिधि, समाजसेवी सहित सभी लोगों की सहभागिता जरूरी है। जनसामान्य को टीकाकरण के लिए जागरूक करें और स्थानीय स्तर पर इसके लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि जिले में टीकाकरण में महिलाओं की सहभागिता बहुत अच्छी रही है। जो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन एवं स्वसहायता समूह की महिलाओं की जागरूकता एवं मेहनत का परिणाम है। उन्होंने कहा कि जिन्हें पहला डोज लग चुका है, उन्हें दूसरा डोज लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

कार्यालय नगर पालिका परिषद कुम्हारी, जिला-दुर्ग (छ.ग.)
Phone : 07821-247029, Email : cmokumhari@gmail.com

क्र./1843/राज.वि./न.पा./2021 — कुम्हारी, दिनांक 21.09.2021

मैन्युअल पद्धति नीलामी सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद कुम्हारी, जिला-दुर्ग (छ.ग.) क्षेत्रांतर्गत विभिन्न सामुदायिक/सांस्कृतिक भवनों के संचालन हेतु तीन वर्षों हेतु (अवधि 01.11.2021 से 31.10.2024) ठेका पर दिया जाना है। इच्छुक व्यक्ति/संस्था/फर्म नीचे लिखे विवरण अनुसार निर्धारित प्रपत्र में अपना प्रस्तावित दर सील बंद लिफाफे में केवल स्पीड पोस्ट/ पंजीकृत डाक के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं।
1. निकाय से प्रपत्र क्रय करने की अंतिम तिथि - 06.10.2021 सायं 5.00 बजे तक।
2. निर्धारित प्रपत्र में दर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि - 13.10.2021 दोपहर 2.00 बजे तक।
3. प्रपत्र खोले जाने की तिथि - 13.10.2021 दोपहर 3.00 बजे से
4. उच्चतम दर प्रस्तावक के द्वारा ठेका स्वीकृति की राशि का 50 प्रतिशत दिनांक 18.10.2021 को समय सायं 5.00 बजे से पूर्व जमा करना अनिवार्य होगा।

क्र.	सामुदायिक/सांस्कृतिक भवन का नाम एवं पता	शासकीय दर (प्रति वर्ष)	अमानत राशि (एफ.डी.आर.)
1	सामुदायिक भवन (महामाया मंदिर के पास वार्ड क्र.-03)	75000/-	7500/-
2	डॉ. भीमराव अम्बेडकर सर्व समाज मांगलिक भवन (गौठान के पास वार्ड क्र.-03)	225000/-	22500/-
3	सांस्कृतिक भवन (शासकीय इंग्लिश मीडियम स्कूल के सामने वार्ड क्र.-06)	150000/-	15000/-
4	क्लब हाउस खारून ग्रीन्स कालोनी, वार्ड क्र.-19	225000/-	22500/-

शर्तें-
1) नीलामी की नियम व शर्तें कार्यालयीन अवधि में अवलोकन किया जा सकता है।
2) नीलामी सूचना की जानकारी नगरीय प्रशासन विभाग की वेबसाईट www.uad.cg.nic.in पर देखी जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद कुम्हारी

कार्यालय संचालक सह वनमण्डलाधिकारी जंगल सफारी वनमण्डल रायपुर (छ0ग0)
Phone No.- 0771-2439725 — Email ID – dfojunglesafari@yahoo.com

निविदा सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि संचालक सह वनमण्डलाधिकारी जंगल सफारी रायपुर द्वारा नंदनवन जू एवं जंगल सफारी नया रायपुर में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों हेतु आवश्यक निर्माण सामग्री (सीमेंट) की निविदा आमंत्रित की जाती है। जिस हेतु विस्तृत निविदा प्रपत्र एवं आवश्यक शर्तें अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय से सूचना प्रकाशन के 30 दिन के अंदर या नीचे दर्शित तिथि तक, 1000/– का डिमांड ड्राफ्ट/नगद शुल्क जो संचालक सह वनमण्डलाधिकारी, जंगल सफारी, रायपुर के नाम में देय हो, जमा कर पूर्ण आवेदन के साथ प्रस्तुत करने पर प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रथम निविदा असफल होने पर दर्शित तिथि को द्वितीय निविदा प्राप्त कर खोली जावेगी तथा द्वितीय निविदा असफल होने पर दर्शित तिथि को तृतीय निविदा प्राप्त कर खोली जावेगी।

निर्माण सामग्री (सीमेंट) हेतु

विवरण	प्रथम निविदा दिनांक	समय	द्वितीय निविदा दिनांक	समय	तृतीय निविदा दिनांक	समय
निविदा फार्म बिक्री की अंतिम तिथि	14.10.2021	अपराह्न 12.00 बजे तक	21.10.2021	अपराह्न 12.00 बजे तक	28.10.2021	अपराह्न 12.00 बजे तक
निविदा फार्म जमा की अंतिम तिथि	14.10.2021	अपराह्न 02.00 बजे तक	21.10.2021	अपराह्न 02.00 बजे तक	28.10.2021	अपराह्न 02.00 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि	14.10.2021	अपराह्न 03.00 बजे	21.10.2021	अपराह्न 03.00 बजे	28.10.2021	अपराह्न 03.00 बजे

टीपः– अनुमानित लागत एवं धरोहर राशि का अवलोकन निविदा प्रपत्र में किया जा सकता है।

जी-63820/2

संचालक सह वनमण्डलाधिकारी
जंगल सफारी रायपुर (छ0ग0)

कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) एवं समक्ष प्राधिकारी देवभोग, जिला गरियाबंद (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.मा.क्र./202109220800003/अ-2

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका रेणु कश्यप पति ओम कुमार कश्यप, निवासी ग्राम उरमाल, तहसील मैनपुर, जिला गरियाबंद (छ.ग.) के द्वारा ग्राम देवभोग प.ह.नं. 14 रा.नि.मं. व तहसील देवभोग में स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि ख.नं. 644/26 रकबा 0.03 हेक्टेयर भूमि राजस्व अभिलेख में कृषि भूमि दर्ज है, जिसे आवासीय प्रयोजन के लिए भूमि परिवर्तित कर पुनः निर्धारण किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतएव आवेदिका के द्वारा दिए गए आवेदन अनुसार आवासीय प्रयोजन हेतु परिवर्तित किए जाने में जिस किसी भी व्यक्ति एवं संस्था को दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो दिनांक 11.10.2021 समय 5.00 बजे तक मेरे समक्ष स्वयं या अपने अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। निर्धारित समय पश्चात प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 16.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा सहित जारी किया गया।

सील — अनुविभागीय अधिकारी (रा.) एवं समक्ष प्राधिकारी देवभोग

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सड्डू, रायपुर (छ.ग.)
कामर्शियल काम्पलेक्स, सेक्टर-8 द्वितीय तल, सड्डू, रायपुर
Email ID emzoneii@yahoo.com GST No.22AAECA9783D2ZP

//आम सूचना//

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि अटल आवास योजनांतर्गत कुंरा धरसींवा में स्थित भवन क्रमांक 135, श्री रोहित कुमार साहू पिता श्री राधेलाल साहू को ऑफर/ स्ववित्तीय/ भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित/नामांतरित किया गया था। आबंटी द्वारा दिनांक 20.11.2009 को अपने नाम पर सेलडीड/लीजडीड पंजीयन कराने के उपरांत दिनांक 30.06.2021 को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को क्रेता श्री योगेशकुमार साहू पिता श्री मनिहार राम साहू निवासी द्वारा तुलसीराम साहू, राधाकृष्ण मंदिर के पास, ग्राम गिरोला पो. जामगांव तहसील व थाना अभनपुर जिला रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक 07.09.2021 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में क्रेता श्री योगेश कुमार साहू पिता श्री मनिहार राम साहू द्वारा उक्त भवन को (फ्री-होल्ड) पश्चात अपने नाम पर नामांतरण किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सड्डू, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-4, सेजबहार, रायपुर
(छ.ग.) फोन : 0771-2971574
Email ID-eocghbzone05@gmail.com

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी खिलोरा, जिला-रायपुर, में दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित एल.आई.जी. भवन क्र.-27, श्रीमती स्वीटी अग्रवाल पति श्री रमेश कुमार अग्रवाल के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्र. 710 दिनांक 23.01.2009 के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 01.10.2010 को लीजडीड पंजीकृत करा लिया गया है। वर्तमान में आबंटी श्रीमती स्वीटी अग्रवाल पति श्री रमेश कुमार अग्रवाल, निवासी-महामाया मोटर, पुजारी पार्क, टिकरापारा, रायपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्री नागेन्द्र प्रताप पटेल पिता श्रीराम निहोर पटेल, निवासी-म.नं. 1058, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, सेजबहार, रायपुर, तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में विक्रय करना चाहते हैं। विक्रय अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त भवन श्री नागेन्द्र प्रताप पटेल पिता श्री राम निहोर पटेल के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्ध शासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन का फ्री-होल्ड किये जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-04
सेजबहार, रायपुर, छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-4, सेजबहार, रायपुर
(छ.ग.) फोन : 0771-2971574
Email ID-eocghbzone05@gmail.com

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी सेजबहार, जिला-रायपुर, में दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित एल.आई.जी. भवन क्र.-597, श्रीमती नुसरत बेगम पति श्री मोहम्मद नुरूल हसन के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्र. 5453 दिनांक 26.10.2006 के माध्यम से आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का लीजडीड दिनांक 12.03.2015 को पंजीकृत उपरान्त दिनांक 13.08.2020 को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को आबंटी श्रीमती नुसरत बेगम पति श्री मो. नुरूल हसन, पता-म.नं. 878, नूरी काम्पलेक्स, बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्रीमती रेखा मिश्रा पति श्री कमलेश कुमार मिश्रा पता- शांति नगर, रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक 18.08.2021 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में क्रेता श्रीमती रेखा मिश्रा पति श्री कमलेश कुमार मिश्रा द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात अपने नाम पर नामांतरण किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्ध शासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन का फ्री-होल्ड किये जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-04
सेजबहार, रायपुर, छ.ग.

केनरा बैंक Canara Bank — **शाखाः सीपत, बिलासपुर (छ.ग.)**

अचल संपत्ति के लिए कब्जे का नोटिस परिशिष्ट IV नियम 8(1)

अधोहस्ताक्षरकर्ता ने जो वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम 2002 के अधीन केनरा बैंक की निम्नांकित शाखा का प्राधिकृत अधिकारी है, प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(2) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, ऋण लेने वाले निम्नलिखित कर्जदार की निम्नांकित सारणी के अनुरूप मांग सूचना तथा उसमें उल्लिखित रकम उक्त सूचना की प्राप्ति की तारीख से 60 दिन के भीतर प्रतिदाय करने की मांग करने के लिए जारी की थी।

ऋण लेने वाले द्वारा रकम का प्रतिदेय करने में असफल रहने पर, ऋणी/जमानतकर्ता/बन्धककर्ता और जनसाधारण को यह सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त नियमों के नियम 8 के साथ पठित उक्त (अधिनियम) की धारा 13(4) के अधीन उसे प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए नीचे वर्णित संपत्ति का कब्जा ले लिया है। ऋणी/जमानतकर्ता/बन्धककर्ता को विशेष रूप से और सर्वसाधारण को सामान्यतया एतद्द्वारा चेतावनी दी जाती है कि निम्नलिखित सम्पत्तियों में कोई लेन-देन न करें और उसमें किसी प्रकार का लेन-देन केनरा बैंक की निम्नांकित संबंधित शाखा को देय बकाया राशि एवं उस पर ब्याज आदि के प्रभार के अधीन होगा।

जमानतकर्ता/गारंटर/बंधककर्ता (ओं) का ध्यान सुरक्षित परिसंपत्तियों को छुड़ाने के लिये उपलब्ध समय के संबंध में अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के प्रावधानों के लिये आमंत्रित किया गया है।

क्र. सं.	ऋणी/जमानतदार एवं शाखा का नाम	कब्जाधीन सम्पत्ति का विवरण	मांग सूचना राशि	मांग सूचना तिथि / कब्जा सूचना तिथि
1.	श्री शेख ईशाक पिता- शेख न्यामुद्दीन एवं श्रीमती शारिमन बेगम पुत्री- श्री मोहम्मद इकबाल, शाखा- सीपत, बिलासपुर	प्लॉट नं. 2118, खसरा नं. 947/2 भाग, प.ह.न. 19/29, धान मण्डी के पास, मोपका, बिलासपुर, जिला-बिलासपुर एवं राज्य छत्तीसगढ़, क्षेत्रफल का माप- 1134 वर्गफिट संपत्ति के समस्त भाग तथा अंश। संपत्ति की चौहद्दी: दक्षिण- निस्तारी सड़क, उत्तर- विमला आजमानी की भूमि, पश्चिम- विक्रेता की बचत भूमि, पूर्व- किशन [illegible] की भूमि।	₹ 20,05,509.44 ब्याज तथा उस पर लागू शुल्क	11.05.2021 / 15.09.2021

दिनांक : 21.09.2021, स्थान: सीपत (छ.ग.) — प्राधिकृत अधिकारी, केनरा बैंक

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा बंसल स्कूल कैम्पस, अशोक विहार कॉलोनी, पण्डरी से मुद्रित कर ब्रिस्टल चौक छोटापारा रायपुर से प्रकाशित, प्रबंध संपादक-चन्द्रशेखर धोटे
फोन व फैक्स : 0771-4035602, RNI NO.CHHHIN/2012/41806/ डाक पंजीयन क्रमांक सी.जी./आर.वाई.पी. डीएन/40/2019-2021

■ न्यूज गैलरी

दुर्घटना में मृत चालक के परिजनों को 10 लाख रुपए की दी गई सहायता राशि

कवर्धा (नव प्रदेश)। डायल 112 की गाड़ी का चालक नरेन्द्र खवास निवासी बस्तर की 6 दिसंबर 2020 को सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी जिसके समूह बीमा का 10 लाख रुपए का चेक पुलिस अधीक्षक डायल 112 द्वारा मृतक के परिजनों को रायपुर में उप पुलिस अधीक्षक केपीएस धुर्वे एवं पुनीतराम सिन्हा तथा टाटा प्रोजेक्ट मैनेजर विक्रम सिंह, विवेक सिंह डायल 112 के आरआई रवि उपाध्याय, निरीक्षक संतोष शुक्ला, उप निरी वासुदेव परगनिहा, राजेश शाही की उपस्थिति में दिया गया।

शिवनाथ नदी में मिली अज्ञात महिला की लाश

भाटापारा (नव प्रदेश)। नगर से 6 किमी दूर सेमरिया घाट स्थित शिवनाथ नदी में एक अज्ञात महिला की है। पुलिस के मुताबिक उक्त अज्ञात महिला का शव नदी में बहकर आया है। पुलिस ने शव पीएम के लिए भेज दिया है। ग्रामीण थाना प्रभारी रोशन सिंह ने बताया कि सेमरिया घाट शिवनाथ नदी एनीकट में एक अज्ञात महिला उम्र लगभग 25 से 27 साल की लाश मिली है। मछुवारा ने उक्त शव को देखा फिर गांव के सरपंच को खबर दी। सरपंच की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच कर शव बाहर निकाला। महिला की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस उसकी पहचान करने के लिए जिले के साथ ही दूसरे जिलों की थानों में सूचना भेजी है।

गुणवत्ता छुपाने मुरुम का लिया गया सहारा

देवभोग (नव प्रदेश)। नियम विरुद्ध नाली निर्माण की समाचार प्रकाशित के बाद सरपंच सचिव द्वारा नाली के किनारे मुरुम डालकर गुणवत्ताहीन कार्य को छुपाने की तैयारी किया जा रहा है। बीते दिन नवप्रदेश द्वारा ग्राम पंचायत गोहेकेला पंडित पारा से नलकूप तक लाखों रुपए से बनाई गई गुणवत्ताहीन नाली निर्माण को लेकर प्रमुखता के साथ खबर प्रकाशित किया गया। इसके बाद सरपंच सचिव नियमानुसार कार्य की ओर पहल शुरू कर दी है। बकायदा नाली किनारे मुरूम से फिलिंग करने की तैयारी हो रही है। इस बीच फिलिंग को लेकर ग्रामीण सवाल भी खड़े कर रहे और कमजोर नाली निर्माण छुपाने का आरोप लगा रहे। इसके अलावा लंबाई चौड़ाई सहित मसाला पर भी जमकर धांधली किए जाने की बात कह रहे। जिसकी जांच उपरांत ही पूरी खुलासा होने का दावा किया जा रहा है। ग्रामीणों के अनुसार साइड इंचार्ज की मौजूद रहने तक पूरी नियम का पालन कर कार्य होता रहा। लेकिन साइड इंचार्ज के जाने के बाद सरपंच सचिव मनमानी पर उतारू हो जा रहे। यही वजह की नाली निर्माण समय से पहले टूटने का अंदेशा लगाया जा रहा है । क्योंकि बमुश्किल पानी की तराई ही हुआ है। मतलब पानी की तराई ऊपर वाले के भरोसे रहे। तभी नाली निर्माण में इस्तेमाल मसाला राख की तरह नजर आ रहा है।

हायर सेकण्डरी स्कूल साजा पहुंचे कलेक्टर

बेमेतरा (नव प्रदेश)। कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान बेमेतरा जिले के विकासखण्ड मुख्यालय साजा का दौरा कर शासकीय कन्या हायर सेकण्डरी स्कूल का निरीक्षण किया। छात्राओं के कोरोना पॉजिटिव मिलने के कारण छात्राओं का कोरोना जांच किया जा रहा है। सैंपल जांच के दौरान हायर सेकण्डरी स्कूल के 6 छात्राएं पॉजिटिव पाई गई थी। बीएमओ साजा ने बताया कि मंगलवार को एक पॉजिटिव केस मिला है, जिसे मिलाकर अब 7 हो गई है। छात्राओं का उपचार किया जा रहा है। डिप्टी कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी संदीप ठाकुर ने बताया कि नगर पंचायत क्षेत्र साजा के सभी स्कूलों के जांच के लिए चार मेडिकल टीम गठित की गई है। जिलाधीश ने स्कूल स्टाफ एवं छात्राओं से कहा कि कोरोना संक्रमण से बचने के लिए कोविड एप्रोप्रिएट बिहेवियर का पालन करें, सोशल डिस्टेंस का पालन करें, भीड़-भाड़ वाले स्थानों में न जायें, दो गज की दूरी मास्क है जरुरी नियम का पालन करें, समय-समय पर साबून से हाथ धोते रहें, सनेटाईसर का उपयोग करें। उन्होंने कहा कि हमें कोरोना से बचने के लिए और अधिक एहतियात बरतने की जरुरत है। टीका लगने के बाद यह न समझें की हम सुरक्षित हैं बल्कि टीका लगने के बाद हमें और अधिक सावधानी बरतने की जरुरत है

आज की जाएगी जांच- स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार को स्वास्थ्य विभाग की चार टीमों के द्वारा बालक, कन्या व सरस्वती ज्ञानदीप उच्चतर माध्यमिक शाला में कोरोना जांच व कांट्रेक्ट ट्रेसिंग किया गया, जिसमें लगभग 4 सौ बच्चों की जांच हुई। मंगलवार को हुए जांच में कन्या हायर सेकेंड्री स्कूल के कक्षा 12 वीं की एक छात्रा पाजिटिव पाई गई। आज भी स्कूलों में छात्रों का टेस्ट किया जाएगा। कन्या, बालक, सरस्वती ज्ञानदीप, जीनियस, डायमंड स्कूलों में स्वास्थ्य विभाग की चार टीम जांच करने पहुंचेगी।

पीडब्ल्यूडी विभाग की गुणवत्ताहीन सड़क की होगी विभागीय सचिव से शिकायत : पुजारी

मैनपुर व देवभोग ब्लॉक में हाई स्कूल भवन निर्माण में भी जमकर की गई गड़बड़ी

नव प्रदेश संवाददाता

देवभोग। मैनपुर और देवभोग ब्लॉक के बुरजाबहाल सगड़ा गाड़ाघाट के हाई स्कूलों मैं पीडब्ल्यूडी विभाग ठेकेदार द्वारा गुणवत्ताहीन बनाई गई सीसी सड़क निर्माण की लगातार शिकवा शिकायत के बाद क्षेत्रीय विधायक डमरूधर पुजारी ने मामला को संज्ञान में लेते हुए विभागीय सचिव और कलेक्टर से शिकायत कर जांच कराने की बात कहीं है। बकायदा इसके लिए राजधानी पहुंचकर विभागीय अधिकारी को अवगत कराने की पहल शुरू कर दिया है। क्योंकि बच्चों की सहूलियत के लिए जनता की लाखों रुपए से बनाई जा रही सड़क फिजूली खर्च साबित हो रहा हैं। विधायक डमरूधर पुजारी के आरोप अनुसार विभागीय ठेकेदार को कांग्रेस मंत्रियों के अलावा प्रशासनिक अधिकारियों का खुला संरक्षण प्राप्त है । तभी नियम कानून को ताक पर रखकर गुणवत्ताहीन सड़क का निर्माण किया जा रहा है। शायद यही वजह है कि चंद दिनों के बाद सड़क की स्थिति खराब हो रही है। जिसे देख डमरूधर पुजारी ने कईयों बार अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कार्य में गुणवत्ता लाने के लिए कहा रहा लेकिन पुजारी की आदेश को दरकिनार करते हुए किसी प्रकार कार्य मैं सुधार नही लाया । यहां बताना लाजमी होगा कि सगड़ा स्कूल पर करीब 28 लाख गाड़ाघाट स्कूल में 15 लाख के अलावा बुरजाबहाल मे लाखों की लागत से सीसी सड़क निर्माण कराया कराया है। हालांकि गाड़ाघाट स्कूल पर वर्तमान में सड़क निर्माण किया जा रहा है । और निर्माण के दौरान अधिकारियों की आंख बंद कर बैठने का लाभ ठेकेदार द्वारा अच्छी तरह से ले रहे हैं। तभी मैट्रियल में मटेरियल ने जमकर कांटा मारी किया जा रहा है। और और मटेरियल में किस तरह कांटा मारी किया गया है यह सगड़ा और बुरजाबहाल के सड़क की दुर्दशा देख आकलन किया जा सकता है। ऐसा नहीं कि जिला के कार्यपालन अभियंता गुणवत्ता हीन कार्य से अनभिज्ञ है। बल्कि पूरी जानकारी रखने के बाद भी सीसी सड़क निर्माण में गुणवत्ता लाने का प्रयास नहीं किया जा रहा हैं। तभी आज मामला विभागीय सचिव तक पहुंच रही है। सबसे मजेदार बात तो यह है कि पीडब्ल्यूडी विभाग ठेकेदार द्वारा बनाई गई सीसी सड़क 2 वर्ष से अधिक समय तक टिकने का दावा किया जा रहा है। जबकि सड़क में इस्तेमाल मटेरियल अभी से धूल में तब्दील हो रहे हैं ।

कोरोना वारियर्स का अपमान कर रहा शासन- सुनील

कवर्धा (नव प्रदेश)। जनता कांग्रेस जे के जिलाध्यक्ष सुनील केशरवानी ने बताया कि जिला में कोविड 19 के प्रथम फेस और द्वितीय फेस में कोविड सेंटर में पूर्ण ईमानदारी से सफाई कर्मचारियों ने अपने जान की फिक्र किये बिना कार्य किया था। पूरी दुनिया जहाँ सहमी थी लोग घर से निकलने के लिए कतराते थे उस समय इन्होंने कोविड मरीजो की सेवा बखूबी की है उनके शौचालय को स्वच्छ करने के साथ-साथ मरीजों के लिए भोजन और आपातकाल में मेडिकल सेवा भी दी है।

साथ ही श्री केशरवानी ने बताया कि जहाँ इन्हें सम्मान मिलना था अब इन्हें दुत्कार मिल रहा है विगत तीन माह से पेमेंट नही दिया गया है और तो और इन्हें नौकरी से हटा दिया गया है। एक ओर कोविड की तीसरी फेस आने की सम्भावना है जिसके लिए तैयारी जोरों पर है लेकिन इन सफाई कर्मियों को पेमेंट के लिए और अपनी नौकरी के लिए दर-बदर भटकना पड़ रहा है यदि ऐसे ही कोरोनो के खिलाफ लड़ने वालों को यही व्यवहार मिलेगा तो सामने कौन आएगा?

अपनी समस्याओं को लेकर सीएमएचओ से मिलने जाने पर सफाई कर्मचारियों महिलाओं के साथ गली-गलौच कर दुत्कारा जाता है जो कि एक अधिकारी को सोभा नही देता जल्द ही समस्याओं का निराकरण करने के साथ ही मुख्य चिकित्सा अधिकारी के व्यवहार को देखते हुए उन्हें बर्खास्त किया जाए।

जिलाध्यक्ष सहित शहर अध्यक्ष हिमांशु महोबे, आफताब राजा, खिलेशकान्त दोहरे, सुनील लांझी, संतोष कुमार, राजकुमार ठाकुर, फगनी बाई, भगवती, पार्वती, रवि कुमार, रामप्रसाद, परमेश्वर, राजेश, गणेश, जितेंद्र, राजू, मुकेश, अशोक एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

रेलवे सुरक्षा बल का 37 वां स्थापना दिवस समरोह संपन्न

नव प्रदेश संवाददाता

भाटापारा। रेलवे सुरक्षा बल का 37 वां स्थापना दिवस समारोह गत दिवस संपन्न हुआ । इस अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में महा निरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त ने विभिन्न उत्कृष्ट सेवाओ के लिए विभिन्न अधिकारी कर्मचारियो सहित प्रधान आरक्षक राजेन्द्र रायकवार को डी जी पदक और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विदित हो कि एसईसीआर में महानिरीक्षक,सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त के नेतृत्व में एक उप महानिरीक्षक, एक उप मुख्य सुरक्षा आयुक्त, तीन मंडल सुरक्षा आयुक्त, सात सहायक सुरक्षा आयुक्त, 46 निरीक्षक, 100 उपनिरीक्षक, 127 सहायक उपनिरीक्षक, 451 प्रधान आरक्षक, 719 आरक्षक, चार वाहन चालक एवं 31एंसेलरी स्टाफ भी हर आयाम में यात्रियों की सुरक्षा एवं रेलवे संपत्ति की सुरक्षा में सजगता से कार्यरत हैं ।

यह वर्ष रेलवे सुरक्षा बल हेतु उपलब्धियों का वर्ष रहा है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में अपनी जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए रेलवे सुरक्षा बल द्वारा वर्ष 2020-21 में कुल 206 अवैध टिकट दलालों को गिरफ्तार कर उनके पास से कुल ? 52 लाख मूल्य के टिकटों को जप्त किया गया है।

ग्राम पंचायत ईल्दा पर मनाया गया इतवार त्यौहार

खरोरा (नव प्रदेश)। ग्राम पंचायत ईल्दा पर पुर्व में चार इतवार के बाद पांचवा इतवार तिहार पर गांव के सरपंच उपसरपंच पंच व ग्राम सभा अध्यक्ष श्री खिलेश साहू की उपस्थिति पर अपने अपने खेतों में सभी ग्रामीण किसानों द्वारा चिला रोटी चढ़ाकर हवन पूजन एवं सत्यनारायण भगवान जी की कथा पूजा अर्चना किया गया ताकि गांव में सुख शांति बना रहे खेत खलिहान में कोई भी प्रकार की बीमारी ना हो एवं फसल अच्छा हो और गांव में हमेशा खुशहाली बना रहे इस इतवार त्योहार को हमारे पूर्वजों के द्वारा कई वर्षो से मनाते आ रहे हैं जो कि आज भी हम लोग मनाते आ रहे हैं पं. रज्जू शर्मा (महाराज) जी द्वारा इतवार तिहार का समापन किए गए जिसमें सरपंच श्री दुलेश गिलहरे, उपसरपंच श्री सुमेंद्र साहू उपस्थित रहे।

राज्य सरकार की योजनाओ का लाभ जन-जन को मिले : सुशील

नव प्रदेश संवाददाता

भाठापारा। प्रदेश कांग्रेस के निर्देश पर प्रदेश कांग्रेस सचिव सुशील शर्मा और ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ के के नायक ने आज भाठापारा विधानसभा क्षेत्र के ग्राम कोलिहा में बूथ कांग्रेस कमेटी का विधिवत गठन कर सिमगा ब्लॉक में बूथ कमेटी गठन की शुरुआत किया,इस अवसर पर मांधाता साहू,धीरसिंह साहू,त्रिदेव साहू,अभिलाष साहू को नियुक्ति पत्र भी प्रदान किये।

उपस्थिथ बूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को संबोधित करते प्रदेश कांग्रेस सचिव सुशील शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सरकार की समस्त जनकल्याणकारी योजनाओ का लाभ बूथ में निवास करने वाले अंतिम व्यक्ति को दिलाना ही हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि योजनाओ का लाभ मिलने से गरीब और असहाय व्यक्ति सबल और आत्मनिर्भर बन सकेगा,21 सदस्यीय बूथ कमेटी में सभी लोग आपसी सामंजस्य बनाकर कांग्रेस पार्टी की विचारधारा को जन जन तक पहुचाकर मतदाता को अपने पछ में लाना ही बहुत बड़ी जवाबदेही का कार्य करना है,पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ कांग्रेस पार्टी को मजबूत बनाते हुये आप सभी अपने अपने बूथ मे कांग्रेस को जितना होगा प्रत्येक माह के अंदर बूथ कमेटी की मीटिंग होनी चाहिये, तेरा मेरा छोड़कर सिर्फ कांग्रेस पार्टी की जीत ही हम सभी का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिये। बैठक का संचालन ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ के के नायक ने किया और सभी निर्वाचित बूथ सदस्यो को बधाई दी,इस अवसर श्रीमती मनीषा मान्धाता साहू सरपंच,त्रिदेव साहू,अभिलाष साहू,मोहन निर्लमकर,मागहु साहू,बिसेसर साहू,भीखा साहू, रामजग निषाद,मुरारी निर्मलकर, सावंत साहू सहित अनेक ग्रामीण उपस्तिथ थे।

मंत्री अकबर ने बोडला नगर पंचायत में दो सौ दो लोगों दिया आबादी पट्टा

311 हितग्राहियों को आवास स्वीकृति का प्रमाण पत्र वितरण किया

नव प्रदेश संवाददाता

कवर्धा। प्रदेश के परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, विधि एवं विधायी कार्य विभाग के मंत्री मोहम्मद अकबर अपने एक दिवसीय कबीरधाम प्रवास के दौरान बोड़ला नगर पंचायत के वार्ड क्रमांक 7 में दुर्गा मंच के पास सर्व समाज मांगलिक भवन लागत 73 लाख 44 हजार रूपए तथा वार्ड क्रंमांक 5 के पौनी पसारी लागत 25 लाख 53 हजार रूपए का विधिवत पूजा-अर्चना कर भूमिपूजन किया। इस दौरान मंत्री श्री अकबर ने योजना के क्रियान्वयन के लिए विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए और जल्द निर्माण कार्य प्रारंभ कर लोगों को योजनाओं का लाभ दिलाने कहा। इस अवसर पर क्रेडा अध्यक्ष श्री कन्हैया अग्रवाल, श्री निलंकठ चन्द्रवंशी मो, कलीम भाई , नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सावित्री साहू, संतोषी साहू सहित अन्य गणमान्य नागरिक एवं जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित थे। भूमिपूजन के अवसर पर मंत्री श्री अकबर ने बताया कि बढ़ते हुए शहरीकरण तथा मशीनों के अंधाधुंध उपयोग के कारण पौनी पसारी से संबंधित अधिकांश व्यवसाय शहरो में लुप्त होते जा रहे है। उन्होंने बताया कि परंपरागत व्यवसायों तथा छत्तीसगढ़ की स्थानीय संस्कृति एवं परंपराओं को जीवन्त करने एवं इससे स्थानीय समाज तथा बेरोजगारों के लिए व्यवसाय के अवसरों का सृजन करने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा राज्य प्रवर्तित पौनी पसारी योजना, नवीन परिवेश में नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा प्रारंभ की गई है।

क्या है पौनी-पसारी योजना

साप्ताहिक बाजार एवं पौनी पसारी स्थानीय छत्तीसगढ़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है साप्ताहिक बाजारो के माध्यम से जहां एक ओर स्थानीय जनता अपने जीवन यापन के लिए आवश्यक सामान की खरीदी करते थे, वही पौनी पसारी के माध्यम से स्थानीय जन समुदाय की आवश्यकताओं तथा सेवाओं की पूर्ति भी सुनिश्चित की जाती थी।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग, कोण्डागांव संभाग, कोण्डागांव
Email ID-ee.kondagaon@nic.in & eepwdkondagaon@gmail.com Fax No.- 07786243942, Ph. - 07786242242
ज्ञा.क्र. 3572/व.ले.लि./ कोण्डागांव, दिनांक 17.09.2021
निविदा संशोधन सूचना
इस कार्यालय द्वारा आमंत्रित निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक 11/व.ले.लि./2021-22 दिनांक 10.09.2021 को अपरिहार्य कारणों से एतद् द्वारा निरस्त किया जाता है।
जीआई नंबर - 63611
सहपत्र- शून्य
कार्यपालन अभियंता
लो.नि.वि. कोण्डागांव संभाग,
कोण्डागांव
जी-63802/3

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
पंजी. 202109100400232
एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री अविनाश महेश्वरी आ. किशोर कुमार महेश्वरी अन्य 01 निवासी मैत्रीनगर रिसाली तह. व जिला दुर्ग द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की ग्राम उतई प.ह.न. 42 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 986/92 रकबा 0.033 हें 3600 वर्गफीट भूमि के वाणिज्यिक प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।
अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।
यह उद्घोषणा आज दिनांक 20.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
अनुविभागीय अधिकारी
दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
पंजी. 202109100400215
एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री विकास कुमार साहू आ. लेखराम साहू निवासी अंजोरा द्वारा अपने स्वामित्व की भूमि ग्राम थनौद प.ह.न. 28 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 55/18 रकबा 0.0200 हें 2610 वर्गफीट के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।
अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।
यह उद्घोषणा आज दिनांक 17.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
अनुविभागीय अधिकारी
दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
पंजी. 202109100400192
एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक श्री धनंजय वर्मा आ. स्व. बरातूराम वर्मा निवासी न्यू पुलिस लाईन दुर्ग द्वारा अपने स्वामित्व की भूमि ग्राम धनोरा प.ह.न. 39 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 643/8 रकबा 0.020 हें 2198 वर्गफीट के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के तहत् पुर्ननिर्धारण बाबत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।
अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।
यह उद्घोषणा आज दिनांक 16.09.2021 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
अनुविभागीय अधिकारी
दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक अनिरबन काली पिता स्व. रविन्द्रनाथ काली निवासी ग्राम इस्पात नगर रिसाली तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम रिसाली स्थित भूमि खसरा नंबर 1032/22 रकबा 0.02 हे. भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदिक भूमि के खातेदार/वसीयतकर्ता रविन्द्रनाथ काली आ. एस.सी. काली के द्वारा आवेदक के पक्ष में दिनांक 11.01.2008 पंजीकृत वसीयतनामा निष्पादित किया गया है। वसीयतकर्ता की मृत्यु हो जाने पर पंजीकृत वसीयतनामा के आधार पर आवेदक का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 14.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 16.09.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

Chola
Enter a better life
चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट एण्ड फायनेंस कम्पनी लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालयः नं. 2, 'डेयर हाऊस, प्रथम तल, एन.एस.सी. बोस रोड, चेन्नई-600 001.
शाखा कार्यालयः शॉप नं. 416, चौथी मंजिल, नेशनल कार्पोरेट पार्क, मारुति बिजनेस पार्क के सामने, जी.ई.रोड, रायपुर छत्तीसगढ़-492001. सम्पर्क नं. प्रकाश वर्मा- 9981343191, अंशुल अग्रवाल- 9713436260.

नीलामी व बिक्री के लिए सार्वजनिक सूचना

चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड के अधिकृत अधिकारियों द्वारा सिक्योरिटाइजेशन एण्ड रिकंस्ट्रक्शन ऑफ फायनेंशियल एसेट्स एण्ड एनफोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट अधिनियम, 2002 के तहत कर्जदारों से देय राशि की वसूली के लिए, अधिकारियों द्वारा उल्लिखित सुरक्षित संपत्ति का अधिकार लेने के अनुसरण में अचल संपत्ति खरीदने के लिए मुहरबंद लिफाफे में आमंत्रित किया गया है, जैसा कि नीचे वर्णित है, "जैसा है जहां है आधार पर", "जैसा है जो है आधार पर" की जाएगी जो भौतिक कब्जे में है, जिनका विवरण नीचे दिया गया है -

कर्जदार/सह-कर्जदार/ गारंटीकर्ता	मांग नोटिस दिनांक और राशि	अचल संपत्ति का विवरण	आरक्षित मूल्य	बयाना राशि	कुल बकाया ऋण
ऋण खाता संख्या- X0HERRH00001997123 ऋणी एवं सह-ऋणी की नाम 1. बछित्तर सिंह सेठी, 2. अमरजीत सिंह सेठी, 3. करमबीर सिंह सेठी, 4. जसबीर कौर सेठी, 5.जैलनदीप सिंह सेठी, सभी का निवास- मकान नं. 21, फेस-1, कैपिटल सिटी सद्दू, रायपुर-492001. 6. स्कॉट इन्टरनेशनल प्रा.लि., कार्यालय नं. 5, होटल अमित, मोतीबाग.	15-07-2020 & ₹ 1,08,25,153.04/- 14-07-2020 को	प्लॉट नं. 21, सर्वे नं. 226/13 का भाग, भूमि क्षेत्र का माप- 2100 वर्गफिट, कुशा भाऊ ठाकरे वार्ड नं. 26, ग्राम- सद्दू, प.ह.नं. 109, तहसील व जिला- रायपुर में स्थित संपत्ति के समस्त भाग तथा अंश ।	₹ 58,80,000/-	₹ 5,88,000/-	₹ 1,25,98,691.10 21.09.2021 को भुगतान की तिथि तक आगे ब्याज, दंड ब्याज, लागत और शुल्क के साथ

नीलामी प्रकिया के बार में महत्वपूर्ण जानकारी

1.	नीलामी की तारीख	29.10.2021	3.	संपत्ति के निरीक्षण की तिथि	22-10-2021 से 23-10-2021 (व्यावसायिक समय में)
2.	बोली जमा करने का स्थान और नीलामी स्थान	शॉप नं. 416, चौथी मंजिल, नेशनल कार्पोरेट पार्क, मारुति बिजनेस पार्क के सामने, जी.ई.रोड, रायपुर छत्तीसगढ़-492001.	4.	बोली जमा करने की अंतिम तिथि	28-10-2021 शाम 5.00 बजे से पहले

*एक बोलीदाता, अपनी पसंद से, नीलामी में निर्धारित प्रारूप में आवेदन करके सुविधा का लाभ उठा सकता है जो नीचे दिए गए पते पर कार्यालय से प्रस्ताव/निविदा दस्तावेज के साथ उपलब्ध है. बिक्री इस विज्ञापन और निर्धारित बोली/निविदा दस्तावेज में निहित नियमों और शर्तों के अधीन है. इस नोटिस को उपरोक्त सूचनाओं की नीलामी बिक्री के लिए दि गए नियम 8(5) (सी) और 2002, (नियम 8 और 9) सुरक्षा ब्याज प्रवर्तन के 8(6) के तहत 30 दिनों के नोटिस के रूप में भी लेना चाहिए ।

नीलामी के नियम और शर्तें - (1) "जैसा है जहां है आधार पर" "जैसा है जो है आधार पर" और "जो भी है जहां भी है आधार पर" बेची जाएगी । (2) बोलीदाता सभी मामलों में पूरी तरह से कोशिश करने के लिए बाध्य है, जिसमें ऊपर वर्णित निर्धारित तारीख और समय पर संपत्ति के विवरणों का निरीक्षण करना शामिल है । (3) चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड को बोलीदाता द्वारा बोलियां प्रस्तुत करने का अर्थ ये स्वीकार करना लगाया जाएगा कि उसमें सभी मामले में उचित कोशिश का प्रयोग किया है. संपत्ति के सभी विवरण/माप से संतुष्ट है, नीलामी को नियंत्रित करने वाले नियमों और शर्तों का पूरा ज्ञान स्वीकार करता है और भविष्य की किसी भी तारीख में कम्पनी के विरुद्ध किसी भी विपरीत दावे के लिए अपने सभी अधिकार का त्याग करता है । (4) बिक्री अधिकृत अधिकारी द्वारा पुष्टि के अधीन है यदि कर्जदार/गारंटी बिक्री से पहले पूरी बकाया राशि का भुगतान कर देता है, तो कोई बिक्री नहीं की जाएगी । (5) बोलीदाता को बोली जमा राशि ईएमडी बैंकर चेक/डीडी द्वारा संबंधित ऋण खाते के लिए चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड के पक्ष में, बोली फार्म के साथ एक मुहरबंद लिफाफे में प्राधिकृत अधिकारी, चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड को 28.10.2021 को या उससे पहले शाम 5.00 बजे तक भेजना होगा, कृपया ध्यान दें कि सफल बोलीदाता ओं के संदर्भ में, ईएमडी, चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड द्वारा प्राप्त होने वाले विक्रय पर विचार के प्रति समायोज्य है, इसके अलावा, असफल बोलीदाता ओं की ईएमडी वापसी योग्य है । (6) सफल बोलीदाता को उसके पक्ष में बिक्री नॉक डाउन होने पर बोली राशि का 25% तत्काल जमा करना होगा उसके पक्ष में बिक्री करने के लिए और शेष 15 दिनों के भीतर संबंधित ऋण खाता नम्बर के लिए चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड के पक्ष में तैयार बैंकर चेक/ डीडी द्वारा जमा करना होगा । (7) यदि सफल बोलीदाता उसके पक्ष में बिक्री नॉक डाउन होने पर राशि का 25% तत्काल जमा करने और /या शेष राशि 15 दिनों के भीतर जमा करने में असफल रहता है तो बोलीदाता द्वारा जमा बिना किस पूर्व सूचना के जब्त कर लिया जाएगा । (8) संव्यहन के लिए भुगतान योग्य प्रभार/ शुल्क जैसे स्टॉम्प ड्यूटी, पंजीकरण शुल्क, रखरखाव प्रभार, बिजली शुल्क आदि का वहन सफल बोलीदाता द्वारा किया जाएगा, अधिकृत अधिकारी किसी भी शुल्क, धारणाधिकार, संपत्ति कर या सरकारी या स्थानीय निकाय या किसी भी अन्य प्राधिकरण को बिक्री के तहत प्राधिकरण के संबंध में किसी भी अन्य बकाया के लिए जिम्मेदार नहीं होगा । (9) अधिकृत अधिकारी बिना किसी पूर्व सूचना या कोई भी कारण बताए बिना बोली स्वीकार या रद्द करने या बिक्री टालने/स्थगित करने/रद्द करने/ बिक्र के किसी भी नियम और शर्तों को बदलने का पूर्ण अधिकार रखता है । (10) बिक्री केवल सफल बोलीदाता के पक्ष में होगा न कि उसके नामांकित व्यक्ति के पक्ष में । (11) यह सूचना विशेष रूप से कर्जदारों और सामान्य रूप से जनता के लिए भी है, कर्जदार को बिक्री प्रक्रिया की पुष्टि होने तक संपत्ति की ऋणमुक्ति का पूर्ण अधिकार है । चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट फायनांस कम्पनी लिमिटेड संपत्ति पर लंबित किसी भी दावेदारियों के लिए जिम्मेदार नहीं है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया किया है । संपत्ति की नीलामी "जैसे है जहां है आधार", जैसे है वैसे ही आधार' पर और 'जो भी है वैसे ही आधार' पर नीलाम किया जाएगा । अधिक विवरण के लिए, उपर्युक्त कार्यालय के पते पर प्राधिकृत अधिकारी से संपर्क करें.

दिनांकः 22.09.2021, स्थानः रायपुर
प्राधिकृत अधिकारी/ चोलामण्डलम इन्वेस्टमेंट एण्ड फायनेंस क.लिमि.

शासन पंडो जनजाति को शासन के हरेक योजना का लाभ देने प्रतिबद्ध : बृहस्पत सिंह

■ **रेणुका सिंह और रामविचार सिंह नेताम पर साधा निशाना**

रामानुजगंज/नवप्रदेश। विधायक बृहस्पत सिंह के द्वारा क्षेत्र में पंडो जनजाति के लोगों की लगातार हो रही मौत को लेकर आज अपने निवास पर पत्रकार वार्ता किया गया। इस दौरान पत्रकारों के सवाल का जबाब देते हुए उन्होंने कहा कि जनजागृती के अभाव में पंडो परिवारों में हुई असामयिक मौतों पर हमारी और हमारे सरकार की पूरी संवेदना है। छत्तीसगढ़ शासन पंडो जनजाति के लोगों को शासन के हर एक योजना का लाभ देने के लिए वचनबद्ध है हमारा लगातार प्रयास है कि पंडो जनजाति के लोगों में जनजागृति लाई जाए साथ ही साथ उनकी समस्याओं का तत्काल निपटारा हो इसलिए हमारे अधिकारी उनके घरों तक पहुंच रहे हैं लगातार स्वास्थ्य शिविर लगाए जा रहे हैं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा घर-घर दस्तक देकर स्वास्थ्य जांच किया जा रहा है। बीमार लोगों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तक ले जाया जा रहा है। वहीं राजस्व विभाग पंडो जनजाति के लोगों के घरों तक पहुंच कर उनकी राजस्व संबंधी समस्याओं का भी निपटारा कर रहा है साथ ही अन्य विभाग भी पंडो जनजाति बहुल गांव में शासन की योजनाओं का लाभ हर एक हितग्राही को दिलाने के लिए कार्य कर रहे हैं मैं खुद लगातार गांव के एक एक घर के लोगों की जानकारी ले रहा हूं एवं बीमार लोगों के बेहतर इलाज की पहल की जा रही है।

श्री सिंह ने कहा कि मुझे जैसे ही मालूम चला कि हमारे क्षेत्र में पंडो जनजाति के लोगों की मौत बीमारी से हो रही है तत्काल मैंने स्वास्थ्य विभाग एवं जिला प्रशासन को अवगत कराते हुए बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधा दिए जाने का निर्देश दिए था। जिसके बाद तत्काल इस पर पहल हुई प्रशासन के द्वारा पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्य किया जा रहा है। सूचना पर तत्काल कार्य हो रहा है।

पैसा बढ़ाने के लिए नेताम ने दिया धरना क्षेत्र में हो रहे अवैध रेत उत्खनन के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि राज्यसभा सांसद रामविचार नेताम के घर के सामने से रेत की गाड़ियां गुजर रही है उनके द्वारा कुछ नहीं किया जा रहा है पहले उन्हें ?2000 पर गाड़ी मिलता था जिसे ढाई हजार कराने के लिए बीते दिनों ग्राम महावीर गंज में धरना नौटंकी किया गया था। विधायक ने कहा कि रामविचार नेताम बड़े नेता है उनकी दिल्ली में सरकार है वह चाहे तो केंद्र से टीम बुलाकर जांच करवा सकते हैं परंतु वे खुद इसमे संलिप्त है रेत का अवैध उत्खनन नेताम के लोग ही कर रहे हैं कोई भी जाकर देख सकता है पूछ सकता है पोकलेन मशीन एवं जेसीबी किनके हैं।

रेणुका सिंह पर साधा निशाना विधायक बृहस्पत सिंह ने कहा कि रेणुका सिंह केंद्र में मंत्री हैं एवं रामविचार नेताम राज्यसभा सांसद हैं अगर पहल करते तो पंडो, परहिया, अगरिया, लोहार, नगेसिया, किसान को आदिवासी का दर्जा दिला देते परंतु अफसोस इनके द्वारा आज तक कोई पहल नहीं की गई सिर्फ हमदर्दी का नाटक किया जा रहा है यदि पंडो जनजाति के लोगों को आदिवासी का दर्जा मिलता तो उनकी बड़ी समस्या खुद-ब-खुद हल हो जाती। मैं जब विपक्ष में था तब भी इस मुद्दे को बराबर उठाते रहा और आज भी इस मुद्दे को लेकर मैं मुखर हूं। केंद्र सरकार को इस पर तत्काल पहल किए जाने की आश्यकता है।

विपक्ष के द्वारा मुख्यमंत्री को लेकर फैलाया जाता है भ्रम ढाई ढाई साल के मुख्यमंत्री की बात पर उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में 54त्न ओबीसी 32त्न एसटी एवं 12त्न एससी है। मुख्यमंत्री का चयन हाईकमान के द्वारा बहुत सोच-समझकर किया गया है। टी एस सिंह देव हम सबके आदरणीय है छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है भूपेश बघेल एवं टी एस सिंह देव के बीच कोई मतभेद नहीं है भूपेश बघेल अपने सभी वरिष्ठ सहयोगियों का बहुत सम्मान करते हैं वे टी एस सिंह देव का पैर छूते हैं। जब से वे मुख्यमंत्री बने हैं तब से लगातार छत्तीसगढ़ के सुख समृद्धि के लिए काम कर रहे हैं आज हर एक छत्तीसगढ़ी के चेहरे पर मुस्कान मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कार्यों से है आज समाज का कोई ऐसा वर्ग नहीं है जिसके लिए योजनाएं नहीं बन रहे हैं एवं धरातल में उसका क्रियान्वयन नहीं हो रहा है छत्तीसगढ़ सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से विपक्ष घबराया है जिस कारण विपक्ष सरकार को बदनाम करने के लिए उतारू रहता है।

खनिज न्यास निधि समिति की बैठक में शामिल हुई विधायक संगीता सिन्हा

फंड के सदुपयोग को लेकर रखी बात

बालोद/नवप्रदेश। प्रभारी मंत्री का डीएमएफ समिति से अध्यक्ष प्रभार हटने के बाद पहली बार कलेक्टर की अध्यक्षता में खनिज न्यास निधि समिति की बैठक कलेक्ट्रेट में हुई। जहां पर कलेक्टर जन्मेजय महोबे के अलावा सदस्य के रूप में सांसद मोहन मंडावी, विधायक संगीता सिन्हा, मंत्री प्रतिनिधि पियूष सोनी सहित अन्य सदस्य गण शामिल हुए।

इस बैठक में डीएमएफ के सदुपयोग को लेकर चर्चा हुई। वही खनन प्रभावित क्षेत्रों में शासन के निर्देशों के मुताबिक 60% राशि खर्च करने को लेकर प्रस्ताव किया गया। विधायक संगीता सिन्हा ने बैठक में अपने विधानसभा क्षेत्र से आवास से संबंधित आए 7000 आवेदनों की स्थिति के बारे में जानकारी मांगी। जिस पर अधिकारियों द्वारा पूरी जानकारी बनाकर पेश की जाएगी। विधायक ने कहा कि नए आवेदन जो आए हैं उन पर जल्द कार्रवाई होनी चाहिए और

जरूरतमंदों को आवास मिलना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने डीएमएफ का शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयोग करने के लिए जोर दिया। कलेक्टर ने भी कहा कि स्कूलों में जहां-जहां भी जर्जर स्थिति है या मरम्मत की स्थिति पैदा हो गई है वहां पर प्रस्ताव मंगाया जाए और उन कार्यों को पूरा करने के लिए खनिज न्यास निधि का इस्तेमाल किया जाएगा। तो वहीं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी इससे पर्याप्त सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। ज्ञात हो कि पहले खनिज न्यास निधि समिति के अध्यक्ष जिले के प्रभारी मंत्री होते थे। लेकिन केंद्र शासन द्वारा इसमें फेरबदल करते हुए स्थानीय कलेक्टर को अभी समिति का अध्यक्ष बनाया गया है तो वहीं अन्य जनप्रतिनिधि इस समिति के सदस्य हैं। प्रभारी मंत्री का अध्यक्ष प्रभार हटाए जाने के बाद पहली बार कलेक्टर की अध्यक्षता में उक्त बैठक हुई।

मंत्री प्रतिनिधि हुए बीएसपी के अफसरों पर नाराज

बैठक में मंत्री प्रतिनिधि पीयूष सोनी दल्ली राजहरा बीएसपी से जुड़े अफसरों पर नाराज हुए। उन्होंने वहां पर यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए ट्रैफिक सिग्नल के आश्वासन का मुद्दा उठाया। मंत्री प्रतिनिधि सोनी ने कहा कि बीएसपी द्वारा दल्ली राजहरा में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए ट्रैफिक सिग्नल लगवाने की बात कही गई थी। 2 साल हो गए इस बात को लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। लगातार हादसे हो रहे हैं। यातायात व्यवस्था बिगड़ रही है। इस पर अफसरों से जवाब मांगा गया तो वे संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए। प्रभावित क्षेत्रों में ज्यादा फंड दिए जाने की बात पर भी बैठक में सहमति बनी।

नेता प्रतिपक्ष कौशिक ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की

राजनांदगांव/नवप्रदेश। नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने पूर्व मंत्री राजिंदर पाल सिंह भाटिया के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि खुज्जी विधानसभा से विधायक रहे पूर्व मंत्री भाटिया के असमय निधन से हम सभी दुखी हैं। अविभाजित मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ विधानसभा के सदस्य रहें स्व. भाटिया हमेशा समाज जीवन में सबकी मदद के लिये सक्रिय रहें हैं। नेता प्रतिपक्ष कौशिक ने ईश्वर से कामना की है कि पूर्व विधायक स्व. भाटिया की आत्म को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

दिगंबर जैन समाज ने दानदाताओं का किया सम्मान

पर्यूषण पर्व : दशलक्षण महापर्व का हुआ समापन

जगदलपुर/नवप्रदेश। दिगंबर जैन समाज ने पयूषण पर्व के तहत महावीर भवन में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया। इसी क्रम में शनिवार की रात आरती के बाद समाज को सहयोग करने वाले दानदाताओं को सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में श्वेतांबर ओसवाल जैन समाज के सदस्य नीरज जैन को भी सम्मानित किया गया।

इन दानदाताओं ने शहर में एनएमडीसी चौक के पास जमीन देकर समाज को विशेष सहयोग दिया। अब इस जमीन पर सामाजिक कार्यों के लिए निर्माण किया जाएगा। इसके बाद 'जिम्मेदार कौन' नामक एक धार्मिक नाटक का मंचन हुआ। इस नाटक के माध्यम से समाज में दहेज जैसी कुरीतियों के दुष्परिणामों की जानकारी दी गई।

अंतिम दिन निकाला जुलूस

दशलक्षण महापर्व के अंतिम दिन रविवार को अनंत चुतर्दशी के पावन अवसर पर जैन स्वालंबियों ने रथ में विराजमान कर श्रीजी की भव्यशोभा यात्रा निकाली जिसमें महिला, पुरुष एवं बच्चे बड़ी संख्या में शामिल हुए। नगर क माचार भवन स सुबह 1बजशाभायात्रा निकाला गई। रात को श्रीमहावीर भवन में ग्वालियर से आमंत्रित पंडित संदरलाल शास्त्री द्वारा उत्तम ब्रम्हज्य विषय पर प्रवचन माला हुई।

5 कर्तव्य बताए गए हैं

संवत्सरी, प्रतिक्रमण, केशलोचन, तपश्चर्या, आलोचना और क्षमा-याचना। गृहस्थों के लिए भी शास्त्रों का श्रवण, तप, अभयदान, सुपात्र दान, ब्रह्मचर्य का पालन, आरंभ स्मारक का त्याग, संघ की सेवा और क्षमा-याचना आदि कर्तव्य कहे गए हैं। पर्युषण पर्व के समापन पर 'विश्व-मैत्री दिवस' अर्थात संवत्सरी पर्व मनाया जाता है। अंतिम दिन दिगंबर 'उत्तम क्षमा' तो श्वेतांबर 'मिच्छामि दुक्कड़म्' कहते हुए लोगों से क्षमा मांगते हैं।

चाकूबाजी की घटनाओं को लगाए अंकुश, नहीं तो जोगी कांग्रेस करेगी उग्र आंदोलन : नवीन अग्रवाल

राजनांदगांव/नवप्रदेश। अजीत जोगी जनता कांग्रेस के प्रदेश कोर कमेटी सदस्य नवीन अग्रवाल के मार्गदर्शन में शहर जिलाध्यक्ष शमशुल आलम के नेतृत्व में बिलाल सोलिन खान, प्रतीक चौहान, देव सिन्हा, शेख मोहम्मद, भोला यादव, रामप्रसाद यादव, अमीनेश मेश्राम, अभिषेक उत्केल, अतुल पंसारी जिले में आये दिन चाकूबाजी की घटनाओं पर अंकुश लगाने जिला पुलिस अधीक्षक डी. श्रवण को ज्ञापन सौंपकर माँग की है। ज्ञापन में यह भी मांग की गई है कि, चाकूबाजी और हत्या के पीछे नशीली दवाओं, गांजा और नशे के अवैध कारोबार को इस अपराध की मुख्य वजह बताया।

जनता कांग्रेस के कोर कमेटी सदस्य नवीन अग्रवाल ने कहा है कि, राजनांदगांव शहर सहित जिलेभर में चाकूबाजी और हत्या की घटनाएं सामने आ रही है। बीते एक महीने में आधा दर्जन से अधिक चाकूबाजी और हत्या की वारदात सामने आ चुकी है। जिसमें गरीब और बेगुनाह लोग बेमौत मारे जा रहे हैं। पुलिस प्रशासन भी कार्यवाही के नाम पर महज खानापूर्ति करता नजर आ रहा है। कार्यवाही न होने के कारण ही अब अपराधियों को पुलिस का कोई डर ही नहीं रहा।

बजरंगपुर नवगांव संस्था द्वारा चालू हुआ पोषण अभियान

राजनांदगांव/नवप्रदेश। शिवेंद्र सहयोग जनकल्याण संस्थान द्वारा वर्ष 2021 का पोषण अभियान जिसके तहत राजनांदगांव शहर के चिन्हकित आंगनबाड़ी केंद्रों में गंभीर कुपोषित और मध्यम कुपोषित बच्चों के लिये सुपोषण जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। 14 सितंबर 2021 को शिवेंद्र सहयोग जनकल्याण संस्थान के द्वारा राजनांदगांव के बजरंगपुर नवागांव स्थित आंगनबाड़ी केंद्र क्रमांक 1 में हर बच्चा सुपोषित अभियान के तहत संस्था के अध्यक्ष अनिमेष राय के द्वारा पहली बार आंगनबाड़ी पहुंचकर छोटे बच्चोंए किशोरियों और गर्भवती माताओं को कुपोषण के कारणों की जानकारी प्रदान की तथा उनकी आदत व व्यवहार में सुपोषित भोजन करने के लिए प्रेरित किया और और यह भी बताया कि सुपोषण के साथ.साथ स्वच्छता का भी ध्यान रखना अति आवश्यक है। साथ ही 2 से 19 वर्ष तक के बच्चों को कृमि की दवा लेने का महत्व समझाया। इसी कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्रीमती आशा मेश्राम पर्यवेक्षक मौजूद थेए जिन्होंने महिलाओं को पौष्टिक भोजन बनाने और मुनगा भाजी का महत्व समझाया।

कार्यक्रम में अभिनय ठाकुर जो कि यूनिसेफ के टीकाकरण अभियान के जिला प्रमुख हैं। उन्होंने टीको का महत्व समझा कर लोगों को सही समय पर टीका लगाने के लिए प्रेरित किया। सुश्री दीपशिखा ने बताया कि संस्था द्वारा हर बच्चा सुपोषित अभियान के तहत सुपोषण को लेकर समाज के प्रत्येक नागरिक को सुपोषण आत्मनिर्भर बनाना है ताकि कुपोषण विरुद्ध एक मजबूत समाज की नींव तैयार हो सके चूंकि सुपोषण हेतु सरकार द्वारा दी जा रही सारी योजनाएं अपने आप में परीपूर्ण है परंतु अभी भी देखा जा रहा है कि कुछ विशेष समुदाय व ग्रामीण जनता में इन योजनाओं के प्रति अज्ञानत वश या अन्य पर्याय कारणों से कुपोषण परिणाम कम नही हो पा रहे है। ऐसे में शिवेंद्र सहयोग एवं जन कल्याण संस्थान एक प्रेरक की भूमिका में समाज को सुपोषण के प्रति जागरूक व शिक्षित कर सके तकि सुपोषण का 100 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। संस्था अपनी मूल जिम्मेदारी को समझते हुए बिना किसी आर्थिक प्रतिफ्ल इस महहत्ती योजना में अपना पूर्ण योगदान देकर सुपोषित समाज निर्माण करने हेतु संकल्पित हैं। कार्यक्रम में बजरंगपुर नवागांव की आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता श्रीमती प्रेमलता वैष्णवए श्रीमती सुनीता सेवताए श्रीमती अमरिका ध्रुव व मितानिन पिलेश्वरीए जानकी साहू मौजूद थे। जिन्होंने अंत में हम सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का अंत पोषण प्रतिज्ञा के साथ किया गया। उक्त जानकारी संस्था के उपाध्यक्ष कमलेश जोगी ने दी।

मंत्री अकबर ने बोडला नगर पंचायत में दो सौ दो लोगों दिया आबादी पट्टा

■ **311 हितग्राहियों को आवास स्वीकृति का प्रमाण पत्र वितरण किया**

कवर्धा/नवप्रदेश। प्रदेश के परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, विधि एवं विधायी कार्य विभाग के मंत्री मोहम्मद अकबर अपने एक दिवसीय कबीरधाम प्रवास के दौरान बोड़ला नगर पंचायत के वार्ड क्रमांक 7 में दुर्गा मंच के पास सर्व समाज मांगलिक भवन लागत 73 लाख 44 हजार रूपए तथा वार्ड क्रमांक 5 के पौनी पसारी लागत 25 लाख 53 हजार रूपए का विधिवत पूजा-अर्चना कर भूमिपूजन किया। इस दौरान मंत्री श्री अकबर ने योजना के क्रियान्वयन के लिए विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए और जल्द निर्माण कार्य प्रारंभ कर लोगों को योजनाओं का लाभ दिलाने कहा। इस अवसर पर क्रेडा अध्यक्ष श्री कन्हैया अग्रवाल, श्री

निलंकठ चन्द्रवंशी मो, कलीम भाई, नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सावित्री साहू,पिताम्बर वर्मा, रामचरण साहू,अजमत उल्ला खान, संतोष अवस्थी, शमशाद बेगम, भरत गुप्ता, शशि देवी, संतोषी साहू सहित अन्य गणमान्य नागरिक एवं जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित थे। भूमिपूजन के अवसर पर मंत्री श्री अकबर ने बताया कि बढ़ते हुए शहरीकरण तथा मशीनों के अंधाधुंध उपयोग के कारण पौनी पसारी से संबंधित अधिकांश व्यवसाय शहरो में लुप्त होते जा रहे है।

क्या है पौनी-पसारी योजना

साप्ताहिक बाजार एवं पौनी पसारी स्थानीय छत्तीसगढ़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है साप्ताहिक बाजारो के माध्यम से जहां एक ओर स्थानीय जनता अपने जीवन यापन के लिए आवश्यक सामान की खरीदी करते थे, वही पौनी पसारी के माध्यम से स्थानीय जन समुदाय की आवश्यकताओं तथा सेवाओं की पूर्ति भी सुनिश्चित की जाती थी जिसमें स्थानीय परंपरागत व्यवसायों जैसे लोहे से संबंधित कार्यो, मिट्टी के बर्तन, कपडे धुलाई, जुते चप्पल तैयार करना, लकड़ी से संबंधित कार्य, पशुओं के लिए चारा सब्जी भाजी उत्पादन, कपडो की बुनाई, सिलाई, कंबल, मूर्तियां बनाना, फूलो का व्यवसाय, पूजन सामाग्री, बांस का टोकना, सूपा, केशकर्तन, दोनो पत्तल, चटाई तैयार करना तथा आभूषण एवं सौंदर्य सामाग्री आदि का व्यवसाय ''पौनी पसारी'' व्यवसाय के रूप में जाना जाता रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र गरियाबंद में पोषण वाटिका महाअभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न

गरियाबंद/नवप्रदेश। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा गत 17 सितम्बर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय पोषण अनाज वर्ष 2023 के परिपेक्ष्य में पोषण वाटिका महाअभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत संदीप अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण, वृक्षारोपण, बीज व पौध वितरण एवं उपस्थित विद्यालय के छात्राओं एवं कृषकां के लिए पोषण आहार के रूप में रागी से व्यंजन तैयार किया गया। मुख्य अतिथि श्री अग्रवाल द्वारा छात्राओं व कृषकां कों पोषित आहार का मानव स्वास्थ्य पर महत्व के बारे में जानकारी दी गई।

वृक्षारोपण अभियान के तहत् केन्द्र के वैज्ञानिकों, विद्यालयीन छात्राओं व कृषकों की उपस्थिति में अशोक पौधे का रोपण किया तथा बीज एवं पौध वितरण कार्यक्रम के तहत् छात्राओं व कृषकों को फलदार पौधे (सीताफल, पपीता, कटहल, अमरूद, आम) एवं बीज पैकेट (पालक, लौकी, कुम्हरा, गिल्की) आदि का वितरण किया गया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ईश्वर सिंह द्वारा कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी मुख्य अतिथि की उपस्थिति में छात्राओं व कृषकों को दी।

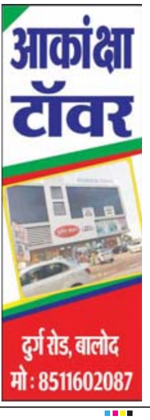

Bhilai Institute of Technology, Durg
-AN AUTONOMOUS INSTITUTION-
BHILAI HOUSE, DURG-491001 (CG)
Phone:(0788) 2359163, Fax:2359424

ADMISSION NOTIFICATION : 2021-22
No. BIT/2021/MQ/01 | Date : 20.09.2021

Applications are invited for admission to various B. Tech. courses, MBA and MCA for session 2021-22 under Management Quota. Admission and reservation rules applicable as per the guidelines of DTE, Raipur. Prescribed format of application can be downloaded from www.bitdurg.ac.in. Filled up application to be submitted to Admission Office latest by 5:00 PM on 30.09.2021. Seats will be allotted on merit basis as per DTE guidelines.

Principal